gradeup

यूपीएससी और पीसीएस मासिक करंट अफेयर्स अप्रैल 2020

Prep Smart. Score Better. Go gradeup

www.gradeup.co

भारतीय राजव्यवस्था और प्रशाशन

'भारत में फंसा हुए लोगों के लिए '(स्ट्रैंडेड)' पोर्टल

खबरों में क्यों है?

- पर्यटन मंत्रालय ने 'भारत में फंसा हुआ (स्ट्रैंडेड)' नामक एक पोर्टल लॉन्च किया है।

'भारत में फंसा हुए लोगों के लिए '(स्ट्रैंडेड)' पोर्टल के संदर्भ में जानकारी

- इस पोर्टल का उद्देश्य देश के विभिन्न हिस्सों में फंसे विदेशी पर्यटकों के लिए एक समर्थन नेटवर्क के रूप में कार्य करना है।
- पोर्टल स्ट्रैंडेड इन इंडिया.कॉम में कोविड-19 हेल्पलाइन नंबरों या कॉल-सेंटरों की व्यापक जानकारी है, जो विदेशी पर्यटकों की मदद के लिए पहुंच सकते हैं।
- इसमें विदेश मंत्रालय के नियंत्रण केंद्रों के साथ-साथ उनकी संपर्क जानकारी और राज्य-आधारित/ क्षेत्रीय पर्यटन समर्थन बुनियादी सुविधाओं के बारे में जानकारी भी है।
- इसमें आगे की जानकारी की आवश्यकता वाले लोगों की मदद का विस्तार करने और विदेशी पर्यटकों को संबंधित अधिकारियों से जोड़ने के लिए एक सहायता और समर्थन अनुभाग भी है।

टॉपिक- जी.एस. पेपर 2- गवर्नेंस

स्रोत- इंडियन एक्सप्रेस

प्रधानमंत्री राष्ट्रीय राहत कोष

खबरों में क्यों है?

- विपक्षी नेताओं ने प्रधानमंत्री द्वारा प्रधानमंत्री केयर कोष की स्थापना पर सवाल उठाया है क्यों कि प्रधानमंत्री राष्ट्रीय राहत कोष पहले से ही अस्तित्व में है।
- कोरोनावायरस महामारी से निपटने के लिए प्रधानमंत्री राष्ट्रीय राहत कोष (पी.एम.एन.आर.एफ.) में 3,800 करोड़ रूपए [16 दिसंबर, 2019 तक] का बिना व्यय किया हुआ धन शेष है।

प्रधानमंत्री राष्ट्रीय राहत कोष के संदर्भ में जानकारी

- प्रधानमंत्री राष्ट्रीय राहत कोष (पी.एम.एन.आर.एफ.) की स्थापना जनवरी, 1948 में हुई थी जब प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने पाकिस्तान से विस्थापितों की सहायता करने की अपील की थी।
- यह पूरी तरह से सार्वजनिक योगदान के साथ स्थापित किया गया था और इसे कोई बजटीय समर्थन नहीं मिला था।
- पी.एम.एन.आर.एफ. व्यक्तियों, संगठनों, ट्रस्टों, कंपनियों और संस्थानों आदि से स्वैच्छिक योगदान स्वीकार करता है।
- पी.एम.एन.आर.एफ. में दिए गए सभी योगदान धारा 80 (G) के अंतर्गत आयकर से मुक्त हैं।

- पी.एम.एन.आर.एफ. के संसाधनों का उपयोग बाढ़, चक्रवात और भूकंप आदि जैसी प्राकृतिक आपदाओं में मारे गए लोगों के परिवारों को तत्काल राहत देने के लिए किया जाता है।
- जरूरतमंद लोगो और तेजाब हमले के पीड़ितों आदि के हृदय सर्जरी, किडनी प्रत्यारोपण, कैंसर के चिकित्सा उपचार के लिए खर्चों को कम करने के लिए आंशिक रूप से सहायता प्रदान करता है।

टॉपिक- जी.एस. पेपर 2- गवर्नेंस

स्रोत- द हिंदू

आरोग्यसेतु

खबरों में क्यों है?

- हाल ही में, भारत सरकार ने आरोग्यसेतु नामक एक मोबाइल ऐप लॉन्च किया है, जो भारत के लोगों को कोरोनोवायरस महामारी के खिलाफ एक बहादुर लड़ाई में एक साथ लाने में मदद करता है।

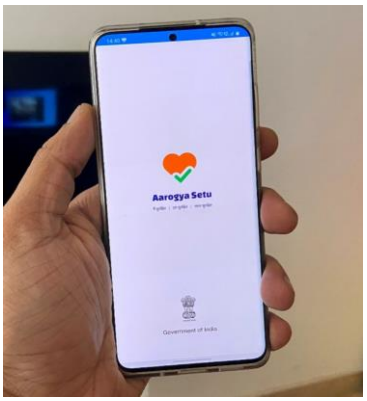

आरोग्यसेतु ऐप के संदर्भ में जानकारी

- यह एक बार सार्वजनिक और निजी क्षेत्रों, डिजिटल प्रौद्योगिकी और स्वास्थ्य सेवाओं के वितरण और रोग मुक्त और राष्ट्र के स्वस्थ भविष्य के साथ युवा भारत की संभावनाओं के बीच एक सेतु है।
- यह ऐप 11 भाषाओं में उपलब्ध है।
- यह प्रत्येक भारतीय के स्वास्थ्य और कल्याण के लिए डिजिटल इंडिया में शामिल होता है।
- यह लोगों को कोरोना वायरस के संक्रमण के प्रति संवेदनशीलता का स्वमूल्यांकन करने में सक्षम बनाएगा।
- यह अत्याधुनिक ब्लूटूथ तकनीक, एल्गोरिथ्म और कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उपयोग करते हुए दूसरों के साथ आपके संपर्क के आधार पर जोखिम की गणना करेगा।

लाभ:

- यह ऐप भारत को कोविड-19 संक्रमण के प्रसार के जोखिम का मूल्यांकन करने और जहां आवश्यक हो, वहां आइसोलेशन को अपनाने को सुनिश्चित करने हेतु आवश्यक समय पर कदम उठाने में मदद करेगा।
- ऐप का डिज़ाइन गोपनीयता-पहले सुनिश्चित करता है।

- ऐप द्वारा एकत्र किए गए व्यक्तिगत डेटा को अत्याधुनिक तकनीक का उपयोग करके एन्क्रिप्ट किया जाता है और यह तब तक फोन पर सुरक्षित रहता है जब तक यह चिकित्सा हस्तक्षेप की सुविधा के लिए आवश्यक नहीं होता है।

टॉपिक- जी.एस. पेपर 3- स्वास्थ्य मुद्दा

स्रोत- द हिंदू

ई-एन.ए.एम. प्लेटफॉर्म

खबरों में क्यों है?

- हाल ही में, कृषि मंत्री ने राष्ट्रीय कृषि बाजार (ई-एन.ए.एम.) प्लेटफ़ॉर्म के नए फीचर लॉन्च किए हैं।

यह कैसे काम करता है?

- यह किसानों द्वारा कृषि विपणन को मजबूती प्रदान करेगा जो अपनी फसल की उपज को बेचने के लिए शारीरिक रूप से थोक मंडियों में आने की आवश्यकता को कम कर देंगे, ऐसे समय में जब कोविड-19 के खिलाफ प्रभावी ढंग से लड़ने के लिए मंडियों में भीड़ कम करने की आवश्यकता है।

ये सॉफ्टवेयर मॉड्यूल हैं, जिनके नाम हैं:

- ई-एन.डब्ल्यू.आर. पर गोदाम आधारित व्यापार की सुविधा प्रदान करने हेतु ई-एन.ए.एम. सॉफ्टवेयर में गोदाम आधारित व्यापार मॉड्यूल
- ई-एन.ए.एम. में एफ.पी.ओ. व्यापार मॉड्यूल, जिससे एफ.पी.ओ. अपनी उपज का ए.पी.एम.सी. में लाए बिना अपने संग्रह केंद्र से व्यापार कर सकता है।
- अपने अधिकार क्षेत्र में अंतर-मंडी और अंतर-राज्य व्यापार की सुविधा प्रदान करने के लिए लॉजिस्टिक मॉड्यूल का एक वर्धित संस्करण जारी किया गया है।

ई-एन.ए.एम. के संदर्भ में जानकारी

- इसे 2016 में अखिल भारतीय इलेक्ट्रॉनिक व्यापार पोर्टल के रूप में लॉन्च किया गया था, जो राज्यों में कृषि उपज बाजार समिति- ए.पी.एम.सी. को जोड़ता था।
- ई-एन.ए.एम. संपर्क रहित दूरस्थ बोली और मोबाइल-आधारित किसी भी समय भुगतान की सुविधा प्रदान करता है जिसके लिए व्यापारियों को या तो मंडियों या बैंक जाने की आवश्यकता नहीं है।

टॉपिक- जी.एस. पेपर 2- गवर्नेंस

स्रोत- पी.आई.बी.

पी.आई.बी. की कोविड-19 तथ्य जांच यूनिट

खबरों में क्यों है?

- प्रेस सूचना ब्यूरो की कोविड-19 तथ्य जांच यूनिट (एफ.सी.यू.) हाल ही में चालू हुई है, जो नॉवेल कोरोनावायरस महामारी से संबंधित तथ्यों की जाँच करती है।

कोविड-19 तथ्य जांच यूनिट के संदर्भ में जानकारी

- इस यूनिट का नेतृत्व ब्यूरो के महानिदेशक नितिन वाकनकर करते हैं।

- यह ईमेल द्वारा संदेश प्राप्त करेगा और एक निर्धारित समय-सीमा में प्रतिक्रिया भेजेगा।
- कोविड-19 पर किसी भी समाचार का आधिकारिक संस्करण इकाई से प्राप्त किया जा सकता है।

प्रेस सूचना ब्यूरो के संदर्भ में जानकारी

- यह भारत सरकार की नोडल एजेंसी है जो सरकारी नीतियों, कार्यक्रमों, पहलों और उपलब्धियों पर प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया को जानकारी प्रसारित करती है।
- यह सरकार और मीडिया के बीच एक इंटरफेस के रूप में कार्य करता है।
- यह अपनी आधिकारिक वेबसाइट पर उपलब्ध प्रेस विज्ञप्ति, लेखों, तस्वीरों आदि के माध्यम से सरकारी जानकारी प्रदान करता है।

टॉपिक- जी.एस. पेपर 2- शासन

स्रोत- पी.आई.बी.

प्रोजेक्ट प्राण

खबरों में क्यों है?

- भारतीय विज्ञान संस्थान में वैज्ञानिकों और छात्रों ने प्रोजेक्ट प्राण के अंतर्गत एक स्वदेशी वेंटिलेटर का प्रोटोटाइप विकसित किया है।

प्रोजेक्ट प्राण के संदर्भ में जानकारी

- संकट के समय राष्ट्र की मदद करने के लिए यह परियोजना, एक स्वैच्छिक प्रयास है।
- इस प्रोटोटाइप में द्रव्यमान प्रवाह सेंसर और नियंत्रक होते हैं, जो सटीक रूप से बताते हैं कि कितनी ऑक्सीजन प्रवाहित हो रही है और मरीज एक सांस में कितना आयतन अंदर ग्रहण कर रहा है।
- न्यूमेटिक्स को द्रव्यमान उत्पादित पानी फिल्टर हार्डवेयर के आसपास बनाया गया है।
- नियंत्रण प्रणाली ओपन-सोर्स औद्योगिक नियंत्रक के आसपास बनाई गई है।

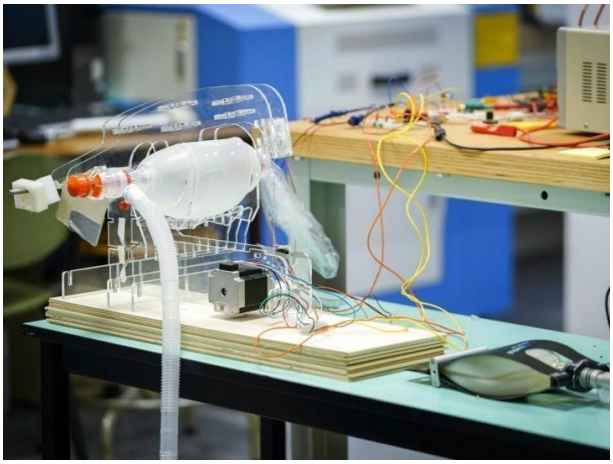

टॉपिक- जी.एस. पेपर 2- गवर्नेंस

स्रोत- पी.आई.बी.

जियो-फेंसिंग ऐप

खबरों में क्यों है?

- हाल ही में, केंद्र देश भर में जियो-फेंसिंग ऐप की मदद से कोविड-19 मामलों को ट्रैक करने के लिए प्रत्येक 15 मिनट में टेलीकॉम कंपनियों से "सूचना प्राप्त करने" के लिए भारतीय टेलीग्राफ अधिनियम के अंतर्गत शक्तियों का उपयोग कर रहा है।

यह कैसे काम करता है?

- यह किसी व्यक्ति के मोबाइल फोन के सेल टॉवर स्थान के आधार पर किसी अधिकृत सरकारी एजेंसी को ईमेल और एस.एम.एस. अलर्ट भेजता है, यदि किसी व्यक्ति ने क्वारंटाइन का उल्लंघन किया है अथवा वह आइसोलेशन से भाग गया है।
- "जियो-फेंसिंग" 300 मीटर तक सटीक है।

कानूनी अधिकार

- राज्यों को भारतीय टेलीग्राफ अधिनियम, 1885 की धारा 5 (2) के प्रावधानों के अंतर्गत अपने गृह सचिव की मंजूरी लेने के लिए कहा गया है, निर्दिष्ट मोबाइल फोन नंबरों के लिए भू-फेंसिंग का उल्लंघन करने के मामले में ईमेल या एस.एम.एस. द्वारा जानकारी देने का अनुरोध करने के लिए डी.ओ.टी. से अनुरोध किया गया है।
- हाल ही में, दूरसंचार विभाग (डी.ओ.टी.) ने कोविड-19 क्वारंटाइन चेतावनी प्रणाली (सी.क्यू.ए.एस.) नामक एप्लिकेशन के बारे में सभी दूरसंचार सेवा प्रदाताओं के साथ एक मानक संचालन प्रक्रिया (एस.ओ.पी.) साझा की है।
- यह सिस्टम, एक सामान्य सुरक्षित प्लेटफॉर्म पर डिवाइस लोकेशन सहित फोन डेटा को जांचता है और निगरानी में अथवा आइसोलेशन में रखे गए कोविड-19 रोगियों द्वारा उल्लंघन किए जाने की दशा में स्थानीय एजेंसियों को सचेत करेगा।
- सी.क्यू.ए.एस. मोबाइल नंबरों की एक सूची तैयार करेगा, जो उन्हें दूरसंचार सेवा प्रदाताओं के आधार पर अलग करेगा और जियो-फेंसिंग का निर्माण करने हेतु कंपनियों द्वारा प्रदान किए गए लोकेशन डेटा को एप्लीकेशन पर संचालित किया जाएगा।

गोपनीयता संबंधी चिंताएं

- एकत्र किए गए डेटा का उपयोग केवल कोविड-19 के संदर्भ में स्वास्थ्य प्रबंधन के लिए किया जाएगा और कड़ाई से किसी अन्य उद्देश्यों के लिए इसका उपयोग नहीं किया जाएगा। इस संबंध में कोई भी उल्लंघन होने पर संबंधित कानूनों के अंतर्गत दंडात्मक प्रावधानों को आकर्षित करेगा।

डेटा डिलीट कर दिया जाएगा:

- उस फ़ोन नंबर को एक अवधि के बाद को सिस्टम से हटा दिया जाना चाहिए, जिस अवधि के लिए स्थान की निगरानी की आवश्यकता होती है और उसके बाद से चार सप्ताह बाद डेटा डिलीट कर दिया जाएगा।

नोट:

- केरल, कोविड-19 मामलों को ट्रैक करने के लिए भू-फेंसिंग उपयोग करने वाले राज्यों में से पहला राज्य है।

टॉपिक- जी.एस. पेपर 2- शासन

स्रोत- द हिंदू

'लॉकडाउन' के बीच भारत में लागू किए गए कानून

खबरों में क्यों है?

- हाल ही में, गृह मंत्रालय ने कहा है कि रोकथाम के उपायों का उल्लंघन करने वाले व्यक्तियों को आई.पी.सी. की धारा 188 के अतिरिक्त आपदा प्रबंधन अधिनियम, 2005 के प्रावधानों के अंतर्गत दंडित किया जा सकेगा।

आई.पी.सी. और आपदा प्रबंधन के संबंधित प्रावधान इस प्रकार हैं:

i. अवज्ञा के लिए

a) आई.पी.सी. की धारा 188, एक लोक सेवक द्वारा पारित आदेश की अवज्ञा करने वालों से संबंधित है और ऐसे व्यक्तियों हेतु एक से छह महीने तक कारावास का प्रावधान करता है।

- महामारी रोग अधिनियम के अंतर्गत पारित आदेशों का उल्लंघन करने वालों के लिए आई.पी.सी. की धारा 188 वह प्रावधान है जिसके अंतर्गत सजा दी जाती है।

b) आपदा प्रबंधन अधिनियम, 2005 की धारा 51 में दो प्रकार के अपराधों के लिए सजा का प्रावधान है:

- किसी कार्य के निर्वहन के लिए किसी भी आपदा प्रबंधन प्राधिकरण द्वारा अधिकृत व्यक्ति या सरकार के किसी भी अधिकारी या कर्मचारी को बाधित करना
- अधिनियम के अंतर्गत अधिकारियों द्वारा दिए गए किसी भी निर्देश के अनुपालन से इनकार करना।
- दोषसिद्धि पर सजा को एक वर्ष तक बढ़ाया जा सकता है या दो वर्ष तक बढ़ाया जा सकता है यदि प्रतिषेध करने पर जानमाल का नुकसान होता है या कोई आसन्न खतरा होता है।

ii. भय फैलाने के लिए

A. आई.पी.सी. की धारा 505 उन व्यक्तियों हेतु तीन वर्ष की कैद या जुर्माना या दोनों के लिए प्रावधान प्रदान करती है, जो किसी ऐसी चीज को प्रकाशित या प्रसारित करते हैं जिससे डर या चेतावनी पैदा होने की संभावना होती है।

B. आपदा प्रबंधन अधिनियम की धारा 54 में उन लोगो के लिए कैद की सजा का प्रावधान है, जो एक आपदा या इसकी गंभीरता या परिमाण के बारे में गलत अलार्म या चेतावनी बनाने या प्रसारित करते हैं, जिसे एक वर्ष तक बढ़ाया जा सकता है।

iii. सहायता के लिए झूठे दावे हेतु

A. आपदा प्रबंधन अधिनियम की धारा 52 के अंतर्गत कोई भी किसी भी आधिकारिक प्राधिकरण से "किसी भी राहत, सहायता, मरम्मत, पुनर्निर्माण या अन्य लाभों" को प्राप्त करने का झूठा दावा करता है, उसे अधिकतम दो वर्ष के कारावास की सजा हो सकती है और उस व्यक्ति पर जुर्माना लगाया जाएगा।

iv. कर्तव्यों को पूरा करने से इंकार करने के लिए

- अधिनियम के अंतर्गत किसी भी अधिकारी के द्वारा दिए गए कार्य को करने से इंकार करने या वापस लेने के मामले में अधिकारी को एक वर्ष तक के कारावास की सजा सुनाई जा सकती है।
- हालांकि, जिन लोगों के पास वरिष्ठ की लिखित अनुमति या ऐसी सजा से छूट प्राप्त करने हेतु कोई भी कानूनी आधार है।
- राज्य या केंद्र सरकार से स्पष्ट मंजूरी के बिना कोई भी केस शुरू नहीं किया जा सकता है।

v. मदद करने से इंकार करने हेतु

- कोई भी अधिकृत प्राधिकारी अधिनियम संसाधनों के अंतर्गत व्यक्तियों और भौतिक संसाधनों, भूमि या भवन जैसे परिसरों या बचाव कार्यों के लिए शेड और वाहनों जैसे आवश्यक कार्य कर सकता है।
- हालांकि अधिनियम के अंतर्गत मुआवजे का प्रावधान है, जो भी व्यक्ति इस तरह के आदेश की अवहेलना करेगा उसे एक वर्ष तक की कैद की सजा हो सकती है।

टॉपिक- जी.एस. पेपर 2- गवर्नेंस

स्रोत- इंडियन एक्सप्रेस

नीति आयोग के अंतर्गत 'सशक्त समूह'

खबरों में क्यों है?

- हाल ही में, सरकार ने निजी क्षेत्र और अंतर्राष्ट्रीय संगठनों के साथ कोविड-19 से निपटने में आने वाली चुनौतियों और नियोजित योजनाबद्ध कार्यों पर चर्चा करने के लिए एक सशक्त समूह की स्थापना की है।

सशक्त समूह के संदर्भ में जानकारी

- सशक्त समूह की अध्यक्षता नीति आयोग के सी.ई.ओ. अमिताभ कांत कर रहे हैं।

उद्देश्य

- यह सशक्त समूह समस्याओं की पहचान, प्रभावी समाधान और हितधारकों के तीन समूहों के साथ योजनाओं के निर्माण से संबंधित मुद्दों को संबोधित करेगा।

ये हितधारक हैं:

- संयुक्त राष्ट्र की एजेंसियां, विश्व बैंक, एशियाई विकास बैंक
- सिविल सोसायटी संगठन और विकास भागीदार
- उद्योग संघ- सी.आई.आई., फिक्की, एसोचैम, नैसकॉम

टॉपिक- जी.एस. पेपर 2- गवर्नेंस

स्रोत- इंडियन एक्सप्रेस

लाइफलाइन उड़ान फ्लाइटें

खबरों में क्यों हैं?

- नागरिक उड्डयन मंत्रालय ने नॉवेल कोरोनवायरस वायरस के खिलाफ भारत के युद्ध के हिस्से के रूप में "लाइफलाइन उड़ान" लॉन्च किया है।

लाइफलाइन उड़ान फ्लाइटों की पहल के संदर्भ में जानकारी

- इस पहल के अंतर्गत, पूरे देश में आवश्यक और चिकित्सा आपूर्ति की आवाजाही के लिए उड़ानें संचालित की जा रही हैं।
- लाइफलाइन उड़ान के अंतर्गत फ्लाइटों का समन्वय नागरिक उड्डयन मंत्रालय के प्रत्यक्ष पर्यवेक्षण के अंतर्गत स्थापित एक कंट्रोल रूम द्वारा किया जा रहा है।
- लाइफलाइन उड़ान के कार्गो में कोविड-19 से संबंधित चिकित्सा उपकरण, अभिकर्मक, एंजाइम, व्यक्तिगत सुरक्षा उपकरण (पी.पी.ई.), परीक्षण किट, मास्क, दस्तानों के साथ ही कोरोना वारियर्स द्वारा आवश्यक अन्य सामान शामिल हैं।

विशेष रूप से ध्यान केंद्रित

- उत्तर पूर्व क्षेत्र, द्वीप क्षेत्रों और पहाड़ी राज्यों पर विशेष रूप से ध्यान दिया जा रहा है।
- लाइफलाइन उड़ान उत्तर पूर्व क्षेत्र को कोलकाता, गुवाहाटी और बागडोगरा में क्षेत्रीय केंद्रों के माध्यम से जोड़ता है।

टॉपिक- जी.एस. पेपर 2- गवर्नेंस

स्रोत- द हिंदू

'करूणा- प्राकृतिक आपदाओं में सहायता हेतु सिविल सेवा संघ पहुँच

खबरों में क्यों है?

- हाल ही में, भारतीय प्रशासनिक सेवा और भारतीय पुलिस सेवा सहित केंद्रीय सिविल सेवा के अधिकारियों ने कोरोनोवायरस से लड़ने में सरकार के प्रयासों का समर्थन करने और उन्हें पूरक बनाने के लिए करूणा नामक एक पहल की शुरूआत की है।

CARUNA
CIVIL SERVICES ASSOCIATIONS REACH TO SUPPORT IN NATURAL DISASTERS

यह कैसे प्रभावित करेगा?

- कोविड-19 के खिलाफ लड़ाई में सरकार का समर्थन करने के लिए सिविल सेवा संघों- करूणा- प्राकृतिक आपदाओं में सहायता हेतु सिविल सेवा संघ पहुँच से IFS, IPS, IFoS, IRS (IT),

IRS (C & E), IRPS, IRTS, IPOS, IA&AS, IDES, ICAS, IIS & IAS CARUNA - प्राकृतिक आपदाओं में सहायता हेतु एक प्रौद्योगिकी मंच है।

- करूणा वास्तविक समय के आधार पर प्रशंसनीय सरकारी पहलों का समर्थन करेगा और इन्हें पूरक बनाएगा, इसके अतिरिक्त स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय और माईगॉव मंच के साथ ही कोविड-19 के खिलाफ लड़ाई में केंद्र और राज्य सरकारों द्वारा स्थापित टास्क फोर्स को प्रासंगिक जानकारी साझा करके समन्वित तरीके से उनकी सहायता करेगा।
- करूणा मंच ने पहले ही सरकारों और क्षेत्र-स्तर के अधिकारियों दोनो के समर्थन के प्रचालन के लिए 10-दिवसीय कार्य योजना बनाई है।
- इसने निम्न पर थीम (थ्रेड्स ऑन स्लैक कहा जाता है- स्लैक एक मालिकाना इंस्टेंट मैसेजिंग प्लेटफॉर्म है जिसे स्लैक टेक्नोलॉजी द्वारा विकसित किया गया है) बनाई हैं:

a. स्वास्थ्य कर्मचारियों आदि के लिए क्षमता निर्माण/ प्रशिक्षण सहायता आदि
b. स्वास्थ्य उपकरण निर्माताओं आदि का डेटाबेस की तुलना करना
c. प्रवास से संबंधित मुद्दों और अस्थायी आश्रयों को कम करना
d. इसकी वेबसाइट के अनुसार, टीम के समर्पित सदस्यों द्वारा मानी गई विशिष्ट जिम्मेदारियों के साथ खाद्य सुरक्षा से संबंधित मुद्दों आदि पर काम करना।

करूणा पहल के संदर्भ में जानकारी

- 'करूणा' एक सहयोगी मंच है। संक्षिप्त नाम करूणा का पूरा नाम प्राकृतिक आपदाओं में सहायता हेतु सिविल सेवा संघ पहुँच है।
- यह एक सहयोगी मंच का प्रतिनिधित्व करता है, जिस पर सिविल सेवक, उद्योग प्रमुख, एनजीओ पेशेवर और अन्य के बीच आई.टी. पेशेवर अपने समय और क्षमताओं का योगदान करने के लिए एक साथ आए हैं।
- इसने सरकार से आदेश भी मांगे हैं। एस.ओ.पी., प्रोटोकॉल, सर्वोत्तम प्रथाओं, आई.ई.सी. सामग्री और विभिन्न हितधारकों से प्रेरक कहानियां शामिल हैं।

टॉपिक- जी.एस. पेपर 2- गवर्नेंस

स्रोत- पी.आई.बी.

सांसद स्थानीय क्षेत्र विकास (एम.पी.एल.ए.डी.एस.) योजना

खबरों में क्यों है?

- हाल ही में, मंत्रिमंडल ने कोविड-19 के प्रबंधन के लिए एम.पी.एल.ए.डी.एस. के दो वर्ष (2020-21 और 2021-22) के गैर-संचालन को मंजूरी प्रदान की है।
- इन निधियों का उपयोग देश में कोविड-19 की चुनौतियों और प्रतिकूल प्रभाव के प्रबंधन में सरकार के प्रयासों को मजबूत करने के लिए किया जाएगा।

सांसद स्थानीय क्षेत्र विकास (एम.पी.एल.ए.डी.एस.) योजना के संदर्भ में जानकारी

- सांसद स्थानीय क्षेत्र विकास योजना (एम.पी.एल.ए.डी.एस.) को 23 दिसंबर, 1993 को लॉन्च किया गया था।

- प्रारंभ में, ग्रामीण विकास मंत्रालय इस योजना के लिए नोडल मंत्रालय था। फिर अक्टूबर, 1994 में इस योजना की नोडल एजेंसी के रूप में सांख्यिकी एवं कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय को हस्तांतरित कर दिया गया था।

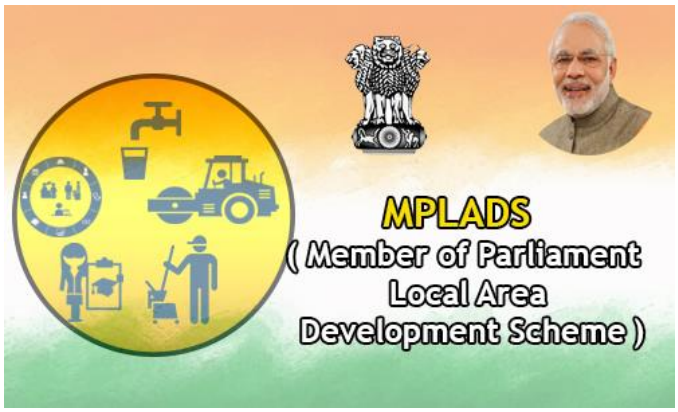

एम.पी.एल.ए.डी.एस. योजना की मुख्य विशेषताओं में शामिल हैं:

- यह भारत सरकार द्वारा पूर्णतय: वित्तपोषित एक केंद्रीय योजना है, जिसके अंतर्गत निधियों को प्रत्यक्ष रूप से जिला अधिकारियों को अनुदान के रूप में जारी किया जाता है।
- योजना के अंतर्गत जारी की गई निधि गैर-देय हैं अर्थात किसी विशेष वर्ष में जारी किए गए धन का हकदार पात्रता के अधीन बाद के वर्षों के लिए आगे नहीं बढ़ाया जाता है।
- एम.पी.एल.ए.डी.एस. के अंतर्गत, सांसदों की भूमिका कार्यों की अनुशंसा करने के लिए सीमित है।
- इसके बाद, निर्धारित समयसीमा के भीतर सांसदों द्वारा अनुशंसित कार्यों को मंजूरी देना, निष्पादित करना और पूरा करना जिला प्राधिकरण की जिम्मेदारी है।

नोट:

- निर्वाचित लोकसभा सदस्य अपने संबंधित निर्वाचन क्षेत्रों में कार्यों की सिफारिश कर सकते हैं।
- राज्यसभा के निर्वाचित सदस्य उस राज्य में कहीं भी काम करने की सिफारिश कर सकते हैं, जहाँ से वे चुने गए हैं।
- लोकसभा और राज्यसभा के मनोनीत सदस्य देश में कहीं भी कार्यान्वयन हेतु कार्यों की सिफारिश कर सकते हैं।

टॉपिक- जी.एस. पेपर 2- गवर्नेंस

स्रोत- द हिंदू

वॉक मी प्लेटफार्म

खबरों में क्यों है?

- उद्यमों के बीच डायनामिक्स 365 के अनुकूलन को गति प्रदान करने में मदद करने के लिए तकनीक का कुशलतापूर्वक और उत्पादकता से उपयोग करने के लिए माइक्रोसॉफ्ट ने प्रमुख डिजिटल अनुकूलन प्लेटफॉर्म वॉक मी के साथ साझेदारी की है।

यह प्लेटफ़ॉर्म कैसे काम करता है?

- कंपनियां अब उद्यमी संगठनों को बिना किसी विस्तार के माइक्रोसॉफ्ट डायनामिक्स 365 के शीर्ष पर वॉक मी के डिजिटल अनुकूलन प्लेटफ़ॉर्म को आसानी से तैनात करने की अनुमति दे सकने में सक्षम होंगी।
- वॉक मी, दुनिया भर में अग्रणी संगठनों को एक ऑलराउंड समाधान प्रदान करता है, जिससे उन्हें कर्मचारी और ग्राहक उपयोगकर्ता को अपनाने और संगठन के लिए एक सुचारू डिजिटल परिवर्तन सुनिश्चित करने में मदद मिलती है।
- यह बिक्री के लिए उत्पादकता और दक्षता बढ़ाने को आसान बनाता है और अपने प्रौद्योगिकी भंडार के भीतर डायनामिक्स 365 की पूर्ण क्षमता का एहसास करने को भी आसान बना देगा।

टॉपिक- जी.एस. पेपर 2-गवर्नेंस

स्रोत- पी.आई.बी.

सांसदों का वेतन, भत्ते और पेंशन (संशोधन) अध्यादेश, 2020

खबरों में क्यों है?

- केंद्रीय मंत्रिमंडल ने नॉवेल कोरोनोवायरस के खिलाफ लड़ाई के लिए संसाधन जुटाने के लिए देश के सभी सांसदों (एम.पी.) के वेतन को एक साल के लिए 30 प्रतिशत तक कम करने के लिए एक अध्यादेश की घोषणा की है।
- सांसदों के वेतन में कटौती को सांसद अधिनियम, 1954 के वेतन, भत्ते और पेंशन में संशोधन करके लागू किया जाएगा।

धारा 3 का संशोधन

- इस उद्देश्य के लिए, लोकसभा और राज्यसभा सांसदों को देय वेतन का 30% तक कम करने के लिए सांसदों के वेतन, भत्ते और पेंशन अधिनियम, 1954 की धारा 3 में एक नई उप-धारा जोड़ी गई है।
- यह 1 अप्रैल, 2020 से एक वर्ष के लिए लागू होगी।

अनुच्छेद 123 का संवैधानिक प्रावधान

- संविधान का अनुच्छेद 123, राष्ट्रपति को तब अध्यादेशों की घोषणा करने के लिए कुछ निश्चित कानून बनाने की शक्ति प्रदान करता है, जब संसद के दोनों सदनों को सत्रों में शामिल नहीं किया जाता है और इसलिए संसद में कानून बनाना संभव नहीं है।
- कार्यपालिका की अध्यादेश बनाने की शक्ति के विषय में निम्नलिखित सीमाएँ मौजूद हैं:

a. **विधायिका सत्र में नहीं होती है:** राष्ट्रपति केवल एक अध्यादेश की घोषणा कर सकते हैं जब संसद के दोनों सदनों में से कोई भी सत्र में उपस्थित नहीं होता है।
b. **तत्काल कार्रवाई की आवश्यकता होती है**: राष्ट्रपति तब तक अध्यादेश की घोषणा नहीं कर सकते हैं जब तक कि वह संतुष्ट न हों कि ऐसी परिस्थितियां हैं जिनके लिए 'तत्काल कार्रवाई' की आवश्यकता है।
c. **सत्र के दौरान संसदीय अनुमोदन:** संसद को पुन: समायोजन से छह सप्ताह के भीतर अध्यादेशों को मंजूरी देनी चाहिए या वे कार्य करना बंद कर देंगे।

- वे दोनों सदनों द्वारा पारित अध्यादेश पारित के साथ असहमति रखने वाले संकल्प के मामले में भी काम करना बंद कर देंगे।

सांसद स्थानीय क्षेत्र विकास योजना (एम.पी.एल.ए.डी.एस.) के मंत्री

- मंत्रिमंडल ने दो वर्ष (2020-21 और 2021-22) के लिए एम.पी.एल.ए.डी.एस निधि (सांसद स्थानीय क्षेत्र विकास योजना के मंत्री) के अस्थायी निलंबन को भी लागू कर दिया है।
- दो वर्ष के लिए एम.पी.एल.ए.डी.एस निधि के निलंबन से तात्पर्य है कि 7900 करोड़ रूपए की धनराशि भारत के समेकित कोष में दी जाएगी।

यह क्या है?

- इसे दिसंबर, 1993 में शुरू किया गया था, जिससे कि सांसदों के लिए स्थायी सामुदायिक संपत्ति के निर्माण के लिए विकासात्मक प्रकृति के कामों की सिफारिश करने और स्थानीय स्तर पर महसूस की गई आवश्यक्ताओं के आधार पर सामुदायिक बुनियादी ढांचा सहित बुनियादी सुविधाओं के प्रावधान की व्यवस्था की जा सके।
- एम.पी.एल.ए.डी.एस., भारत सरकार द्वारा पूर्णतय: वित्त पोषित एक नीति योजना है।
- प्रति सांसद निर्वाचन क्षेत्र के लिए वार्षिक एम.पी.एल.ए.डी.एस निधि पात्रता 5 करोड़ रुपए है।

विशेष ध्यान:

- सांसदों को प्रत्येक वर्ष अनुसूचित जाति की आबादी वाले क्षेत्रों के लिए एक वर्ष के लिए एम.पी.एल.ए.डी.एस. पात्रता के कम से कम 15 प्रतिशत लागत के और अनुसूचित जनजाति की आबादी के निवास वाले क्षेत्रों के लिए 7.5 प्रतिशत की लागत के काम की सिफारिश करनी होती है।
- जनजातीय लोगों की बेहतरी के लिए ट्रस्ट और समाजों को प्रोत्साहित करने के लिए योजना दिशानिर्देशों में निर्धारित शर्तों के अधीन ट्रस्टों और सोसाइटियों द्वारा परिसंपत्तियों के निर्माण के लिए 75 लाख रूपए की सीमा निर्धारित है।

कार्यों की सिफारिश:

- लोकसभा सदस्य, अपने संबंधित निर्वाचन क्षेत्रों में कार्यों की सिफारिश कर सकते हैं।
- राज्य सभा के निर्वाचित सदस्य उस राज्य में कहीं भी काम करने की सिफारिश कर सकते हैं, जहाँ से वे चुने गए हैं।

- लोकसभा और राज्यसभा के नामित सदस्य देश में कहीं भी कार्यान्वयन के लिए काम का चयन कर सकते हैं।

टॉपिक- जी.एस. पेपर 2-गवर्नेंस

स्रोत- पी.आई.बी.

प्रधानमंत्री भारतीय जनऔषधि परियोजना (पी.एम.बी.जे.पी.)

खबरों में क्यों हैं?

- प्रधानमंत्री जनऔषधि केंद्र के "स्वास्थ्य के सिपाही" के रूप में लोकप्रिय फार्मासिस्ट, प्रधानमंत्री भारतीय जनऔषधि परियोजना (पी.एम.बी.जे.पी.) के अंतर्गत रोगियों और बुजुर्गों के घरों तक आवश्यक सेवाएँ और दवाएँ दे रहे हैं।

प्रधानमंत्री भारतीय जनऔषधि परियोजना के संदर्भ में जानकारी

- प्रधानमंत्री भारतीय जनऔषधि परियोजना (पी.एम.बी.जे.पी.), जन-जन को सस्ती कीमत पर गुणवत्तापूर्ण दवाइयां उपलब्ध कराने के लिए फार्मास्यूटिकल्स विभाग द्वारा शुरू किया गया एक अभियान है। पी.एम.बी.जे.पी. स्टोर जेनेरिक दवाओं को उपलब्ध कराने के लिए स्थापित किए गए हैं, जो कम कीमतों पर उपलब्ध हैं लेकिन गुणवत्ता और प्रभावकारिता के संदर्भ में महंगी ब्रांडेड दवाओं के बराबर हैं।
- फार्मास्यूटिकल्स विभाग ने इसे नवंबर, 2008 में जन औषधि अभियान नाम से लॉन्च किया था।
- ब्यूरो ऑफ फार्मा पी.एस.यू. ऑफ इंडिया (बी.पी.पी.आई.), पी.एम.बी.जे.पी के लिए कार्यान्वयन एजेंसी है।

दृष्टिकोण

* यह एक नागरिक द्वारा स्वास्थ्य संबंधी बजट व्यय को कम करने की परिकल्पना करता है। यह सस्ती कीमतों पर गुणवत्तापूर्ण जेनेरिक दवाओं को सुनिश्चित करना चाहता है।

मिशन

- जेनेरिक दवाओं के बारे में जनता के बीच जागरूकता पैदा करना
- चिकित्सा चिकित्सकों के माध्यम से जेनेरिक दवाओं की मांग बनाना
- शिक्षा और जागरूकता कार्यक्रम के माध्यम से जागरूकता पैदा करना कि अधिक मूल्य को उच्च गुणवत्ता का पर्याय नहीं होना चाहिए।
- सभी चिकित्सीय समूहों को कवर करने वाली सामान्य रूप से उपयोग की जाने वाली जेनेरिक दवाएं प्रदान करना
- योजना के अंतर्गत सभी संबंधित स्वास्थ्य देखभाल उत्पाद भी प्रदान करना

उद्देश्य

- नागरिकों की स्वास्थ्य सेवा में जेब खर्च को कम करने के लिए विशिष्ट आउटलेट "प्रधानमंत्री भारतीय जन औषधि केंद्र" के माध्यम से सभी के लिए मुख्य रूप से गरीबों और वंचितों के लिए सस्ती कीमतों पर गुणवत्ता वाली दवाइयां उपलब्ध कराना है।
- यह "किफायती दामों पर गुणवत्तापूर्ण जेनेरिक दवाओं" की उपलब्धता सुनिश्चित करता है।

टॉपिक- जी.एस. पेपर 2- गवर्नेंस

स्रोत- पी.आई.बी.

विश्व स्वास्थ्य दिवस 2020

खबरों में क्यों है?

- विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यू.एच.ओ.) डॉक्टरों, नर्सों और अन्य स्वास्थ्य कर्मियों के योगदान के लिए धन्यवाद अदा करने हेतु प्रत्येक वर्ष 7 अप्रैल को विश्व स्वास्थ्य दिवस मनाता है।
- डब्ल्यू.एच.ओ. ने वर्ष 2020 को "ईयर ऑफ द नर्स एंड मिडवाइफ" के रूप में चुना है क्यों कि नर्सों और मिडवाइफों (दाइयों) द्वारा दिए गए योगदान के कारण दुनिया को एक स्वस्थ स्थान बनाने में सहयोग मिल रहा हैं।
- विश्व स्वास्थ्य दिवस 2020 की थीम नर्सों और मिडवाइफों का समर्थन करना है।

विश्व स्वास्थ्य दिवस 2020: इतिहास

- डब्ल्यू.एच.ओ. ने वर्ष 1950 में विश्व स्वास्थ्य दिवस अभियान की शुरुआत शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के बारे में जागरूकता को बढ़ावा देने और आवश्यक सहायता की पेशकश के उद्देश्य से की थी। इसका मुख्य उद्देश्य विश्व स्वास्थ्य संगठन के लिए चिंता के प्राथमिकता वाले क्षेत्र को उजागर करने के लिए एक विशिष्ट स्वास्थ्य थीम के बारे में जागरूकता पैदा करना है।

नोट: डब्लू.एच.ओ. ने 'स्टेट ऑफ द वर्ल्ड्स नर्सिंग रिपोर्ट 2020' भी जारी की है, जो "वैश्विक नर्सिंग कार्यबल के लिए नीतिगत और नवीनतम विकल्प" प्रदान करती है। यह रिपोर्ट नर्सिंग शिक्षा, नौकरियों और नेतृत्व में उच्च निवेश के लिए भी एक केस बनाती है।

टॉपिक- जी.एस. पेपर 2- गवर्नेंस

स्रोत- द हिंदू

समाधान- एम.एच.आर.डी. नवाचार इकाई

खबरों में क्यों है?

- कोरोनावायरस के प्रकोप के बीच, मानव संसाधन विकास मंत्रालय (एम.ओ.एच.आर.डी.) ने कोविड-19 के खिलाफ लड़ने के लिए "समाधान" लॉन्च किया है।

समाधान के संदर्भ में जानकारी

- यह फोर्ज और इनोवेटियोक्यूरिस के सहयोग से एम.ओ.एच.आर.डी. की नवाचार इकाई और अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद की एक पहल है।
- इसका उद्देश्य छात्रों की नवाचार करने की क्षमता का परीक्षण करना है।
- "समाधान" चुनौती के अंतर्गत, छात्रों और संकायों को नए प्रयोग और खोज करने के लिए प्रेरित किया जाएगा और उन्हें प्रयोग और खोज की भावना के लिए एक मजबूत आधार प्रदान किया जाएगा।

टॉपिक- जी.एस. पेपर 2- गवर्नेंस

स्रोत- टी.ओ.आई.

सेफ प्लस योजना

खबरों में क्यों है?

- भारतीय लघु उद्योग विकास बैंक (सिडबी) ने कोरोनावायरस (सेफ प्लस) के खिलाफ आपातकालीन प्रतिक्रिया योजना को सुगम बनाने के लिए सिडबी सहायता शुरू की है।

उद्देश्य

- इसका उद्देश्य सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों (एम.एस.एम.ई.) को वित्तीय सहायता प्रदान करना है जो कोविड-19 महामारी का मुकाबला करने के लिए हैंड सेनिटाइज़र, मास्क, दस्ताने, हेडगियर, बॉडीसूट्स, शू-कवर, वेंटिलेटर और चश्मे जैसे आवश्यक सामानों के विनिर्माण में शामिल हैं।
- यह न्यूनतम औपचारिकताओं और बिना किसी अपेक्षित संपार्श्विक संपत्ति के साथ धन को त्वरित रूप से जारी करने को सुनिश्चित करना चाहता है।

यह किस प्रकार फायदेमंद होगी?

- अपने स्पष्ट सरकारी ऑर्डरों पर लघु और मध्यम उद्यमों (एम.एस.एम.ई.) द्वारा एक करोड़ रुपये तक की आपातकालीन कार्यशील पूंजी का लाभ उठाया जा सकता है।
- कोरोनावायरस के खिलाफ आपातकालीन प्रतिक्रिया को सुगम बनाने के लिए सिडबी सहायता है- सेफ प्लस संपार्श्विक-मुक्त ऋण की पेशकश करता है और 48 घंटो के भीतर ऋण का वितरण करता है।
- पांच प्रतिशत की ब्याज दर पर ऋण प्रदान किया जाएगा।
- कुछ दिनों पहले घोषित सेफ ऋण की सीमा 50 लाख रुपये से बढ़ाकर 2 करोड़ रूपए कर दी गई है।

पात्रता मापदंड

a. **सेफ योजना:** मौजूदा सिडबी ग्राहक और नए सिडबी ग्राहक, दोनो इस ऋण का लाभ उठा सकते हैं।
b. **सेफ प्लस योजना:** एम.एस.एम.ई. सरकार के आदेशों को क्रियान्वित करते हैं, जो कि ब्याज सब्सिडी/ आर्थिक सहायता या पूंजीगत सब्सिडी के लिए संबंधित राज्य सरकार के विशेष नीति पैकेज के अंतर्गत पात्र हैं, वे 2 करोड़ रूपए तक का ऋण ले सकते हैं।
c. **स्माइल:** सिडबी के मौजूदा ग्राहक या सिडबी के नए ग्राहक, दोनों ही शामिल हैं, जिनमें ग्रीनफ़ील्ड भी शामिल है।

क्या कवर किया गया है?

- कोविड-19 के खिलाफ लड़ाई के अंतर्गत संबंधित राज्य सरकार द्वारा खरीदे जा रहे सभी चिकित्सा उत्पादों का उत्पादन या सेवाएं
- ऋण का उपयोग उपकरण, संयंत्र और मशीनरी या अन्य परिसंपत्तियों के अधिग्रहण के लिए किया जा सकता है जिसमें उत्पादन या सेवा के लिए आवश्यक कच्चे माल की खरीद या अतिरिक्त आपात स्थितियों को पूरा करने के लिए इन उत्पादों की आपूर्ति को बढ़ाना शामिल है।

क्या कवर नहीं है?

- ग्रीनफील्ड परियोजनाएं, वे उत्पाद जो कोविड-19, व्यापार आदि से प्रत्यक्ष रूप से संबंधित नहीं हैं।

तुलनात्मक पहलू:

सेफ	**सेफ प्लस**	**स्माइल**
एम.एस.एम.ई. को वित्त प्रदान करने के लिए जो कोरोनावायरस से लड़ने से संबंधित किसी भी उत्पाद का निर्माण कर रहे हैं या कोई भी सेवाएं प्रदान कर रहे हैं जैसे कि अनुज्ञप्त दवाएं, सैनिटाइज़र, मास्क, बॉडीसूट्स, दस्ताने, जूता कवर, वेंटिलेटर, परीक्षण प्रयोगशाला आदि।	**एम.एस.एम.ई. को आपातकालीन कार्यशील पूंजी प्रदान करने के लिए, जो सरकार या सरकारी एजेंसियो के विशिष्ट आदेशों पर कोरोनोवायरस के खिलाफ लड़ाई से प्रत्यक्ष रूप से संबंधित वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन कर रहे हैं,**	**कोरोना वायरस से लड़ने से संबंधित अपनी आवश्यकताओं के लिए अस्पतालों, नर्सिंगहोम, क्लीनिक आदि सहित स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र के वित्तपोषण के लिए उपलब्ध एक विशेष खिड़की है।**
सभी मौजूदा एम.एस.एम.ई. - चाहे सिडबी के मौजूदा ग्राहक हों या सिडबी के नए ग्राहक हों।		सिडबी के मौजूदा ग्राहक या सिडबी के नए ग्राहक, दोनों ही शामिल हैं, जिनमें ग्रीनफ़ील्ड भी शामिल है।
बिना संपार्श्विक		ऋण नीति के अनुसार
48 घंटे के भीतर		5 दिन
नोट: योजना के अंतर्गत निकासी 30 सितंबर, 2020 तक वैध है।		

<u>भारतीय लघु उद्योग विकास बैंक के संदर्भ में जानकारी</u>

- सिडबी सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम (एम.एस.एम.ई.) क्षेत्र के लिए प्रमुख वित्तीय संस्थान के साथ-साथ समान गतिविधियों में संलग्न संस्थानों के कार्यों के समन्वय के लिए कार्य करता है।
- इसे संसद के एक अधिनियम के माध्यम से 2 अप्रैल, 1990 को स्थापित किया गया था (इस प्रकार, यह एक संवैधानिक निकाय है)।
- इसका मुख्यालय लखनऊ, उत्तर प्रदेश में स्थित है।
- इसका उद्देश्य एम.एस.एम.ई. के ऋण प्रवाह को सुविधाजनक बनाना और मजबूत करना है और देश भर में एम.एस.एम.ई. पर्यावरण-प्रणाली में वित्तीय और विकासात्मक दोनों अंतरालों को संबोधित करना है।

- वर्तमान में, सिडबी के शेयर केंद्र सरकार और 29 अन्य संस्थानों के पास हैं, जिनमें सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक (पी.एस.बी.), केंद्र सरकार के स्वामित्व और नियंत्रण वाली बीमा कंपनियां शामिल हैं।

टॉपिक- जी.एस. पेपर 2- गवर्नेंस

स्रोत- ए.आई.आर.

एकीकृत सरकारी ऑनलाइन प्रशिक्षण (iGOT) पोर्टल

खबरों में क्यों है?

- भारत सरकार ने दीक्षा प्लेटफॉर्म पर कोविड-19 के प्रबंधन के लिए "एकीकृत सरकारी ऑनलाइन प्रशिक्षण" (iGOT) पोर्टल नामक एक प्रशिक्षण मॉड्यूल शुरू किया है।

एकीकृत सरकारी ऑनलाइन प्रशिक्षण (iGOT) पोर्टल के संदर्भ में जानकारी

- इसका उद्देश्य कोविड-19 महामारी से लड़ने वाले अग्रिम पंक्ति के कर्मचारियों की प्रशिक्षण आवश्यकताओं को पूरा करना है।
- डॉक्टर, नर्स, पैरामेडिक्स, स्वच्छता कार्यकर्ता, तकनीशियन, सहायक नर्सिंग मिडवाइव्स (ए.एन.एम.), राज्य सरकार के अधिकारी, नागरिक सुरक्षा अधिकारी, विभिन्न पुलिस संगठन, राष्ट्रीय कैडेट कोर (एन.सी.सी.), नेहरू युवा केंद्र संगठन (एन.वाई.के.एस.), राष्ट्रीय सेवा योजना, भारतीय रेड क्रॉस सोसाइटी, भारत स्काउट्स एंड गाइड्स और अन्य स्वयंसेवक के लिए iGOT पर पाठ्यक्रम शुरू किए गए हैं।
- यह महामारी को कुशलता से संभालने के लिए अग्रिम पंक्ति के श्रमिकों के क्षमता निर्माण को बढ़ाने पर भी केंद्रित है।

दीक्षा प्लेटफार्म के संदर्भ में जानकारी

- इसे वर्ष 2017 में मानव संसाधन विकास मंत्रालय की पहल के रूप में लॉन्च किया गया था।
- यह शिक्षा और प्रशिक्षण के लिए डिजिटल इन्फ्रास्ट्रक्चर ज्ञान साझाकरण प्लेटफॉर्म है।
- यह एन.सी.ई.आर.टी. और राज्य पाठ्यक्रम से संबंधित व्याख्या, अभ्यास और मूल्यांकन सामग्री से सुसज्जित है।

- यह पोर्टल शिक्षण संस्थानों में शुरूआत से लेकर अंत तक, यहां तक कि शिक्षको के सेवानिवृत्त होने तक उनके संपूर्ण काम और उनकी उपलब्धि को रिकॉर्ड करेगा।
- यह शिक्षकों के लिए राष्ट्रीय डिजिटल इन्फ्रास्ट्रक्चर के रूप में कार्य करता है।

टॉपिक- जी.एस. पेपर 2- गवर्नेंस

स्रोत- पी.आई.बी.

ऑपरेशन शील्ड (SHIELD)

खबरों में क्यों है?

- हाल ही में, दिल्ली के मुख्यमंत्री ने राष्ट्रीय राजधानी में कोरोनावायरस के प्रसार को नियंत्रित करने के लिए 'शील्ड' नामक एक व्यापक योजना की घोषणा की है।

इसका पूरा नाम क्या है?

संक्षिप्त SHIELD को निम्नानुसार विस्तृत किया जा सकता है:

- 'S' का अर्थ है इलाकों को सील करना
- 'H' का अर्थ है होम क्वारंटाइन करना
- 'I' का अर्थ है आइसोलेशन और ट्रेसिंग
- 'E' का अर्थ है आवश्यक आपूर्ति
- 'L' का अर्थ है स्थानीय स्वच्'छता
- 'D' का अर्थ है डोर-टू-डोर जांच

शील्ड योजना के संदर्भ में जानकारी

- ऑपरेशन शील्ड को दिल्ली में रोकथाम क्षेत्रों के रूप में पहचाने जाने वाले 21 इलाकों में लागू किया जाएगा।
- यह राष्ट्रीय राजधानी में कोरोनावायरस के प्रसार को नियंत्रित करने के लिए शील्ड नामक एक व्यापक योजना है।
- **इलाकों को सील करना:** एक इलाके के लोग अन्य क्षेत्रों में नहीं जाएंगे और ठीक इसके विपरीतत:।
- **होम क्वारंटाइन:** लोग केवल अपने घरों में ही रहेंगे।

- **आइसोलेशन और ट्रेसिंग:** कोविड-19 रोगियों को आइसोलेट किया जाएगा और जिन लोगों से वे मिले हैं, उनका पता लगाया जाएगा, उनकी पहचान की जाएगी और उन्हें भी आइसोलेट किया जाएगा।
- **आवश्यक आपूर्ति:** दिल्ली सरकार आवश्यक सेवाओं की डोर-टू-डोर डिलीवरी सुनिश्चित करेगी।
- **स्थानीय स्वच्छता:** स्थानीय क्षेत्रों को नियमित रूप से कीटाणुरहित किया जाएगा।
- **डोर-टू-डोर जांच:** सरकार प्रत्येक परिवार से पूछेगी कि क्या किसी व्यक्ति में कोरोनोवायरस के लक्षण है या नहीं है। यदि कोई ऐसा व्यक्ति पाया जाता है तो उनके नमूने लिए जाएंगे और आगे की प्रक्रिया का पालन किया जाएगा।

टॉपिक- जी.एस. पेपर 2- गवर्नेंस

स्रोत- बिजनेस स्टैंडर्ड

चित्रा एक्राइलोसॉर्ब स्राव जमना प्रणाली

खबरों में क्यों है?

- हाल ही में, श्री चित्रा तिरूनल चिकित्सा विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान (एस.सी.टी.आई.एम.एस.टी.) के वैज्ञानिकों ने चित्रा एक्राइलोसॉर्ब स्राव जमना प्रणाली नामक एक सुपर शोषक सामग्री को डिजाइन और विकसित किया है।

चित्रा एक्राइलोसॉर्ब स्राव जमना प्रणाली क्या है

- यह तरल श्वसन और शरीर के अन्य तरल पदार्थों के जमने के लिए एक अत्यधिक कुशल सुपर-शोषक सामग्री और संक्रमित श्वसन स्रावों के सुरक्षित प्रबंधन के लिए कीटाणुशोधन है।
- एम्बेडेड कीटाणुनाशक सामग्री के साथ एक सुपर-अवशोषक जेल, स्राव के भस्मीकरण से पहले स्राव के सुरक्षित संग्रह, समेकन और क्वारंटाइन के लिए एक आकर्षक प्रस्ताव है।

यह कैसे काम करता है?

- एक्राइलोसॉर्ब, अपने शुष्क भार की तुलना में कम से कम 20 गुना अधिक तरल को अवशोषित कर सकता है और इसमें आस-पास के विसंक्रमण हेतु कीटाणुरोधी लगा हुआ है।
- इस सामग्री से भरे कंटेनर दूषित तरल पदार्थ को जमाकर उसे स्थिर करेंगे (जेल-जैसे), इस प्रकार इसके छलकने से बचेंगे और इसे कीटाणुरहित भी करेंगे।

लाभ

- यह अस्पताल के कर्मचारियों के लिए जोखिम को कम करता है, बोतलों और कनस्तरों को पुन: उपयोग करने के लिए उन्हें कीटाणुरहित और साफ करने के लिए कर्मियों की आवश्यकता होती है और निपटान को सुरक्षित और आसान बनाता है।
- एक्राइलोसॉर्ब सक्शन कनस्तर, आई.सी.यू. के रोगियों या वार्डों में इलाज किए गए प्रचुर मात्रा में स्राव वाले रोगियों से तरल श्वसन स्राव एकत्र करेगा।
- श्वसन संबंधी संक्रमण वाले सफाई संबंधी मरीज के थूक और लार को जमाने के लिए सीलेबल और डिस्पोजेबल एक्राइलोसॉर्ब स्पिट बैग प्रदान किए जाते हैं, जिन्हें बाद में जलाया जा सकता है।

टॉपिक- जी.एस. पेपर 3- विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी

स्रोत- द हिंदू

R0 या प्रजनन संख्या

खबरों में क्यों है?

- हाल ही में, शोधकर्ता कोरोनावायरस के संचरण की प्रकृति को समझने के लिए गणितीय आंकड़े ' R0' की गणना कर रहे हैं।

मूल प्रजनन संख्या (R0) क्या है

- यह उस दर को मापता है, जिस पर एक वायरस प्रसारित होता है, यह उन व्यक्तियों की औसत संख्या पर आधारित होती है, जो पहले से संक्रमित व्यक्ति से वायरस के संपर्क में आते हैं।
- R0= नए संक्रमण/ मौजूदा संक्रमण
- जब R0 **का मान** 1 होता है, तो इसका अर्थ है कि आबादी में संक्रमित व्यक्तियों की संख्या नियत है। प्रत्येक व्यक्ति जो बीमारी से ठीक हो जाता है या मर जाता है, आबादी में एक नया केस होगा।
- इस तर्क से, आदर्श परिदृश्य तब होता है जब R0 **का मान** 1 से कम होता है, इसका अर्थ है कि संक्रमण कम लोगों तक प्रेषित होता है।
- जब इस दर को काफी समय तक बनाए रखा जाता है, तो बीमारी जड़ से समाप्त हो जाती है।
- विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यू.एच.ओ.) ने कोरोनोवायरस के लिए R0 **का मान** 1.4 से 2.5 के बीच अनुमानित किया है।
- पोलियो और चेचक जैसी बीमारियों को समाप्त करने के लिए अतीत में इसी रणनीति का उपयोग किया गया है। नोट: R0**,** जितना अधिक होगा, संक्रमण उतना ही संक्रामक होगा।

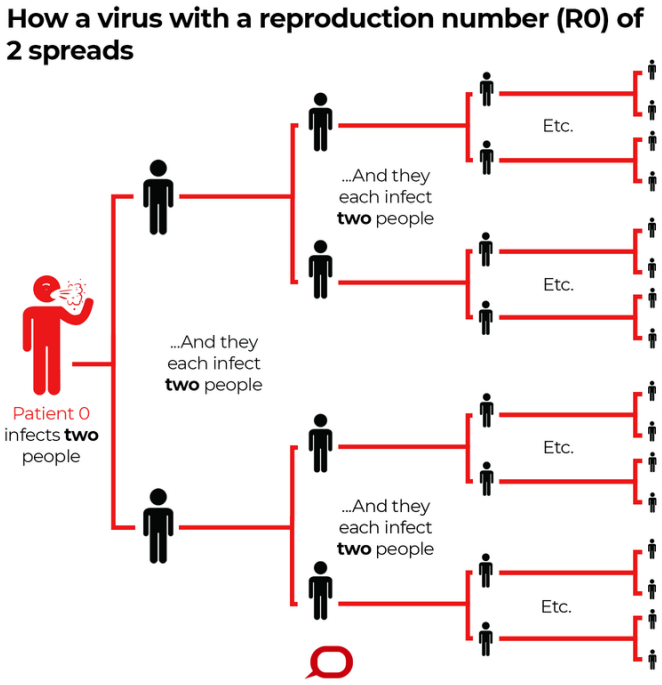

टॉपिक- जी.एस. पेपर 2- स्वास्थ्य एवं मुद्दे
स्रोत- इंडियन एक्सप्रेस

गैर-प्रमुख वन उपजों के लिए न्यूनतम समर्थन मूल्य (एम.एस.पी.)

खबरों में क्यों है?

- भारतीय जनजातीय सहकारी विपणन विकास संघ (ट्राइफेड) ने राज्य नोडल विभागों और कार्यान्वयन एजेंसियों से कहा है कि वे एम.एफ.पी. के लिए एम.एस.पी. योजना के अंतर्गत उपलब्ध फंड से न्यूनतम समर्थन मूल्य (एम.एस.पी.) पर गैर-प्रमुख वन उपजों (एम.एफ.पी.) की खरीद शुरू करें।

एम.एफ.पी. के लिए एम.एस.पी. योजना के संदर्भ में जानकारी:

- एम.एफ.पी. योजना के लिए न्यूनतम समर्थन मूल्य (एम.एस.पी.) को भारत सरकार द्वारा वर्ष 2013 में एम.एफ.पी. इकट्ठा करने वालों के लिए उचित और पारिश्रमिक मूल्य सुनिश्चित करने हेतु शुरू किया गया था।
- यह एक केंद्रीय क्षेत्र की योजना है। योजना के अंतर्गत "न्यूनतम समर्थन मूल्य के माध्यम से गैर-प्रमुख वन उपजों के विपणन हेतु तंत्र और एम.एफ.पी. के लिए मूल्य श्रृंखला का विकास किया जाता है।
- चुनिंदा एम.एफ.पी. के लिए गैर-प्रमुख वन उपजों (एम.एफ.पी.) के लिए न्यूनतम समर्थन मूल्य (एम.एस.पी.) निश्चित किया गया है।
- इस योजना को एम.एफ.पी. इकट्ठा करने वालों की आजीविका में सुधार के लिए एक सामाजिक सुरक्षा जाल के रूप में डिजाइन किया गया है, जो उन्हें एकत्रित किए गए एम.एफ.पी. के लिए उचित मूल्य प्रदान करती है।

योजना का उद्देश्य

- उनके द्वारा एकत्र की गई उपज के लिए एम.एफ.पी. इकट्ठा करने वालों को उचित मूल्य प्रदान करना और उनकी आय का स्तर बढ़ाना
- एम.एफ.पी. की सतत कटाई को सुनिश्चित करना
- इस योजना में एम.एफ.पी. इकट्ठा करने वालों के लिए एक विशाल सामाजिक लाभांश होगा, जिनमें से अधिकांश आदिवासी हैं।

कार्यान्वयन

- यह योजना भारत के संविधान की पांचवीं अनुसूची में सूचीबद्ध अनुसूचित क्षेत्रों वाले आठ राज्यों में लागू की गई है।
- योजना के कार्यान्वयन हेतु भारत सरकार का जनजातीय मामलों का मंत्रालय नोडल मंत्रालय है।
- नवंबर, 2016 से यह योजना सभी राज्यों में लागू है।
- राज्य स्तर की कार्यान्वयन एजेंसियों के माध्यम से योजना के कार्यान्वयन और निगरानी के लिए ट्राइफेड, केंद्रीय नोडल एजेंसी के रूप में कार्य करता है।
- इसके अतिरिक्त, राज्य नामित एजेंसियां पूर्वनिर्मित न्यूनतम समर्थन मूल्य पर जमीनी स्तर पर अधिसूचित खरीद केंद्रों पर एम.एफ.पी. संग्रहकर्ताओं से सीधे अधिसूचित एम.एफ.पी. की खरीद का कार्य करेंगी।

अप्रमुख वन उपज के अंतर्गत आने वाली वस्तुओं की सूची

न्यूनतम समर्थन मूल्य योजना में निम्नलिखित गैर-राष्ट्रीयकृत/ गैर-एकाधिकार वाले एम.एफ.पी. शामिल हैं।

- लगभग पचास वस्तुएं इस सूची में शामिल हैं:

इमली (बीज सहित), जंगली शहद, गोंद कराया, करंज के बीज, साल बीज, महुआ के बीज, साल के पत्ते, बीजों के साथ चिरौंजी की फली, आंवला, लाख, कुसुम के बीज, नीम के बीज, पुवाड के बीज, बहेड़ा, हिल ब्रूम ग्रास, सूखी शिकाकाई फली, बेल का गूदा (सूखा), नागरमोथा, शतावरी की जड़ (सूखे), गुड़मार/ मधुनाशिनी, कालमेघ, इमली (बीजरहित), गुग्गुल, महुए के फूल (सूखे हुए), तेजपत्ता (सूखे हुए), जामुन के सूखे बीज, सूखे आंवला

गूदा (बीजरहित), अंकन नट, साबुन नट (सूखे), भावा बीज (अमलतास), अर्जुन छाल, कोकम (सूखा), गिलोय, कौंच बीज, चिरायता, वायुबिडिंग/वावदिंग (सूखे बीज), धवाईफूल (सूखे बीज) फूल, नक्स वोमिका, बान तुलसी की पत्तियां (सूखी), क्षीरनी, बकुल (सूखे छाल), कुटज (सूखे छाल), नोनी/ आल (सूखे फल), सोनापाठा/ स्योनक की फली, चनोठी के बीज, कलिहारी (सूखे कंद), मकोई (सुखाया हुआ), अपंग पौधा, सुगंधमन्त्री जड़/ कंद हैं।

नोट: उपर्युक्त सूची में एक नज़र डालना ज़रूरी है क्यों कि यू.पी.एस.सी. कभी-कभी एम.एस.पी. में शामिल वस्तुओं पर प्रश्न पूंछ लेता है।

टॉपिक- जी.एस. पेपर 2- गवर्नेंस

स्रोत- पी.आई.बी.

युक्ति पोर्टल

खबरों में क्यों है?

- केंद्रीय मानव संसाधन विकास मंत्री ने नई दिल्ली में एक वेब-पोर्टल YUKTI (युक्ति) (यंग इंडिया कॉम्बैटिंग कोविड विद नॉलेज, टेक्नोलॉजी एंड इनोवेशन) लॉन्च किया है।

युक्ति पोर्टल के संदर्भ में जानकारी

- यह कोविड-19 के मद्देनजर मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा शिक्षाविदों, अनुसंधान और सामाजिक पहलों में पहलों की निगरानी करने के लिए एक अद्वितीय पोर्टल और डैशबोर्ड है।
- यह पोर्टल इन चुनौतीपूर्ण समय में छात्रों की पदोन्नति नीतियों, प्लेसमेंट संबंधी चुनौतियों और छात्रों के शारीरिक और मानसिक कल्याण से संबंधित महत्वपूर्ण मुद्दों में मदद करेगा।

- यह पोर्टल विभिन्न संस्थानों को कोरोनोवायरस के कारण विभिन्न चुनौतियों के लिए अपनी रणनीतियों को साझा करने की भी अनुमति देगा।
- यह मानव संसाधन विकास मंत्रालय और संस्थानों के बीच दो-तरफ़ा संचार चैनल भी स्थापित करेगा जिससे कि मंत्रालय, संस्थानों को आवश्यक सहायता प्रणाली प्रदान कर सके।

टॉपिक- जी.एस. पेपर 2-गवर्नेंस

स्रोत- द हिंदू

लॉकडाउन के अंतर्गत रेड, ऑरेंज और ग्रीन जोन

खबरों में क्यों है?

- केंद्र सरकार के लॉकडाउन की प्रस्तावित विस्तारित अवधि के दौरान कोविड-19 मामलों की संख्या के आधार पर देश को रेड, ऑरेंज और ग्रीन जोन में वर्गीकृत करने की संभावना है।

इन जोन को इस प्रकार समझाया जा सकता है:

- **रेड जोन:** यह एक ऐसा क्षेत्र है जहां एक बड़ी संख्या में मामलों का पता लगाया गया है या ऐसे क्षेत्र जिन्हें हॉटस्पॉट घोषित किया गया था।
- रेड जोन में किसी भी गतिविधि की अनुमति नहीं दी जाएगी।
- **ऑरेंज जोन**
- यह एक ऐसा क्षेत्र है, जहां अतीत में केवल कुछ मामलों का पता चला था, जहां मामलों की संख्या में कोई वृद्धि नहीं हुई है।
- इन क्षेत्रों में, सीमित सार्वजनिक परिवहन खोलने, ऑरेंज जोन में कृषि उत्पादों की कटाई की अनुमति जैसी न्यूनतम गतिविधियों की अनुमति प्रदान की जाएगी।
- **ग्रीन जोन**
- यह एक ऐसा क्षेत्र है, जहाँ वायरल फैलने से संबंधित कोई भी मामला नहीं है।
- इस क्षेत्र में अधिक छूट प्रदान की जाएगी जैसे कि एम.एस.एम.ई. उद्योगों को सामाजिक दूरी के उचित रखरखाव के साथ कर्मचारियों के लिए घर में रहने की सुविधा के साथ काम करने की अनुमति दी जाएगी।

टॉपिक- जी.एस. पेपर 2- गवर्नेंस

स्रोत- एच.टी.

बाजार हस्तक्षेप योजना (एम.आई.एस.)

खबरों में क्यों है?

- केंद्र सरकार ने राज्य सरकारों से बाजार हस्तक्षेप योजना (एम.आई.एस.) के अंतर्गत किसानों से खराब होने वाली कृषि और बागवानी वस्तुओं की खरीद करने के लिए कहा है।

बाजार हस्तक्षेप योजना के संदर्भ में जानकारी

- जैसा कि नाम से पता चलता है, एम.आई.एस., एक गैर-योजनाबद्ध योजना है, जिसे राज्य सरकारों के अनुरोध पर लागू किया गया है।
- एम.आई.एस., एक अनौपचारिक योजना है, जिसके अंतर्गत उन बागवानी वस्तुओं और अन्य कृषि वस्तुओं को शामिल किया जाता है जो खराब हो जाती हैं और जो न्यूनतम मूल्य समर्थन योजना के अंतर्गत शामिल नहीं हैं।
- यह बाजार मूल्य में गिरावट की स्थिति में खराब होने वाली और बागवानी वस्तुओं की खरीद के लिए लागू मूल्य समर्थन तंत्र है।
- बाजार हस्तक्षेप योजना, खाद्यान्न के लिए न्यूनतम समर्थन मूल्य आधारित खरीद तंत्र के समान काम करती है, लेकिन एक अनौपचारिक तंत्र है।

एम.आई.एस. का उद्देश्य:

- चरम आगमन अवधि के दौरान जब कीमतें आर्थिक स्तर और उत्पादन लागत से नीचे आती हैं तब बंपर फसल होने की स्थिति में अपनी वस्तुओं के उत्पादकों की संकटपूर्ण बिक्री से सुरक्षा करने हेतु बाजार में हस्तक्षेप करना है।

मुख्य विशेषताएं

- यह योजना तब लागू की जाती है जब उत्पादन में पिछले सामान्य वर्ष की तुलना में कम से कम 10% की वृद्धि या सत्तारूढ़ दरों में 10% की कमी होती है।
- कृषि एवं सहकारिता विभाग योजना को लागू कर रहा है।
- एम.आई.एस. के दिशानिर्देशों के अनुसार, नुकसान का केंद्रीय हिस्सा राज्य सरकारों/ संघ राज्य क्षेत्रों को जारी किया जाता है, जिसके लिए उनसे प्राप्त विशिष्ट प्रस्तावों के आधार पर एम.आई.एस. को मंजूरी प्रदान की गई है।
- एक निश्चित बाजार हस्तक्षेप मूल्य (एम.आई.पी.) पर एक पूर्व निर्धारित मात्रा की खरीद भारतीय राष्ट्रीय कृषि सहकारी विपणन संघ लिमिटेड (एन.ए.एफ.ई.डी.) द्वारा की जाती है।
- इसके अतिरिक्त, साझा किए गए नुकसान की कुल राशि का हिस्सा, कुल खरीद मूल्य के 25% तक सीमित है, जिसमें खरीदी गई वस्तु की लागत के साथ ही स्वीकृत ऊपरी खर्च भी शामिल है।
- एक निश्चित अवधि के लिए या मूल्य के उपर्युक्त एम.आई.पी. के स्थिर होने तक केंद्रीय एजेंसी और राज्य सरकार द्वारा नामित एजेंसी के रूप में एन.ए.एफ.ई.डी. हैं, इनमें से जो अवधि पहले हो।
- परिचालन का क्षेत्र, केवल संबंधित राज्य तक ही सीमित है।

एम.आई.एस. का लाभ उठाने हेतु पात्रता

- नुकसान की राशि केंद्र सरकार और राज्य सरकार (पूर्वोत्तर राज्यों के मामले में 75:25 आधार पर) के बीच 50:50 के आधार पर साझा की जाती है और कुल खरीद मूल्य के 25% तक सीमित है।
- दूसरे शब्दों में, राज्य/ केंद्रशासित प्रदेश (यू.टी.) सरकार के विशिष्ट अनुरोध पर एम.आई.एस. के प्रस्ताव को मंजूरी प्रदान की जाती है, यदि राज्य/ केन्द्र शासित प्रदेश सरकार 50% हानि (पूर्वोत्तर राज्यों के मामले में 25%) वहन करने के लिए तैयार है, यदि कोई हो, तो इसके कार्यान्वयन पर किया जाएगा।

एम.आई.एस. के अंतर्गत शामिल की गई वस्तुएं

- वस्तुओं के संदर्भ में एम.आई.एस. लागू किया गया है:
  सेब, किन्नू/ माल्टा, लहसुन, संतरे, गलगल, अंगूर, मशरूम, लौंग, काली मिर्च, अनानास, अदरक, लाल-मिर्च, धनिया बीज, इसबगोल, कासनी, प्याज, आलू, गोभी, सरसों, अरंडी के बीज, कोपरा, ताड़ का तेल आदि
- राज्य/ संघ राज्य क्षेत्र, जहां एम.आई.एस. लागू किया गया है:
  हिमाचल प्रदेश, हरियाणा, पंजाब, आंध्र प्रदेश, महाराष्ट्र, कर्नाटक, राजस्थान, गुजरात, केरल, जम्मू और कश्मीर, मिजोरम, सिक्किम, मेघालय, त्रिपुरा, उत्तर प्रदेश, पश्चिम बंगाल, मध्य प्रदेश, अंडमान और निकोबार द्वीप समूह, लक्षद्वीप आदि

तुलनात्मक पहलू

विवरण	न्यूनतम समर्थन मूल्य	बाजार हस्तक्षेप योजना
शामिल वस्तुएं	निश्चित, वर्तमान में 24	निश्चित नहीं है
विनियमितता	नियमित रूप से प्रत्येक वर्ष घोषणा की जाती है	नियमित नहीं है लेकिन अनौपचारिक है
समर्थन मूल्य	सी.ए.सी.पी. की सिफारिश पर भारत सरकार द्वारा निर्धारित किया गया है	केंद्र या राज्य सरकार द्वारा निर्धारित है
प्रयोज्यता	पूरे देश में	राज्य के निर्दिष्ट सीमित बाजार
संचालन का समय	पूरे वर्ष	विशिष्ट समय
नुकसान की घटना, यदि कोई है तो	केंद्र सरकार द्वारा वहन	केंद्र और राज्य सरकार द्वारा समान रूप से साझा किया जाता है
लागू करने हेतु आवश्यक ढांचा	बड़े पैमाने पर	सीमित पैमाने पर

टॉपिक- जी.एस. पेपर 2- गवर्नेंस

स्रोत- पी.आई.बी.

ए.टी.एल. स्कूलों में कोलैबकैड (CollabCAD) लांच किया गया है।

खबरों में क्यों है?

- हाल ही में, अटल नवाचार मिशन, नीति आयोग और राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केंद्र (एन.आई.सी.) ने संयुक्त रूप से CollabCAD का शुभारंभ किया है।

CollabCAD के संदर्भ में जानकारी

- यह एक सहयोगी नेटवर्क, कंप्यूटर सक्षम सॉफ्टवेयर सिस्टम है, जो द्विविमीय ड्राफ्टिंग और विवरण से त्रिविमीय उत्पाद डिजाइन तक कुल इंजीनियरिंग समाधान प्रदान करता है।
- इस पहल का उद्देश्य रचनात्मकता और कल्पना के मुक्त प्रवाह के साथ त्रिविमीय डिजाइन बनाने और संशोधित करने के लिए देश भर में अटल टिंकरिंग लैब्स (ए.टी.एल.) के छात्रों को एक शानदार मंच प्रदान करना है।
- यह सॉफ्टवेयर छात्रों को नेटवर्क में डेटा बनाने और भंडारण और विज़ुअलाइज़ेशन के लिए समान डिज़ाइन डेटा तक पहुंचने में भी सक्षम करेगा।

अटल नवाचार मिशन के संदर्भ में जानकारी

- नीति आयोग में गठित अटल नवाचार मिशन, नवाचार और उद्यमिता की संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए भारत सरकार की प्रमुख पहल है।
- स्कूल स्तर पर, ए.आई.एम. पूरे भारत में सभी जिलों में ए.टी.एल. की स्थापना कर रही है।

- पूरे भारत में स्थापित ए.टी.एल. अपने अभिनव विचारों और रचनात्मकता को रखने के लिए बच्चों को टिंकरिंग स्पेस प्रदान करते हैं।

टॉपिक- जी.एस. पेपर 2- गवर्नेंस

स्रोत- द हिंदू

सामरिक पेट्रोलियम भंडार

खबरों में क्यों है?

- पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस मंत्रालय ने घरेलू सार्वजनिक क्षेत्र के रिफाइनरों को वैश्विक तेल की कम कीमत के कारण अपनी तेल खरीद के भंडारण के लिए सामरिक पेट्रोलियम भंडार (एस.पी.आर.) का उपयोग करने की अनुमति प्रदान की है।

उद्देश्य

- ये तेल भंडार, राष्ट्र की ऊर्जा सुरक्षा को बढ़ावा देते हैं क्योंकि वे कच्चे तेल की कीमतों में अस्थिरता के खिलाफ एक प्रतिरोधी के रूप में कार्य करते हैं।

सामरिक पेट्रोलियम भंडार के संदर्भ में जानकारी

- यह आपातकालीन कच्चे तेल की राष्ट्रीय आपूर्ति है, जिसे मुख्य रूप से आपूर्ति में व्यवधान के प्रभाव को कम करने के लिए स्थापित किया गया है।
- सामरिक पेट्रोलियम भंडार (एस.पी.आर.) के निर्माण और रखरखाव की जिम्मेदारी भारतीय सामरिक पेट्रोलियम भंडार लिमिटेड (आई.एस.पी.आर.एल.) को प्रदान की गई है।

भारतीय सामरिक पेट्रोलियम भंडार लिमिटेड के संदर्भ में जानकारी

- यह देश के रणनीतिक पेट्रोलियम भंडार के रखरखाव हेतु जिम्मेदार है।
- आई.एस.पी.आर.एल., तेल उद्योग विकास बोर्ड (ओ.आई.डी.बी.) की पूर्ण स्वामित्व वाली सहायक कंपनी है, जो पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस मंत्रालय के प्रशासनिक नियंत्रण में काम करती है।

सामरिक पेट्रोलियम भंडार की पृष्ठभूमि

- वर्ष 1990 में प्रथम खाड़ी युद्ध के कारण, अंतर्राष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल की कीमतें बहुत अधिक थीं, जिसके कारण भारत के विदेशी मुद्रा भंडार में गिरावट आई है और भारत के पास केवल तीन सप्ताह के आयात बिल का भुगतान करने के लिए ($ 1.2 बिलियन) विदेशी मुद्रा आरक्षित बची थी।
- भारत सरकार ने इस घटना से एक नया सबक सीखा था।
- इस समस्या का दीर्घकालिक समाधान प्राप्त करने हेतु सरकार ने वर्ष 1998 में भारत में तेल भंडार बनाने का विचार दिया था।

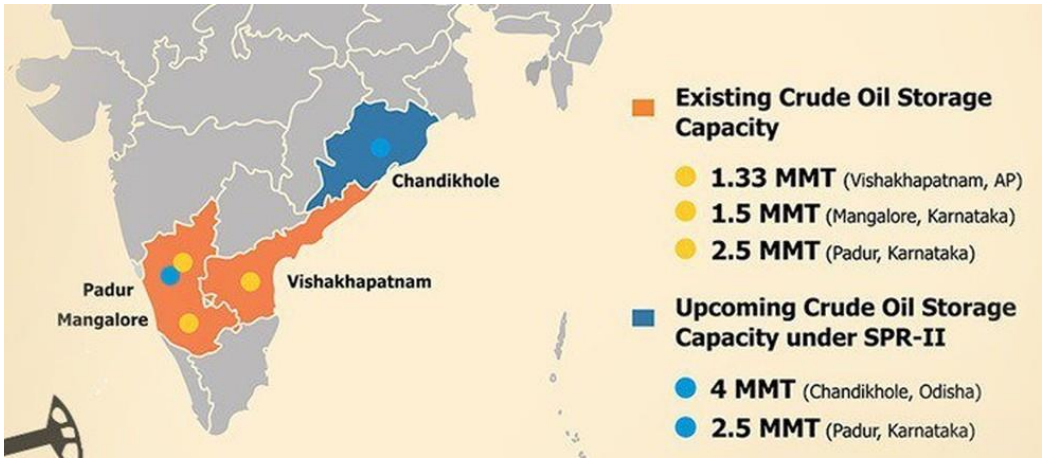

भारतीय पेट्रोलियम भंडार के स्थान

- भारत में सामरिक पेट्रोलियम भंडार कार्यक्रम, कई चरणों में विकसित किया जा रहा है।
- पहले चरण में, सामरिक तेल भंडार मंगलोर (1.55 एम.एम.टी., कर्नाटक), पाडुर (2.5 एम.एम.टी., कर्नाटक) और विशाखापत्तनम (1.33 एम.एम.टी., ओडिशा) में बनाया गया है।
- इसकी कुल भंडारण क्षमता 5.33 मिलियन मिट्रिक टन है।
- द्वितीय चरण में, चंडीखोल (ओडिशा) और उदुपी (कर्नाटक) में दो अन्य भूमिगत भंडार विकसित किए जाएंगे, जो 6.5 मिलियन मिट्रिक टन की अतिरिक्त भंडारण क्षमता प्रदान करेंगे। यह 12 दिनों के राष्ट्रीय उपभोग की मात्रा होगी।

भारत को सामरिक पेट्रोलियम भंडार की आवश्यकता क्यों है?

- भारत, कच्चे तेल और प्राकृतिक गैस के सबसे बड़े आयातकों और उपभोक्ताओं में से एक है।
- इस कारण से, भारत, वैश्विक तेल के झटके की चपेट में है, जो आर्थिक, राजनीतिक या प्राकृतिक किसी भी कारण से हो सकता है।
- वर्ष 1990 में, खाड़ी युद्ध ने भारत में एक ऊर्जा संकट पैदा किया था, जो उस समय था जब भारत का तेल भंडार केवल तीन दिनों के लिए पर्याप्त था।
- वर्ष 2030 तक 40% बिजली उत्पादन के लिए गैर-जीवाश्म ईंधन-आधारित संसाधनों पर निर्भर होने की प्रतिबद्धता के बावजूद जीवाश्मों पर भारत की निर्भरता जल्द ही नीचे जाती हुई दिखाई नहीं दे रही है।

नोट: संयुक्त राज्य अमेरिका, चीन और जापान सबसे बड़े वैश्विक सामरिक पेट्रोलियम भंडार वाले राष्ट्र हैं।

टॉपिक- जी.एस. पेपर 2- गवर्नेंस

स्रोत- पी.आई.बी.

पर्यावरण प्रभाव मूल्यांकन (ई.आई.ए.) में संशोधन

खबरों में क्यों है?

- कोविड-19 के खिलाफ विभिन्न दवाओं की उपलब्धता/ उत्पादन में तेजी लाने के लिए, पर्यावरण मंत्रालय ने पर्यावरण प्रभाव मूल्यांकन (ई.आई.ए.) अधिसूचना, 2006 में संशोधन किया है।

संशोधनों की मुख्य विशेषताएं

- विभिन्न बीमारियों को संबोधित करने के लिए निर्मित बल्क ड्रग्स और इंटरमीडिएट के संबंध में सभी परियोजनाओं या गतिविधियों मौजूदा श्रेणी 'ए' से 'बी 2' श्रेणी में पुन: वर्गीकृत किया गया है।
- श्रेणी बी2 के अंतर्गत आने वाली परियोजनाओं को आधारभूत डेटा, ई.आई.ए. अध्ययन और सार्वजनिक परामर्श के संग्रह की अनिवार्यता से छूट प्राप्त होती है।
- इस तरह के प्रस्तावों का पुन: वर्गीकरण प्रक्रिया को तेजी से ट्रैक करने के लिए राज्य स्तर पर मूल्यांकन के विकेंद्रीकरण की सुविधा के लिए किया गया है।
- यह संशोधन 30 सितंबर, 2020 तक प्राप्त सभी प्रस्तावों पर लागू होता है।

ई.आई.ए. में हुए महत्वपूर्ण प्रक्रियात्मक परिवर्तन क्या हैं?

- **स्क्रीनिंग**: यह परियोजना में पहली और सबसे स्पष्ट प्रक्रिया है जिसे ई.आई.ए. की अनिवार्यता नहीं है।
- **पहचान**: एक परियोजना आई.डी. परिभाषित की जाएगी और पहचानी जाएगी, परियोजना की पहुंच से लेकर सभी पहलुओं पर ध्यान दिया जाता है। ऐसा करने से, पर्यावरणीय प्रभावों के संभावित क्षेत्र पर विचार किया जाता है।
- **व्यापकता**: प्रारंभिक मूल्यांकन के बाद, डेवलपर, निवेशकों और विनियामक निकायों के साथ चर्चा की जाती है और मुद्दों का तत्परतापूर्वक समाधान किया जाता है।
- **प्रभाव की भविष्यवाणी:** गुणात्मक और मात्रात्मक दोनों प्रभावों पर विचार किया जाता है, जैसे वायु गुणवत्ता में परिवर्तन, शोर का स्तर, वन्य जीवन पर प्रभाव, जैव विविधता पर प्रभाव, स्थानीय समुदायों पर प्रभाव आदि हैं।
- **शमन:** परियोजना के विषय में यदि कोई हो तो नकारात्मक प्रभाव दूर करने और व्यापकता बढ़ाने हेतु उपाय किए जाते हैं। यह निवारक, सुधारात्मक और प्रतिपूरक साधनों में किया जाता है।

- **समीक्षा:** विस्तृत परियोजना रिपोर्ट और उसमें भरी गई प्रश्नावली, उचित देखभाल के साथ ध्यान में रखी गई है।

टॉपिक- जी.एस. पेपर 2- गवर्नेंस

स्रोत- पी.आई.बी.

राष्ट्रीय कानूनी सेवा प्राधिकरण

खबरों में क्यों है?

- राष्ट्रीय कानूनी सेवा प्राधिकरण (एन.ए.एल.एस.ए.) ने कोविड-19 महामारी के बाद जेलों में भीड़ कम करने के लिए एक मिशन के भाग के रूप में देश भर की जेलों से लगभग 11,077 कैदियों को रिहा किया गया है।

एन.ए.एल.एस.ए. के संदर्भ में जानकारी

- यह समाज के कमजोर वर्गों को मुफ्त कानूनी सेवाएं प्रदान करने के लिए कानूनी सेवा प्राधिकरण अधिनियम, 1987 के अंतर्गत गठित किया गया है। इसका उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि आर्थिक या अन्य विकलांग कारणों से किसी भी नागरिक को न्याय हासिल करने के अवसरों से वंचित नहीं किया जाना चाहिए।

संरचना

- कानूनी सेवा प्राधिकरण अधिनियम की धारा 3 (2) के अनुसार, भारत के मुख्य न्यायाधीश, प्रमुख संरक्षक होंगे।
- भारत के सर्वोच्च न्यायालय के दूसरे वरिष्ठतम न्यायाधीश, कार्यकारी अध्यक्ष हैं।

टॉपिक- जी.एस. पेपर 2- गवर्नेंस

स्रोत- द हिंदू

फिट इंडिया सक्रिय दिवस कार्यक्रम

खबरों में क्यों है?

- फिट इंडिया और सी.बी.एस.ई. लॉकडाउन के दूसरे चरण में स्कूली छात्रों के लिए पहली बार लाइव फिटनेस सत्र आयोजित करेगा।
- लाइव सत्र में दैनिक वर्कआउट से लेकर योग, पोषण और भावनात्मक कल्याण तक बच्चों की फिटनेस के सभी पहलुओं को शामिल करेगा।

फिट इंडिया अभियान के संदर्भ में जानकारी

- इसे युवा मामलों और खेल मंत्रालय द्वारा 2019 में लोगों के रोजमर्रा के जीवन में शारीरिक गतिविधि और खेल को प्रोत्साहित करने के लिए शुरू किया गया था।
- फिट इंडिया, भारत सरकार का प्रमुख फिटनेस अभियान है, इसने फिट इंडिया सक्रिय दिवस कार्यक्रम शुरू किया है।
- फिट इंडिया, केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सी.बी.एस.ई.) के साथ मिलकर स्कूली छात्रों के लिए एक लाइव सत्र आयोजित कर रहा है, जो फिटनेस सत्रों की एक नई श्रृंखला है।

- ऑनलाइन पाठ 15 अप्रैल, 2020 को सुबह 9.30 बजे शुरू होते हैं और यह फिट इंडिया और सी.बी.एस.ई. के फेसबुक और इंस्टाग्राम हैंडल के साथ-साथ यूट्यूब पर भी उपलब्ध होंगे।
- कार्यक्रम के दौरान आयुष मंत्रालय के स्वस्थ रहने के दिशा निर्देशों को छात्रों के साथ साझा किया गया है।
- इन पाठों में दैनिक वर्कआउट और योग, पोषण और भावनात्मक कल्याण पर जानकारी शामिल है।

टॉपिक- जी.एस. पेपर 2- गवर्नेंस

स्रोत- ए.आई.आर.

किसान रथ मोबाइल ऐप

खबरों में क्यों है?

- हाल ही में, कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय ने लॉकडाउन के दौरान खाद्यान्न और खराब होने वाली सामग्री के परिवहन की सुविधा के लिए किसान रथ मोबाइल ऐप लॉन्च किया है।

किसान रथ मोबाइल ऐप के संदर्भ में जानकारी

- यह मोबाइल एप्लिकेशन, राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केंद्र द्वारा विकसित किया गया है जिससे कि यह सुनिश्चित किया जा सके कि किसानों और व्यापारियों को कृषि और बागवानी उत्पादन के लिए परिवहन मिल सके।
- यह देश में किसानों, एफ.पी.ओ. और सहकारी समितियों को फार्म गेट से बाजारों तक अपनी कृषि उपज को स्थानांतरित करने के लिए एक उपयुक्त परिवहन सुविधा खोजने का विकल्प प्रदान करेगा।
- यह ऐप किसानों और व्यापारियों को कृषि और बागवानी उत्पादों की आवाजाही के लिए प्राथमिक और द्वितीयक परिवहन के लिए परिवहन वाहनों की तलाश करने की सुविधा प्रदान करेगा।

a. प्राथमिक परिवहन में खेत से लेकर मंडियों, खाद्य उत्पादन संग्रह केंद्र और गोदामों तक आवाजाही शामिल हैं।

b. द्वितीयक परिवहन में मंडियों से लेकर अंतरा-राज्य और अंतर-राज्य मंडियों, प्रसंस्करण इकाइयों, रेलवे स्टेशन, गोदामों और थोक विक्रेताओं तक आवाजाही शामिल होगी।

ऐप की कार्य प्रणाली की मुख्य विशेषताएं

- किसान, एफ.पी.ओ., खरीदार/ व्यापारी परिवहन की आवश्यकता को दर्ज करा सकेंगे, जो बाजार में परिवहन एग्रीगेटर्स को प्रचारित किया जाएगा।
- परिवहन एग्रीगेटर तब प्रतिस्पर्धी बोली प्राप्त करने के लिए ट्रक ड्राइवरों और बेड़े मालिकों के साथ इंटरफेस करेंगे।
- फिर ट्रक ड्राइवरों द्वारा दी गई बोली कंसाइनर (प्रेषक) को वापस भेजी जाएगी।
- कंसाइनर प्रत्यक्ष रूप से ट्रक वाले से ऑफ़लाइन बातचीत करेगा और सौदे को अंतिम रूप देगा।
- कंसाइनर अपनी प्रतिक्रिया भी साझा कर सकते हैं और ऐप पर ट्रक ड्राइवरों को रेटिंग दे सकते हैं।
- ये रेटिंग भविष्य में रसद सेवा प्रदाताओं की चयन प्रक्रिया में कंसाइनरों की मदद करेगी।

टॉपिक- जी.एस. पेपर 2- गवर्नेंस

स्रोत- ए.आई.आर.

A, E, I, O, U: एक नया व्यापार और कार्य संस्कृति

खबरों में क्यों है?

- प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने लिंक्डइन पर अपने पोस्ट के साथ इस बात पर जोर दिया है कि नए व्यापार और कार्य संस्कृति को स्वरों A, E, I, O, U पर फिर से परिभाषित किया जाना चाहिए, जो कोविड के बाद की दुनिया में किसी भी व्यवसाय मॉडल के आवश्यक तत्व बन जाएंगे।

- A, E, I, O, U का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है:

  A - अनुकूलता

  ई - दक्षता

  आई- समावेशिता

  ओ- अवसर

  यू- सार्वभौमिकता

- उन्होंने ऐसे व्यावसायिक मॉडल विकसित करने की आवश्यकता पर भी जोर दिया है जो गरीबों, सबसे कमजोर के साथ ही ग्रह की देखभाल के लिए प्रधानता देते हैं।

a) **अनुकूलता:** इस समय की आवश्यकता ऐसे व्यवसाय और जीवनशैली मॉडल के बारे में सोचना है, जो आसानी से अनुकूलनीय हैं। डिजिटल भुगतान को सम्मिलित अनुकूलनशीलता का एक प्रमुख उदाहरण है। दुकान के मालिकों को बड़े और छोटे डिजिटल उपकरणों में निवेश करना चाहिए जो वाणिज्य से जुड़े रहते हो, विशेष रूप से संकट के समय में व्यवसाय से जुड़े रहते हों।

- भारत, पहले से ही डिजिटल लेनदेन में उत्साहजनक वृद्धि देख रहा है। एक अन्य उदाहरण टेलीमेडिसिन है- जिसमें वास्तविकता में क्लिनिक या अस्पताल जाए बिना कई परामर्श लिए जा सकते हैं।

b) **दक्षता (ई):** यह समय इसके बारे में सोचने का समय है जिसे हम कुशल होने के रूप में संदर्भित करते हैं। दक्षता केवल के बारे में नहीं हो सकती कि कार्यालय में कितना समय बिताया गया है। कार्य को निर्दिष्ट समय सीमा में पूरा करने पर जोर दिया जाना चाहिए।

c) **समावेशिता (I):** ऐसे व्यवसाय मॉडल विकसित करें जो गरीबों, सबसे कमजोर के साथ ग्रह की देखभाल करने पर प्रधानता देते हैं। विकासशील प्रौद्योगिकियों और प्रथाओं में एक महत्वपूर्ण भविष्य है जो ग्रह पर हमारे प्रभाव को कम करता है। नवाचारों में निवेश के साथ यह सुनिश्चित करने की आवश्यकता है कि किसानों के पास सूचना, मशीनरी और बाजारों तक पहुंच होनी चाहिए, यह मायने नहीं रखता है कि स्थिति क्या है, हमारे नागरिकों के पास आवश्यक वस्तुओं की पहुंच होनी चाहिए।

d) **अवसर (O):** प्रत्येक संकट अपने साथ एक अवसर लाता है। कोविड-19 भी अलग नहीं है। मूल्यांकन करें कि अब नए अवसर/ विकास क्षेत्र क्या हो सकते हैं, जो अब उभर रहे हैं।

भारत को कोविड के बाद की दुनिया में वक्र से आगे होना चाहिए। हमारे कौशल निर्धारित करते हैं, ऐसा करने में हमारी मुख्य क्षमताओं का उपयोग किया जा सकता है।

e) **सार्वभौमिकता (U):** कोविड-19 हमला करने से पहले जाति, धर्म, रंग, जाति, पंथ, भाषा या सीमा को नहीं देखता है। इसके बाद की प्रतिक्रिया और आचरण को एकता और भाईचारे के लिए प्रधानता प्रदान करनी चाहिए।

टॉपिक- जी.एस. पेपर 2-गवर्नेंस

स्रोत- पी.आई.बी.

राष्ट्रीय वैक्सीन टास्क फोर्स

खबरों में क्यों है?

- हाल ही में, केंद्र सरकार ने वैक्सीन विकास और ड्रग परीक्षण पर एक अन्य राष्ट्रीय टास्क फोर्स का गठन किया है।

कार्य

- इस टास्क फोर्स का मुख्य कार्य दवा परीक्षण और वैक्सीन विकास के क्षेत्र में शिक्षा, अनुसंधान संस्थानों और अंतर्राष्ट्रीय सहयोग के बीच एक सेतु के रूप में काम करना होगा।
- यह टास्क फोर्स बीमारी की बेहतर समझ के लिए लोगों के दीर्घकालिक अनुवर्ती पर केंद्रित नैदानिक साथी बनाएगी।
- यह जैव-नमूने भी एकत्र करेगी, जो दवाओं और टीकों के भविष्य के परीक्षणों का आधार बनेगी। जैव प्रौद्योगिकी विभाग (डी.बी.टी.) टास्क फोर्स के केंद्रीय समन्वय प्राधिकरण के रूप में काम करता है।
- डी.बी.टी., अनुसंधान कार्यों की प्रगति की निगरानी भी करेगा और प्रक्रिया को सुविधाजनक बनाएगा।

सदस्य

- टास्क फोर्स में सदस्य के रूप में आयुष मंत्रालय (आयुर्वेद, योग और प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्ध और होम्योपैथी) के प्रतिनिधि शामिल हैं।
- अन्य सदस्य भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद (आई.सी.एम.आर.), विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग (डी.एस.टी.), जैव प्रौद्योगिकी विभाग (ड.बी.टी.), वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सी.एस.आई.आर.), रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डी.आर.डी.ओ.), स्वास्थ्य सेवा महानिदेशालय (डी.जी.एच.एस.) और भारतीय औषधि नियंत्रक महानिदेशक (डी.सी.जी.आई.) हैं।

टॉपिक- जी.एस. पेपर 2- गवर्नेंस

स्रोत- पी.आई;बी.

ई-शिक्षण सामग्री योगदान को आमंत्रित करने हेतु विद्यादान 2.0

खबरों में क्यों है?

- मानव संसाधन एवं विकास मंत्री ने नई दिल्ली में ई-शिक्षण सामग्री योगदान को आमंत्रित करने के लिए एक राष्ट्रीय कार्यक्रम विद्यादान 2.0 शुरू किया है।

विद्यादान के संदर्भ में जानकारी

- ई-शिक्षण सामग्री को विकसित करने और योगदान देने हेतु और राष्ट्रीय स्तर पर मान्यता प्राप्त करने हेतु एक सामान्य राष्ट्रीय कार्यक्रम है।
- यह देश भर के व्यक्तियों और संगठनों के लिए एक मंच प्रदान करता है, जो गुणवत्तापूर्ण शिक्षण की निरंतरता सुनिश्चित करने के लिए स्कूल और उच्च शिक्षा दोनों के लिए ई-शिक्षण संसाधनों का योगदान देता है।
- देश भर के लाखों बच्चों की मदद करने हेतु इस सामग्री का उपयोग दीक्षा ऐप पर किया जाता है, जिससे कि उनके शिक्षण को किसी भी समय और कहीं भी निरंतर जारी रखा जा सके।

दीक्षा- राष्ट्रीय शिक्षक मंच के संदर्भ में जानकारी

- मंत्रालय का दीक्षा प्लेटफ़ॉर्म वर्ष 2017 से 30 से अधिक राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के साथ काम कर रहा है, जो शिक्षण और अधिगम की प्रक्रियाओं को बढ़ाने के लिए दीक्षा का लाभ उठा रहा है।

राष्ट्रीय शिक्षक मंच निम्नलिखित प्रदान करने की परिकल्पना करता है:

- शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम (उदाहरण- अधिगम परिणामों, सी.सी.ई. आदि पर प्रशिक्षण)
- पाठ योजना, अवधारणा वीडियो, वर्कशीट, पाठ्यक्रम के अनुसार मानचित्रित किए जाते हैं
- शिक्षकों का मूल्यांकन, उनकी क्षमता और सुधार के क्षेत्रों का पता लगाने के लिए किया जाता है।
- शिक्षक इस सामग्री को अपने स्मार्टफोन, टैबलेट और अन्य उपकरणों पर ऑफ़लाइन कभी भी और कहीं भी एक्सेस कर सकेंगे।
- सामग्री को स्थानीय भाषाओं में अवधारणा करने के साथ-साथ पाठ्यक्रम में भी मानचित्रित किया जाएगा।

टॉपिक-जी.एस. पेपर 2- गवर्नेंस

स्रोत- पी.आई.बी.

मंत्रिमंडल ने पोषक तत्व आधारित सब्सिडी दरों के निर्धारण को मंजूरी प्रदान की है।

खबरों में क्यों है?

- हाल ही में, आर्थिक मामलों की मंत्रिमंडलीय समिति ने वर्ष 2020-21 के लिए फॉस्फेटिक और पोटैसिक (पी एंड के) उर्वरकों के लिए पोषक तत्व आधारित सब्सिडी (एन.बी.एस.) दरों के निर्धारण के लिए अपनी मंजूरी प्रदान की है।

एन.बी.एस. योजना में नया जुड़ाव

- हाल ही में, सी.सी.ई.ए. ने एन.बी.एस. योजना के अंतर्गत अमोनियम फॉस्फेट (एन.पी. 14:28:0:0) नामक एक जटिल उर्वरक को शामिल करने की मंजूरी दी है।

पोषक तत्व आधारित सब्सिडी योजना के संदर्भ में जानकारी

- उर्वरकों के लिए पोषक तत्व आधारित सब्सिडी (एन.बी.एस.) कार्यक्रम की शुरुआत वर्ष 2010 में की गई थी। इस योजना के अंतर्गत, वार्षिक आधार पर तय की गई सब्सिडी की एक निश्चित राशि को यूरिया को छोड़कर सब्सिडी वाले फॉस्फेटिक और पोटैसिक (पी एंड के) उर्वरकों के प्रत्येक ग्रेड पर प्रदान किया जाता है। यह उनमें मौजूद पोषक तत्व सामग्री पर आधारित है।
- यह मुख्य रूप से नाइट्रोजन, फॉस्फोरस, सल्फर और पोटेशियम और सूक्ष्म पोषक तत्वों जैसे माध्यमिक पोषक तत्वों के लिए है, जो फसल की वृद्धि और विकास के लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं।
- उर्वरक विभाग, इस योजना को लागू कर रहा है।

टॉपिक- जी.एस. पेपर 2- गवर्नेंस

स्रोत- द हिंदू

महामारी रोग अधिनियम, 1897 में संशोधन करने हेतु अध्यादेश

खबरों में क्यों है?

- हाल ही में, भारत के राष्ट्रपति ने महामारी के दौरान हिंसा के खिलाफ डॉक्टरों के रहने/ काम करने वाले परिसर सहित स्वास्थ्य सेवा कर्मियों और संपत्ति की रक्षा के लिए महामारी रोग अधिनियम, 1897 में संशोधन करने के लिए एक अध्यादेश को मंजूरी प्रदान की है।
- इस अध्यादेश का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि किसी भी स्थिति में मौजूदा महामारी के दौरान, स्वास्थ्य सेवा कर्मियों के खिलाफ किसी भी तरह की हिंसा और संपत्ति को नुकसान के प्रति शून्य-सहिष्णुता है।

अध्यादेश के मुख्य प्रावधान

- अध्यादेश में हिंसा को संज्ञेय और गैर-जमानती अपराध बनाने का प्रावधान है। इसमें स्वास्थ्य सेवा कर्मियों के चोटिल होने या संपत्ति को नुकसान या क्षति पहुंचाने के लिए क्षतिपूर्ति का प्रावधान है, जिसमें स्वास्थ्य सेवा कर्मियों का संबंधित महामारी से प्रत्यक्ष संबंध हो सकता है।
- हिंसा में उत्पीड़न और शारीरिक चोट और संपत्ति को नुकसान पहुंचाना शामिल है।

स्वास्थ्य देखभाल सेवा कर्मियों में शामिल हैं

a. सार्वजनिक और नैदानिक स्वास्थ्य सेवा प्रदाता जैसे डॉक्टर, नर्स, पैरामेडिकल कर्मचारी और सामुदायिक स्वास्थ्य कर्मचारी शामिल हैं।
b. इस बीमारी के प्रकोप को रोकने या इसके प्रसार को रोकने के लिए उपाय करने हेतु अधिनियम के अंतर्गत अन्य व्यक्ति को भी अधिकार प्रदान किया गया है।
c. ऐसे किसी भी व्यक्ति को आधिकारिक गजट में अधिसूचना द्वारा राज्य सरकार द्वारा घोषित किया जाएगा।

सज़ा

- तीन महीने से पांच साल तक की कैद और 50,000/- रुपये से लेकर 2,00,000/- तक के जुर्माने की सजा हो सकती है।
- गंभीर चोट के मामले मे छह महीने से सात वर्ष की अवधि के लिए जेल और 1,00,000/- से 5,00,000/- तक का जुर्माना होगा।

महामारी रोग अधिनियम, 1897 के संदर्भ में जानकारी

- महामारी रोग अधिनियम अंग्रेजों द्वारा बॉम्बे के तत्कालीन राज्य में फैले बुबोनिक प्लेग की महामारी से निपटने के लिए पेश किया गया था।
- इस कानून का उद्देश्य खतरनाक महामारी रोगों के प्रसार की बेहतर रोकथाम के लिए प्रावधान प्रदान करना है।
- अधिनियम के अंतर्गत, किसी बीमारी के प्रकोप से निपटने या रोकने के लिए जनता द्वारा अस्थायी प्रावधानों या नियमों का पर्यवेक्षण किया जा सकता है।
- स्वाइन फ्लू, डेंगू जैसी बीमारियों के प्रकोप से निपटने के लिए देश भर में महामारी रोग अधिनियम को नियमित रूप से लागू किया जाता रहा है।

टॉपिक- जी.एस. पेपर 2- गवर्नेंस

स्रोत- ए.आई.आर.

श्रम पर संसदीय समिति

खबरों में क्यों है?

- हाल ही में, औद्योगिक संबंध संहिता, 2019 पर अपनी रिपोर्ट में श्रम पर संसदीय समिति ने सिफारिश की है कि "प्राकृतिक आपदाओं के मामले में, श्रमिकों की मजदूरी का भुगतान तब तक किया जाता है जब तक कि उद्योग की फिर से स्थापना न हो जाए, यह "अन्यायपूर्ण" है।
- भर्तृहरि महताब, श्रम पर संसदीय समिति के अध्यक्ष हैं।

समिति की सिफारिश

- समिति ने सुझाव दिया है कि इस प्रकार स्पष्टता लाई जाए कि नियोक्ताओं को बंद करने या ठप्प होने के लिए नहीं जिम्मेदार ठहराया जाए, उच्च इरादे की ऐसी प्राकृतिक आपदा के मामले में यह एक नुकसान नहीं है। सिफारिशों के संदर्भ में मूल विचार यह है कि उद्योग को भी मजबूर नहीं किया जाना चाहिए जब स्थिति उनके नियंत्रण से बाहर हो।
- कानून उचित होना चाहिए और सरकार को प्रवेश करना और उद्योगों के लिए मदद हेतु कदम बढ़ाना चाहिए।

औद्योगिक संबंध संहिता 2019 के संदर्भ में जानकारी:

- यह तीन कानूनों- औद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947, व्यापार संघ अधिनियम, 1926 और औद्योगिक रोजगार (स्थायी आदेश) अधिनियम, 1946 का एक मिश्रण है।
- औद्योगिक संहिता बिजली, कोयला, कच्चे माल आदि की कमी के कारण बंद किए गए काम के कारण नियोक्ता को 45 दिनों के लिए श्रमिकों/ कर्मचारियों को 50% मजदूरी का भुगतान करने के लिए बाध्य करती है।

टॉपिक- जी.एस. पेपर 2- गवर्नेंस

स्रोत- द हिंदू

प्रौद्योगिकी विकास बोर्ड

खबरों में क्यों है?

- हाल ही में, प्रौद्योगिकी विकास बोर्ड (टी.डी.बी.) ने कोविड-19 किट विकसित करने के लिए माईलैब डिस्कवरी सॉल्यूशंस के लिए वित्त पोषण को मंजूरी प्रदान की है।

उद्देश्य:

- भारतीय औद्योगिक चिंताओं और स्वदेशी प्रौद्योगिकी के विकास और वाणिज्यिक अनुप्रयोग का प्रयास करने वाली अन्य एजेंसियों को वित्तीय सहायता प्रदान करना या व्यापक स्वदेशी अनुप्रयोगों के लिए आयातित तकनीकों को अपनाना

प्रौद्योगिकी विकास बोर्ड (टी.डी.बी.) के संदर्भ में जानकारी

- यह प्रौद्योगिकी विकास बोर्ड अधिनियम, 1995 के अंतर्गत वर्ष 1996 में स्थापित एक संवैधानिक निकाय है। टी.डी.बी., विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग के अंतर्गत काम करता है। टी.डी.बी., सरकारी ढांचे के भीतर इस प्रकार का पहला संगठन है, जिसका उद्देश्य केवल स्वदेशी अनुसंधान के फल का व्यवसायीकरण करना है।
- बोर्ड, प्रौद्योगिकी-उन्मुख उत्पादों को लेने के लिए उद्यमों को प्रोत्साहित करके एक सक्रिय भूमिका निभाता है।

संरचना

- इसमें 11 सदस्य होते हैं, जिसमें विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग के सचिव, पदेन अध्यक्ष के रूप में शामिल होते हैं।

बोर्ड के कार्य:

- उद्योग, वैज्ञानिकों, टेक्नोक्रेट्स और विशेषज्ञों के बीच बातचीत को सुगम बनाता है।

- उद्योग और संस्थानों के बीच अनुबंध और सहकारी अनुसंधान के माध्यम से प्रोत्साहन और नवाचार संस्कृति
- धन का लाभ उठाने के लिए वित्तीय संस्थानों और वाणिज्यिक बैंकों के साथ एक इंटरफ़ेस प्रदान करता है
- उद्यमियों की एक नई पीढ़ी के निर्माण की सुविधा प्रदान करता है
- अन्य समान प्रौद्योगिकी वित्तपोषण निकायों के साथ साझेदारी का समर्थन करता है
- हाई-टेक क्षेत्रों में उद्यम करने के लिए खाका प्रदान करता है
- नौकरी के नए अवसर बनाता है

माईलैब डिस्कवरी सॉल्यूशन के संदर्भ में जानकारी

- यह पुणे की एक फर्म है, जो कोविड-19 के लिए एक डायग्नोस्टिक किट विकसित कर रही है।
- माईलैब एक रियल टाइम पी.सी.आर.-आधारित मॉलिकुलर डायग्नोस्टिक किट विकसित करने वाली पहली भारतीय फर्म थी, जो उन लोगों को स्क्रीन कर सकती है जो फ्लू जैसे लक्षण प्रदर्शित करते हैं, जो उनसे एकत्र किए गए नाक और गले के स्वैब पर आधारित है।
- इन किटों के विकास और तैनाती से आयातित कोविड-19 परीक्षण किटों पर निर्भरता में कमी आएगी।
- माईलैब किट को पहले ही भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद और केंद्रीय औषधि मानक नियंत्रण संगठन द्वारा अनुमोदित किया गया है।

टॉपिक- जी.एस. पेपर 2- गवर्नेंस

स्रोत- हिंदुस्तान टाइम्स

ई-ग्राम स्वराज पोर्टल और मोबाइल ऐप

खबरों में क्यों है?

- हाल ही में, प्रधानमंत्री ने राष्ट्रीय पंचायती राज दिवस (24 अप्रैल) के अवसर पर ग्राम स्वराज पोर्टल और मोबाइल ऐप लॉन्च किया है।

उद्देश्य:

- देश भर के पंचायती राज संस्थानों (पी.आर.आई.) में ई-गवर्नेंस को मजबूत करने के लिए पंचायती राज मंत्रालय (एम.ओ.पी.आर.) ने एक उपयोगकर्ता-अनुकूल वेब-आधारित पोर्टल ई-ग्राम स्वराज लॉन्च किया है, जिसका उद्देश्य विकेंद्रीकृत योजना, प्रगति रिपोर्टिंग और कार्य-आधारित लेखांकन में बेहतर पारदर्शिता लाना है।

ई-ग्राम स्वराज पोर्टल के संदर्भ में जानकारी

- यह एक उपयोगकर्ता अनुकूल वेब-आधारित पोर्टल ई-ग्राम स्वराज है, जिसका उद्देश्य विकेंद्रीकृत योजना, प्रगति रिपोर्टिंग और कार्य-आधारित लेखांकन में बेहतर पारदर्शिता लाना है।
- यह वास्तविक समय की निगरानी और जवाबदेही सुनिश्चित करेगा और ग्राम पंचायत स्तर तक डिजिटलीकरण की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

राष्ट्रीय पंचायती राज दिवस

- राष्ट्रीय पंचायती राज दिवस, भारत में पंचायती राज प्रणाली का राष्ट्रीय दिवस है, जिसे पंचायती राज मंत्रालय द्वारा 24 अप्रैल को प्रतिवर्ष मनाया जाता है।
- भारत के तत्कालीन प्रधानमंत्री, मनमोहन सिंह ने 24 अप्रैल, 2010 को पहला राष्ट्रीय पंचायती राज दिवस घोषित किया है। उन्होंने उल्लेख किया है कि यदि पंचायती राज संस्थान (पी.आर.आई.) ठीक से काम करता है और स्थानीय लोगों ने विकास प्रक्रिया में भाग लिया है तो माओवादी खतरे का मुकाबला किया जा सकता है।
- निर्वाचित प्रतिनिधियों को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 24 अप्रैल, 2015 को "महिलाओं सरपंचों के पतियों" या "सरपंच पति" की प्रथा को समाप्त करने का आवाहन किया है, जो शक्तियों हेतु चयनित अपनी पत्नियों के काम पर अनुचित प्रभाव का अभ्यास करते हैं।
- उन्होंने एक वीडियो कॉन्फ्रेंस के माध्यम से देश भर के विभिन्न ग्राम पंचायतों के साथ बातचीत भी की है क्योंकि राष्ट्र की कोविड-19 की लड़ाई जारी है।

प्रमुख विशेषताएं

- ग्रामीण कल्याण के लिए दो महत्वपूर्ण योजनाएं हैं, जो प्रौद्योगिकी को तैनात करना चाहती हैं और सलाहकार, विनियमन और सेवा प्रावधान के लिए ग्राम पंचायतों को एक निर्बाध मंच पर जोड़ना चाहती हैं।
- यह पहला ई-ग्राम स्वराज पोर्टल है, जो देश भर में ग्राम पंचायतों के डिजिटलीकरण में मदद करेगा। यह ग्राम पंचायतों की सभी डिजिटल आवश्यक्ताओं के लिए एकल मंच होगा। सरकार की ग्राम पंचायत विकास योजना (जी.पी.डी.पी.) को तैयार करने और लागू करने के लिए एक एकल इंटरफ़ेस है।
- यह पोर्टल भूमि और संपत्ति विवादों को निपटाने और ग्रामीण क्षेत्रों में ऋण की उपलब्धता में भी मदद करेगा।
- यह सेवा धीरे-धीरे अन्य क्षेत्रों में विस्तारित किए जाने से पहले छह राज्यों उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, उत्तराखंड, महाराष्ट्र, कर्नाटक और हरियाणा में शुरू की जाएगी।
- उन्होंने स्वामित्व योजना शुरू की है, जो ग्रामीण भारत के लिए एक एकीकृत संपत्ति सत्यापन समाधान प्रदान करती है।

- ग्रामीण क्षेत्रों में भूमि का सर्वेक्षण और सीमांकन नवीनतम सर्वेक्षण विधियों जैसे कि ड्रोन तकनीक से किया जाएगा, जो कि पंचायती राज मंत्रालय, राज्य पंचायती राज विभागों, राज्य राजस्व विभागों और भारतीय सर्वेक्षण विभाग के सहयोग से किया जाएगा।

टॉपिक- जी.एस. पेपर 2- गवर्नेंस

स्रोत- ए.आई.आर.

ग्रामीण अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देने हेतु स्वामित्व योजना

खबरों में क्यों है?

- प्रधानमंत्री ने ड्रोन के उपयोग जैसी आधुनिक तकनीक का उपयोग करते हुए ग्रामीण क्षेत्र में आवासीय भूमि के स्वामित्व का नक्शा बनाने के लिए स्वामित्व योजना या मालिकाना योजना शुरू की है।

उद्देश्य

- स्वामित्व योजना का उद्देश्य गाँवों में जमीन के मालिकाना हक का रिकॉर्ड बनाना और ग्रामीण आबादी को आधिकारिक दस्तावेज प्रदान करके अधिकार प्रदान करना है, जो भूमि शीर्षक के मालिकाना अधिकार की पुष्टि करता है।

स्वामित्व योजना के संदर्भ में जानकारी

- स्वामित्व योजना को 6 राज्यों में परीक्षण मोड में शुरू किया गया है जो ड्रोन और नवीनतम सर्वेक्षण विधियों का उपयोग करके ग्रामीण आबाद भूमि का नक्शा बनाने में मदद करती है।
- स्वामित्व योजना का उद्देश्य गाँवों में जमीन का मालिकाना हक रिकॉर्ड बनाना और ग्रामीण आबादी को आधिकारिक दस्तावेज प्रदान करके अधिकार प्रदान करना है, जो भूमि शीर्षक के मालिकाना अधिकार की पुष्टि करता है।
- गैर-विवादित रिकॉर्ड बनाने के लिए समुदायों में आवासीय भूमि को ड्रोन का उपयोग करके मापा जाएगा। यह भूमि के सर्वेक्षण और मापने हेतु नवीनतम तकनीक है।

शामिल एजेंसियां/ विभाग

- इस योजना को केंद्रीय पंचायती राज मंत्रालय, भारतीय सर्वेक्षण विभाग, पंचायती राज विभागों और विभिन्न राज्यों के राजस्व विभागों के साथ निकट समन्वय में संचालित किया जाएगा।

लाभ

- ड्रोन, एक गांव की भौगोलिक सीमा के भीतर आने वाली प्रत्येक संपत्ति का एक डिजिटल नक्शा तैयार करेंगे और प्रत्येक राजस्व क्षेत्र की सीमाओं का सीमांकन करेंगे।
- शहर में प्रत्येक संपत्ति के लिए ड्रोन-मानचित्रण द्वारा वितरित सटीक मापों का उपयोग करके राज्यों द्वारा संपत्ति कार्ड तैयार किया जाएगा।
- ये कार्ड संपत्ति मालिकों को दिए जाएंगे और भूमि राजस्व रिकॉर्ड विभाग द्वारा मान्यता प्राप्त होंगे।
- एक आधिकारिक दस्तावेज़ के माध्यम से संपत्ति के अधिकारों का वितरण ग्रामीणों को संपार्श्विक के रूप में अपनी संपत्ति का उपयोग करके बैंक से वित्त प्राप्त करने में सक्षम बनाएगा।

- मालिकों से संबद्ध करों के संग्रह की अनुमति देते हुए एक गाँव के लिए संपत्ति रिकॉर्ड को पंचायत स्तर पर भी बनाए रखा जाएगा।
- इन स्थानीय करों से उत्पन्न धन का उपयोग ग्रामीण अवसंरचना और सुविधाओं के निर्माण के लिए किया जाएगा।
- कर संग्रह की सुविधा, नई इमारत और संरचना योजना, परमिट जारी करने और संपत्ति हथियाने के प्रयासों को विफल करने के लिए सटीक संपत्ति रिकॉर्ड का उपयोग किया जा सकता है।

टॉपिक- जी.एस. पेपर 2- गवर्नेंस

स्रोत- पी.आई.बी.

केंद्रीय सतर्कता आयुक्त

खबरों में क्यों है?

- श्री संजय कोठारी ने केंद्रीय सतर्कता आयुक्त के रूप में शपथ ग्रहण की है।

केंद्रीय सतर्कता आयोग के संदर्भ में जानकारी

- केन्द्रीय सतर्कता आयोग (सी.वी.सी.) की स्थापना 1964 में के. संथनाम की अध्यक्षता वाली भ्रष्टाचार निरोधक समिति की सिफारिशों के आधार पर की गई थी।
- यह केंद्रीय सतर्कता आयोग अधिनियम 2003 द्वारा शासित एक संवैधानिक निकाय है।

उद्देश्य

- इस महत्वपूर्ण निकाय को स्थापित करने का मुख्य उद्देश्य, यह सुनिश्चित करना था कि सरकारी क्षेत्र में सभी प्रकार के भ्रष्टाचारों को अच्छी तरह से रोका जा सके और उन्हें प्रतिमिनट संबोधित किया जा सके। इसमें केंद्र सरकार के लोक सेवकों की विशिष्ट श्रेणियों, किसी भी केंद्रीय अधिनियम के अंतर्गत या द्वारा स्थापित निगमों, सरकारी कंपनियों, सोसाइटियों और स्थानीय प्राधिकरणों के स्वामित्व वाले या केंद्र सरकार द्वारा नियंत्रित भ्रष्टाचार निरोधक अधिनियम, 1988 के अंतर्गत किए गए तथाकथित अपराधों की पूछताछ करना शामिल होगा।

संरचना:

- आयोग में एक केंद्रीय सतर्कता आयुक्त (अध्यक्ष) और अधिकतम दो सतर्कता आयुक्त (सदस्य) शामिल होंगे।

नियुक्ति:

- राष्ट्रपति ने उन्हें एक समिति की सिफारिश पर नियुक्त करता है, जिसमें निम्न लोग शामिल होते हैं:

a. **प्रधानमंत्री (अध्यक्ष)**
b. **गृह मामलों के मंत्री**
c. **लोकसभा में विपक्ष का नेता**

नोट: इसे प्राय: एक शक्तिहीन संस्था माना जाता है क्योंकि इसे केवल एक सलाहकार निकाय के रूप में माना जाता है, जिसके पास सरकारी अधिकारियों के खिलाफ आपराधिक मामला दर्ज करने या संयुक्त सचिव और

उससे ऊपर के स्तर के किसी भी अधिकारी के खिलाफ जांच शुरू करने के लिए सी.बी.आई. को निर्देशित करने की शक्ति नहीं होती है।

टॉपिक- जी.एस. पेपर 2-संविधान

स्रोत- द हिंदू

वेंटीलेटर इंटरवेंशन टेक्नोलॉजी एक्सेसिबल लोकली (VITAL)

खबरों में क्यों है?

- नासा के इंजीनियरों ने वाइटल नामक एक नया, आसानी से निर्मित उच्च दबाव वेंटिलेटर विकसित किया है, जो विशेष रूप से कोविड-19 के रोगियों के इलाज हेतु विकसित किया गया है।

वेंटीलेटर इंटरवेंशन टेक्नोलॉजी एक्सेसिबल लोकली के संदर्भ में जानकारी

- यह मामूली लक्षण वाले मरीजों का इलाज करने के लिए डिजाइन किया गया है, जिससे देश के पारंपरिक वेंटिलेटर की सीमित आपूर्ति को बनाए रखा जाए जो कि अधिक गंभीर कोविड-19 लक्षणों वाले रोगियों इलाज हेतु उपलब्ध हैं।

लाभ

- वाइटल को पारंपरिक वेंटिलेटर की तुलना में अधिक आसानी से बनाए रखा जा सकता है और तेजी से निर्मित किया जा सकता है, यह बहुत कम भागों से बना होता है, जिनमें से कई वर्तमान में मौजूदा आपूर्ति श्रृंखला के माध्यम से संभावित निर्माताओं के लिए उपलब्ध हैं।
- नासा अब आपातकालीन उपयोग प्राधिकरण के माध्यम से डिवाइस के लिए एफ.डी.ए. की मंजूरी चाहता है, यह संकट की स्थिति के लिए विकसित एक फास्ट-ट्रैक अनुमोदन प्रक्रिया है जो वर्षों के बजाय सिर्फ कुछ दिन का समय लेती है।

टॉपिक- जी.एस. पेपर 2- गवर्नेंस

स्रोत- ए.आई.आर.

शीर्ष 3 सैन्य खर्च करने वाले देशों में भारत शामिल है: रिपोर्ट

खबरों में क्यों है?

- स्टॉकहोम अंतर्राष्ट्रीय शांति अनुसंधान संस्थान (सिपरी) की रिपोर्ट के अनुसार, 2019 में वैश्विक सैन्य व्यय बढ़कर 1917 अरब डॉलर हो गया और भारत और चीन शीर्ष तीन सैन्य खर्च करने वाले देशों में से एक हैं।

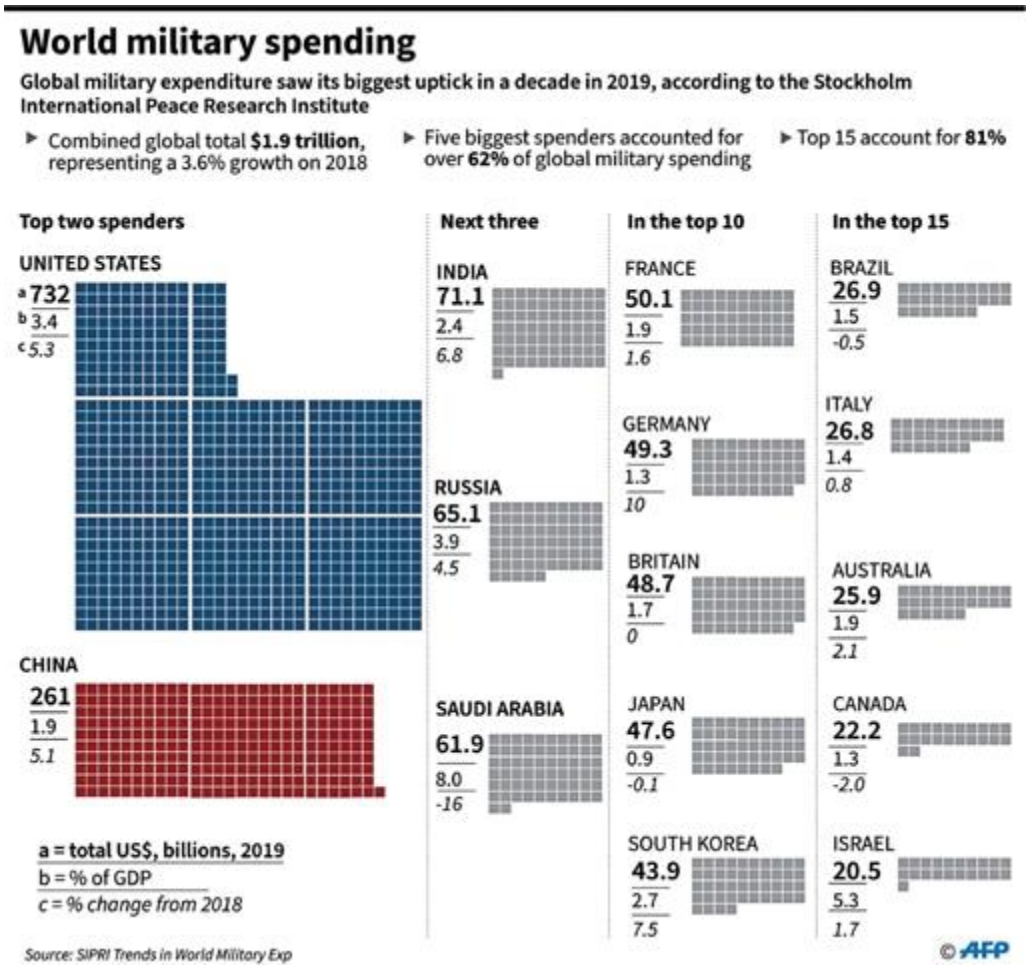

स्टॉकहोम अंतर्राष्ट्रीय शांति अनुसंधान संस्थान (सिपरी) के संदर्भ में जानकारी

- सिपरी, वर्ष 1966 में स्थापित एक स्वतंत्र अंतर्राष्ट्रीय संस्थान और स्वीडिश प्रबुद्ध मंडल है।
- यह संघर्ष, आयुध, हथियार नियंत्रण और निरस्त्रीकरण में शोध करता है।
- यह नीति निर्माताओं, शोधकर्ताओं, मीडिया और इच्छुक जनता के लिए खुले स्रोतों के आधार पर डेटा, विश्लेषण और सिफारिशें प्रदान करता है।
- इसका मुख्यालय स्टॉकहोम में स्थित है।

दृष्टिकोण और मिशन

- सिपरी का दृष्टिकोण एक ऐसी दुनिया का है जिसमें असुरक्षा के स्रोतों की पहचान की जाती हो और समझा जाता हो, संघर्षों को रोका या हल किया जाता है और शांति बनाए रखी जाती है।

सिपरी के मिशन निम्नलिखित हैं:

- सुरक्षा, संघर्ष और शांति पर अनुसंधान और गतिविधियाँ करना
- नीति विश्लेषण और सिफारिशें प्रदान करना
- संवाद की सुविधा और क्षमता का निर्माण करना
- पारदर्शिता और जवाबदेही को बढ़ावा देना
- वैश्विक दर्शकों के लिए आधिकारिक जानकारी वितरित करना

टॉपिक- जी.एस. पेपर 2-अंतर्राष्ट्रीय संगठन

स्रोत- द हिंदू

मिड-डे मील योजना

खबरों में क्यों है?

- हाल ही में, केंद्र सरकार ने कोविड-19 से उत्पन्न स्थिति के मद्देनजर मिड-डे मील योजना के अंतर्गत खाना पकाने की लागत के वार्षिक केंद्रीय आवंटन में लगभग 11 प्रतिशत की वृद्धि करके 8,100 करोड़ करने की घोषणा की है।

मिड-डे मील योजना के संदर्भ में जानकारी

- यह एक केंद्र प्रायोजित योजना है।

उद्देश्य

- नामांकन और उपस्थिति बढ़ाने के साथ ही सरकारी, सरकारी सहायता प्राप्त स्कूलों, विशेष प्रशिक्षण केंद्रों (एस.टी.सी.) और मदरसों और मकतबों में कक्षा एक से आठवीं तक पढ़ने वाले स्कूली बच्चों के पोषण स्तर में सुधार करने हेतु सर्व शिक्षा अभियान के अंतर्गत सहायता प्रदान की गई है।
- मिड-डे मील योजना, राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम, 2013 द्वारा कवर की गई है।

मिड-डे मील योजना की पृष्ठभूमि

- वर्ष 1925 में, मद्रास नगर निगम में वंचित बच्चों के लिए एक मिड-डे मील कार्यक्रम शुरू किया गया था।
- प्राथमिक शिक्षा (एन.पी.-एन.एस.पी.ई.) के लिए राष्ट्रीय पोषण संबंधी समर्थन कार्यक्रम 15 अगस्त, 1995 को एक केंद्र प्रायोजित योजना के रूप में शुरू किया गया था, शुरुआत में देश के 2408 ब्लॉकों में इसे शुरू किया गया था।
- इसे वर्ष 2002 में न केवल सरकारी, सरकारी सहायता प्राप्त और स्थानीय निकाय स्कूलों के I-V कक्षाओं में बल्कि शिक्षा गारंटी योजना (ई.जी.एस.) और वैकल्पिक एवं अभिनव शिक्षा (ए.आई.ई.) केंद्रों में पढ़ने वाले बच्चों को भी कवर करने के लिए बढ़ाया गया था।
- अक्टूबर 2007 में, उच्च प्राथमिक (कक्षा छठी से आठवीं) में, प्रारंभ में 3479 में शैक्षिक रूप से पिछड़े ब्लॉक (ई.बी.बी.) के बच्चों को शामिल करने के लिए योजना को आगे भी संशोधित किया गया था।

- 2008-09 से, इस कार्यक्रम में देश भर के सभी क्षेत्रों के सर्व शिक्षा अभियान (एस.एस.ए.) के अंतर्गत समर्थित सरकारी, स्थानीय निकाय और सरकारी सहायता प्राप्त प्राथमिक और उच्च प्राथमिक विद्यालयों और मदरसा और मकतबों सहित ई.जी.एस./ ए.आई.ई. केंद्रों में अध्ययनरत सभी बच्चों को शामिल किया गया था।

तिथि भोजन के संदर्भ में जानकारी

- तिथि भोजन, कार्यक्रम में स्थानीय समुदाय की भागीदारी को प्रोत्साहित करने के लिए मिड-डे मील योजना है।
- यह अवधारणा पहली बार गुजरात में लागू की गई थी, जहां से भारत सरकार ने इसे देश भर में लागू करने के लिए लिया था।
- यह बच्चों को पौष्टिक और स्वस्थवर्धक भोजन प्रदान करने के प्रयास में समुदाय के सदस्यों को शामिल करना चाहता है।
- समुदाय के सदस्य विशेष अवसरों/ त्योहारों पर बर्तन या भोजन में योगदान दे सकते हैं।
- यह पूरी तरह से स्वैच्छिक है और समुदाय के लोग मध्याह्न के पहले से ही मीठे, नमकीन या स्प्राउट्स जैसे पूरक खाद्य पदार्थों का योगदान दे सकते हैं।
- धार्मिक और धर्मार्थ संस्थानों की साझेदारी और भागीदारी को भी बढ़ावा दिया जा रहा है।

टॉपिक- जी.एस. पेपर 2-गवर्नेंस

स्रोत- द हिंदू

जगनन्ना विद्या दीवेना योजना

खबरों में क्यों है?

- आंध्र प्रदेश सरकार ने आंध्र प्रदेश में गुंटूर जिले में 'जगनन्ना विद्या दीवेना' योजना शुरू की है।

'जगनन्ना विद्या दीवेना' योजना के संदर्भ में जानकारी

- इस योजना के अंतर्गत, आगामी शैक्षणिक वर्ष 2020-21 में शुल्क प्रतिपूर्ति कॉलेज खातों के बजाय सीधे माताओं के खातों में जमा की जाएगी।
- सरकार इस योजना के माध्यम से आई.टी.आई., बीटेक, बी. फार्मेसी, एम.बी.ए., एम.सी.ए. और बी.एड. पाठ्यक्रम के लिए शुल्क प्रतिपूर्ति प्रदान करने जा रही है।
- 'जगनन्ना विद्या दीवेना' योजना के माध्यम से योग्य उम्मीदवारों को 15,000 से 20,000 रूपए की धनराशि प्रदान की जाएगी।

टॉपिक: जी.एस. पेपर 2- गवर्नेंस

स्रोत- ए.आई.आर.

'जीवन अमृत योजना' योजना

खबरों में क्यों है?

- हाल ही में, मध्य प्रदेश सरकार ने जीवन अमृत योजना शुरू की है, जो राज्य के नागरिकों की प्रतिरक्षा प्रणाली को बढ़ावा देने हेतु एक अद्वितीय योजना है।

'जीवन अमृत योजना' के संदर्भ में जानकारी

- इस योजना के अंतर्गत, राज्य सरकार आयुष विभाग द्वारा तैयार विशेष त्रिकूट चूर्ण का एक पैकेट नागरिकों को निशुल्क वितरित करेगी।
- जीवन अमृत योजना के अंतर्गत, आयुष विभाग के सहयोग से मध्य प्रदेश लघु वनोपज संघ द्वारा काढ़े के 50 ग्राम के पैकेट तैयार किए गए हैं।

टॉपिक- जी.एस. पेपर 2- गवर्नेंस

स्रोत- ए.आई.आर.

मल्टी-सिस्टम इंफ्लैमेटरी अवस्था

खबरों में क्यों है?

- यू.के. की बाल चिकित्सा गहन देखभाल सोसाइटी ने कहा है कि इसने "मल्टी-सिस्टम इंफ्लेमेटरी अवस्था" के साथ गहन देखभाल की आवश्यकता वाले सभी उम्र के बच्चों की संख्या में "स्पष्ट वृद्धि" देखी है, जिसमें डॉक्टरों का मानना है कि यह कोरोनवायरस से संबंधित हो सकता है।

मल्टी-सिस्टम इंफ्लेमेटरी अवस्था क्या है?

- यह एक दुर्लभ बीमारी है, जो रक्त वाहिकाओं में सूजन का कारण बनती है, जिससे निम्न रक्तचाप होता है।
- यह पूरे शरीर को प्रभावित करती है क्योंकि यह फेफड़ों और अन्य अंगों में तरल पदार्थ का निर्माण करती है।
- यह स्थिति कावासाकी बीमारी के समान है।
- इससे पीड़ित मरीजों के फेफड़ों, हृदय और अन्य अंगों को समर्थन देने हेतु गहन देखभाल की आवश्यकता होती है।

लक्षण क्या हैं?

- बच्चों में पेट और जठरांत्र संबंधी लक्षणों के साथ-साथ हृदय की सूजन भी नजर आती है। पी.आई.सी.एस. के अनुसार, इसमें विषाक्त शॉक सिंड्रोम और असामान्य कावासाकी रोग के अतिव्यापी लक्षण भी थे।

विषाक्त शॉक सिंड्रोम के संदर्भ में जानकारी

- यह एक दुर्लभ जीवन को खतरे में डालने वाली स्थिति है, जो तब होती है जब कुछ बैक्टीरिया, शरीर में प्रवेश करते हैं और हानिकारक विषाक्त पदार्थों को छोड़ते हैं।
- यदि समय पर इसका इलाज नहीं किया गया तो स्थिति घातक हो सकती है।

लक्षण

- इसमें उच्च तापमान, फ्लू जैसे लक्षण शामिल हैं जिसमें सिरदर्द, गले में खराश, खांसी, दस्त, चक्कर आना या बेहोशी आना, साँस लेने में कठिनाई होना और भ्रम शामिल हैं।

कावासाकी बीमारी के संदर्भ में जानकारी

- यह रक्त वाहिकाओं की एक तीव्र सूजन वाली बीमारी है और सामान्यत: पांच वर्ष से कम आयु के बच्चों में होती है।
- बीमारी के कारण होने वाली सूजन, शरीर के कई हिस्सों को प्रभावित करती है लेकिन हृदय पर इसका अधिक गंभीर प्रभाव पड़ता है क्यों कि यह कोरोनरी धमनियों में सूजन पैदा करती है जो हृदय को रक्त की आपूर्ति करने हेतु जिम्मेदार होती हैं।
- इसके परिणामस्वरूप विस्तार होने या विस्फार के बनने से दिल का दौरा पड़ सकता है।
- इसके लक्षणों में बुखार, हाथ-पांव में परिवर्तन, चकते और कॉर्निया में लालिमा, लाल और फटे होंठ, जीभ लाल होना और गर्दन की लसीका ग्रंथि में वृद्धि शामिल है।

टॉपिक- जी.एस. पेपर 3- विज्ञान एवं तकनीकि

स्रोत- इंडियन एक्सप्रेस

नीट, अल्पसंख्यक-संचालित मेडिकल कॉलेजों पर लागू होता है: सर्वोच्च न्यायालय

खबरों में क्यों है?

- हाल ही में, सर्वोच्च न्यायालय ने आयोजित की जाने वाली राष्ट्रीय पात्रता-सह-प्रवेश परीक्षा (नीट) को धार्मिक और भाषाई अल्पसंख्यक समुदायों द्वारा संचालित मेडिकल कॉलेजों में प्रवेश के लिए अनिवार्य कर दिया है।
- यह निर्णय सार्वभौमिक (यूनिवर्सल) प्रवेश परीक्षा के लिए भारतीय चिकित्सा परिषद (एम.सी.आई.) और भारतीय दंत चिकित्सा परिषद (डी.सी.आई.) द्वारा भारतीय चिकित्सा परिषद अधिनियम 1956 की धारा 10डी और 1948 के दंत चिकित्सा अधिनियम के अंतर्गत जारी कई की गई अधिसूचनाओं को कॉलेजों द्वारा दी गई एक चुनौती पर आधारित था।

फैसले की मुख्य विशेषताएं

- न्यायमूर्ति अरूण मिश्रा की अगुवाई वाली तीन न्यायाधीशों की पीठ ने कहा है कि केवल स्नातक और स्नातकोत्तर मेडिकल/ डेंटल कोर्स के लिए केवल नीट के माध्यम से प्रवेश अल्पसंख्यकों के किसी भी मौलिक और धार्मिक अधिकारों का उल्लंघन नहीं करता हैं।
- उन्होंने कहा है कि व्यापार या व्यवसाय की स्वतंत्रता का अधिकार पूर्ण नहीं है।

- यह "छात्रों के हित में उचित प्रतिबंध" समुदाय के लिए योग्यता, उत्कृष्टता की मान्यता को बढ़ावा देने और कुप्रथाओं को रोकने के अधीन है।
- अदालत ने कहा है कि प्रावधान, अनुच्छेद 30 [अपने संस्थानों के प्रशासन हेतु अल्पसंख्यकों के अधिकार] के अंतर्गत उपलब्ध अधिकारों का उल्लंघन नहीं करते हैं, जिन्हें एम.सी.आई./ डी.सी.आई. द्वारा बनाए गए एम.सी.आई. अधिनियम और दंत चिकित्सक अधिनियम एवं विनियमन की धारा 10डी में रखा गया है।
- सार्वभौमिक (यूनिफ़ॉर्म) प्रवेश परीक्षा, संविधान में निर्दिष्ट नीति निर्देशक सिद्धांतों को आगे बढ़ाने में मेरिट को बढ़ाकर भविष्य के सार्वजनिक स्वास्थ्य में सुधार सुनिश्चित करेगी।

टॉपिक- जी.एस. पेपर 2- राजनीति

स्रोत- द हिंदू

राष्ट्रीय अवसंरचना पाइपलाइन

समाचार में क्यों है?

- राष्ट्रीय अवसंरचना पाइपलाइन (एन.आई.पी.) पर टास्क फोर्स ने वित्त मंत्रालय को वित्त वर्ष 2019-25 के लिए एन.आई.पी. पर अपनी अंतिम रिपोर्ट प्रस्तुत की है।

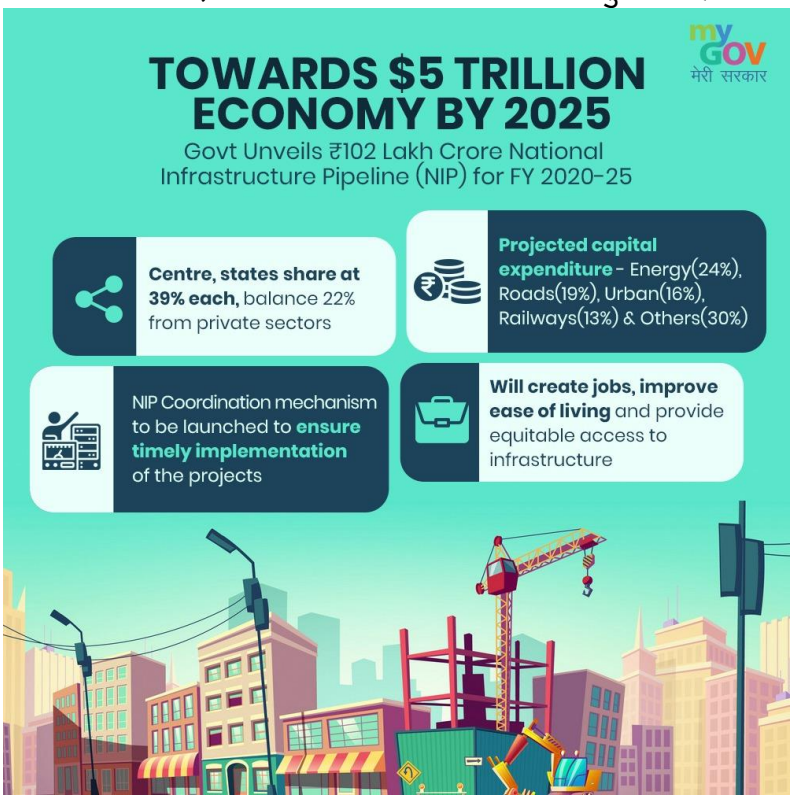

रिपोर्ट के संदर्भ में जानकारी

- एन.आई.पी. टास्क फोर्स की अंतिम रिपोर्ट वित्त वर्ष 2020-25 की अवधि के दौरान 111 लाख करोड़ रूपये के कुल अवसंरचना निवेश का अनुमान लगा रही है।
- जो 111 लाख करोड़ रूपए के कुल अपेक्षित पूंजीगत व्यय में से है।

a. 44 लाख करोड़ रूपये (एन.आई.पी. का 40%) की परियोजनाएं कार्यान्वयन के अंतर्गत हैं
b. 33 लाख करोड़ रूपये (30%) की परियोजनाएं वैचारिक स्तर पर हैं

c. 22 लाख करोड़ रूपये (20%) की परियोजनाएं चल रही हैं
d. 11 लाख करोड़ रूपये (10%) की परियोजनाओं के लिए परियोजना चरण के संदर्भ में जानकारी उपलब्ध नहीं है।
e. ऊर्जा (24%), सड़कें (18%), शहर (17%) और रेलवे (12%) जैसे क्षेत्रों में भारत में अनुमानित अवसंरचना निवेश का लगभग 71% हिस्सा है।
f. भारत में एन.आई.पी. को लागू करने में केंद्र (39%) और राज्य (40%) की लगभग बराबर हिस्सेदारी की उम्मीद है, इसके बाद निजी क्षेत्र (21%) का स्थान होगा।

टास्क फोर्स ने तीन समितियां स्थापित करने की सिफारिश की है:

i. एन.आई.पी. प्रगति की निगरानी और देरी को समाप्त करने हेतु एक समिति
ii. कार्यान्वयन के अनुसरण हेतु प्रत्येक अवसंरचना मंत्रालय स्तर में एक संचालन समिति तथा
iii. एन.आई.पी. के लिए वित्तीय संसाधन जुटाने हेतु डी.ई.ए. में एक संचालन समिति का गठन

- एन.आई.पी. को दृश्यता प्रदान करने और भावी निवेशकों, घरेलू और विदेशी दोनो के साथ इसके वित्तपोषण में मदद करने के लिए शीघ्र ही एन.आई.पी. परियोजना डेटाबेस को भारत निवेश ग्रिड (आई.आई.जी.) पर आयोजित किया जाएगा, जो अद्यतन परियोजना-स्तरीय जानकारी तक पहुँचने में सक्षम होगी।

नोट: केंद्रीय वित्त मंत्री ने अपने बजट भाषण 2019-20 में घोषणा की थी कि अगले पांच वर्षों में बुनियादी ढांचे पर 100 लाख करोड़ रूपये का निवेश किया जाएगा।

टॉपिक- जी.एस. पेपर 3- ढांचा
स्रोत- पी.आई.बी.

विशेष 301 रिपोर्ट

खबरों में क्यों है?

- यू.एस.टी.आर. ने अपनी वार्षिक विशेष 301 रिपोर्ट में कहा है कि भारत, पर्याप्त बौद्धिक संपदा (आई.पी.) अधिकार संरक्षण और प्रवर्तन की कमी के लिए संयुक्त राज्य व्यापार प्रतिनिधि (यू.एस.टी.आर.) की 'प्राथमिकता निगरानी सूची' में बना हुआ है।

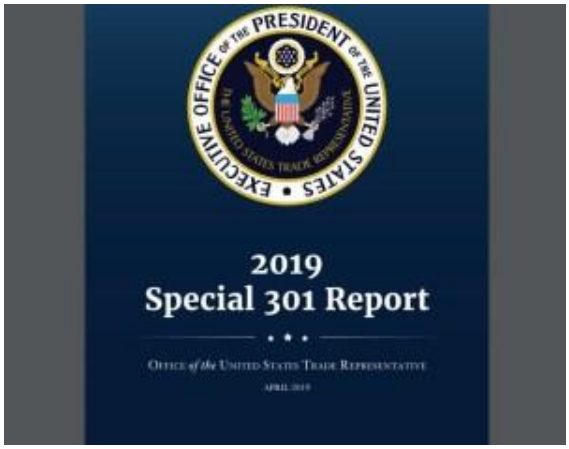

रिपोर्ट की मुख्य विशेषताएं

- भारत, आई.पी. प्रवर्तन और संरक्षण के लिए सबसे चुनौतीपूर्ण अर्थव्यवस्थाओं में से एक रहा है।
- जबकि भारत ने पिछले वर्षों में कुछ क्षेत्रों में आई.पी. संरक्षण और प्रवर्तन को बढ़ाने के लिए "सार्थक प्रगति" की है, इसने हालिया और लंबे समय से चली आ रही चुनौतियों का समाधान नहीं किया और नई चुनौतियों का निर्माण किया है।
- ये लंबे समय से चली आ रही चिंताएं निम्न हैं:

a. अन्वेषक विशेष रूप से फार्मास्यूटिकल क्षेत्र में पेटेंट प्राप्त करने, बनाए रखने और लागू करने में सक्षम हैं।
b. सामग्री के निर्माण और व्यावसायीकरण को न बढ़ाने वाले कॉपीराइट कानूनों पर चिंता तथा
c. एक पुराना व्यापार रहस्य ढांचा

- रिपोर्ट में चिकित्सा उपकरणों और सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी पर उच्च सीमा शुल्क का भी उल्लेख किया गया है।
- रिपोर्ट में उल्लेख किया गया है कि भारत को निरंतर रूप से ट्रेडमार्क के कानून पर सिंगापुर संधि में शामिल होने का आग्रह किया गया है, जो एक संधि है जो ट्रेडमार्क पंजीकरण को सामांजस्यपूर्ण बनाती है।

विशेष 301 रिपोर्ट के संदर्भ में जानकारी

- यह संयुक्त राज्य अमेरिका के व्यापार प्रतिनिधि के कार्यालय द्वारा वार्षिक रूप से तैयार की जाती है।
- यह पहली बार 1989 में प्रकाशित हुई थी।

उद्देश्य

- यह अन्य देशों में बौद्धिक संपदा कानूनों जैसे कॉपीराइट, पेटेंट और ट्रेडमार्क के कारण संयुक्त राज्य की कंपनियों और उत्पादों के लिए व्यापार बाधाओं की पहचान करता है।
- विशेष 301 रिपोर्ट को 1974 के व्यापार अधिनियम की धारा 301 के अनुसार प्रकाशित किया जाता है, जैसा कि इसे 1988 के सर्वव्यापी व्यापार और प्रतिस्पर्धा अधिनियम की धारा 1303 द्वारा संशोधित किया गया है।

टॉपिक- जी.एस. पेपर 2- शासन

स्रोत- इंडियन एक्सप्रेस

अंतर्राष्ट्रीय घटनाक्रम

ऑपरेशन संजीवनी

खबरों में क्यों है?

- हाल ही में, एक भारतीय वायु सेना सी-130 जे परिवहन विमान ने ऑपरेशन संजीवनी के अंतर्गत आवश्यक दवाओं और अस्पताल के उपभोग के 6.2 टन को मालदीव को वितरित किया है।
- अन्य चीजों के अतिरिक्त, इन दवाओं में इन्फ्लूएंजा टीके, एंटी-वायरल दवाएं जैसे लोपिनाविर और रिटोनाविर शामिल हैं- जिनका उपयोग कोविड-19 के रोगियों के इलाज के लिए किया गया है।
- भारत ने तैयारियों को बढ़ाने के लिए डॉक्टरों की 14-सदस्यीय कोविड-19 रैपिड रिस्पांस टीम भी भेजी है।

मालदीव उन अग्रणी देशों में से एक रहा है जिन्हें कोविड संकट के दौरान भारतीय सहायता मिली है। यह कार्य भारत की पड़ोस की पहली नीति और मालदीव की भारत की पहली नीति के पारस्परिक संबंध के अनुरूप है। कार्रवाई में दोस्ती है।

मालदीव को भारत की पिछली सहायताएं

a. **ऑपरेशन कैक्टस**

- यह 1988 में भारतीय सशस्त्र बलों द्वारा आयोजित किया गया था, जिसने तख्तापलट के प्रयास को निष्प्रभावी करने में मालदीव की सरकार की मदद की है।

b. **ऑपरेशन नीर**

- यह 2014 में मालदीव की पेयजल संकट से निपटने में मदद करने के लिए आयोजित किया गया था।

c. **सैन्य युद्धाभ्यास**

एकुवेरिन

- यह भारत और मालदीव के बीच एक संयुक्त सैन्य युद्धाभ्यास है।
- यह 14 दिनों का संयुक्त युद्धाभ्यास है जो भारत और मालदीव में एकांतर क्रम में आयोजित किया जाता है।

- यह संयुक्त राष्ट्र के शासनादेश के अंतर्गत एक अर्ध-शहरी वातावरण में जवाबी कार्रवाई और आतंकवाद विरोधी अभियानों को अंजाम देने के लिए दोनों सेनाओं के बीच अंतरकार्यकारिता को बढ़ाने पर केंद्रित है।

टॉपिक- जी.एस. पेपर 2- अंतर्राष्ट्रीय संबंध, स्रोत- ए.आई.आर.

विश्व खाद्य कार्यक्रम

खबरों में क्यों है?

- हाल ही में, विश्व खाद्य कार्यक्रम ने कहा है कि तेजी से बढ़ती नॉवेल कोरोनावायरस महामारी का अब तक वैश्विक खाद्य आपूर्ति श्रृंखला पर बहुत कम प्रभाव पड़ रहा है, लेकिन यदि प्रमुख खाद्य आयातक चिंतित रहते हैं तो यह और भी बदतर हो सकता है।

विश्व खाद्य कार्यक्रम के संदर्भ में जानकारी

- यह संयुक्त राष्ट्र की खाद्य-सहायता शाखा है।
- यह दुनिया का सबसे बड़ा मानवीय संगठन है, जो भूख को संबोधित करता है और खाद्य सुरक्षा को बढ़ावा देता है।

उद्देश्य

- यह उन लोगों की मदद करने के लिए काम करता है जो अपने और अपने परिवार के लिए पर्याप्त भोजन का उत्पादन नही कर सकते हैं या पर्याप्त भोजन नहीं प्राप्त कर सकते हैं।
- इसकी स्थापना वर्ष 1961 में 1960 के खाद्य एवं कृषि संगठन (एफ.ए.ओ.) सम्मेलन के बाद की गई थी।
- इसका मुख्यालय रोम (इटली) में स्थित है।
- यह संयुक्त राष्ट्र विकास समूह (यू.एन.डी.जी.) का सदस्य है और इसकी कार्यकारी समिति का हिस्सा है।

अन्य संबंधित जानकारी

- संयुक्त राष्ट्र विश्व खाद्य कार्यक्रम (डब्ल्यू.एफ.पी.) ने भारत में भूख और कुपोषण के खिलाफ अपने सिनेमा विज्ञापन अभियान 'फीड अवर फ्यूचर' की शुरुआत की है।
- डब्ल्यू.एफ.पी. ने इसे यू.एफ.ओ. मूवीज - भारत का सबसे बड़े इन-सिनेमा विज्ञापन प्लेटफॉर्म और एस.ए.डब्ल्यू.ए.- वैश्विक सिनेमा विज्ञापन संघ के सहयोग से लॉन्च किया है।
- यह शोबॉक्स म्यूजिक टी.वी. चैनल, एल.एफ. (लिविंग फूड टी.वी. चैनल) और रेड एफ.एम. 93.5 द्वारा भी समर्थित है।
- यह भारत के दिल और दिमाग में शून्य भखमरी के संदेश को चलाने में मदद करेगा।

नोट: सतत विकास लक्ष्यों का लक्ष्य 2: भुखमरी समाप्त करना, खाद्य सुरक्षा प्राप्त करना और पोषण में सुधार करना और सतत कृषि को बढ़ावा देना जिसका उद्देश्य भुखमरी को समाप्त करना है।

टॉपिक- जी.एस. पेपर 2- अंतर्राष्ट्रीय संगठन

स्रोत- ए.आई.आर.

कोरोनावायरस के प्रसार को कम करने के लिए भारत में शुरू की गई अनुसंधान परियोजनाएं

खबरों में क्यों हैं?

- विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग- विज्ञान एवं इंजीनियरिंग बोर्ड (डी.एस.टी.-एस.ई.आर.बी.) ने कई विशेष अनुसंधान परियोजनाओं की घोषणा की है।
- कार्यान्वयन योग्य प्रौद्योगिकियों में आगे के विकास के लिए पांच परियोजनाओं के पहले सेट का चयन किया गया है।

इन पांच प्रोजेक्ट के संदर्भ में जानकारी

इन परियोजनाओं को कोविड- 19 प्रोजेक्टों के लिए एक विशेष विशेषज्ञ समिति द्वारा सहकर्मी-समीक्षा और मूल्यांकन के बाद चुना गया था।

- पहला प्रोजेक्ट कोरोनावायरस के लिए संभावित मेटाबोलाइट बायोमार्कर हस्ताक्षर की खोज और चिकित्सा के लिए नए लक्ष्यों की पहचान करने में मदद करेगा।
- बायोमार्कर या जैविक मार्कर, एक निश्चित समय पर एक कोशिका या एक जीव की गतिविधि को पकड़ता हैं और संभावित दवाओं या टीकों की पहचान करने में मदद करता है।
- दूसरी परियोजना कोरोनावायरस, सार्स-सी.ओ.वी.-2 जैसे संक्रामक रोगजनकों के कारण होने वाली संक्रामक बीमारियों की रोकथाम के लिए स्वास्थ्य देखभाल सेटिंग्स में प्रयोग की जाने वाली निर्जीव सतहों के लिए विषाणुजनित कोटिंग्स को विकसित करने में मदद करेगी।
- तीसरी परियोजना इन्फ्लूएंजा वायरस के कारण संक्रमण के प्रसार को रोकने के लिए एंटीवायरल सतह कोटिंग्स को विकसित करने से संबंधित है।
- इसका उद्देश्य छोटे आणविक और बहुलक यौगिकों को विकसित करना है जो विभिन्न सतहों पर लेपित होंगे और श्वसन वायरस को संपर्क में आने पर पूरी तरह से मार देंगे।
- चौथी परियोजना, ऐसी सामग्री विकसित करना है जो सतहों को कीटाणुरहित करने और किसी भी चिपकने वाले वायरस या बैक्टीरिया को हटाने के लिए पोछे पर लगाई जा सकती है।
- पांचवीं परियोजना 2019-nCoV के एंटीबॉडी-आधारित कैप्चर के विकास और सीटू जेल में लिपिड-आधारित का उपयोग करके इसकी निष्क्रियता से संबंधित है।

टॉपिक- जी.एस. पेपर 3- विज्ञान एवं तकनीकि

स्रोत- टी.ओ.आई., इकानॉमिक टाइम्स

कोरोनाबॉन्ड

खबरों में क्यों है?

- हाल ही में, "कोरोनाबांड" के विचार को जर्मनी, नीदरलैंड, फिनलैंड और ऑस्ट्रिया द्वारा अस्वीकार कर दिया गया था, जो कि आर्थिक रूप से **"किफायती"** उत्तरी राज्य देनदारियों के डूबने के प्रति चिंतित है जिसे वे दक्षिणी यूरोप में अधिक खर्च करने वाले देशों के रूप में देखते हैं।

मुद्दा क्या था?

- वर्तमान में चल रहे वायरस के प्रकोप ने यूरोजोन देशों के बीच स्वास्थ्य संबंधी जरूरतों को पूरा करने के लिए संयुक्त रूप से ऋण जारी करने और गहन आर्थिक मंदी को दूर करने के बारे में तीखी बहस को पुनर्जीवित कर दिया है, जिसका अनुसरण किया जाना है।

- इसके प्रकोप और इसके प्रभावों से लड़ने के लिए एकल मुद्रा का उपयोग करने वाले 19 देशों में से 9 देशों को एक यूरोपीय संस्था द्वारा जारी किए गए एक आम ऋण साधन के लिए 25 मार्च को बुलाया गया था।

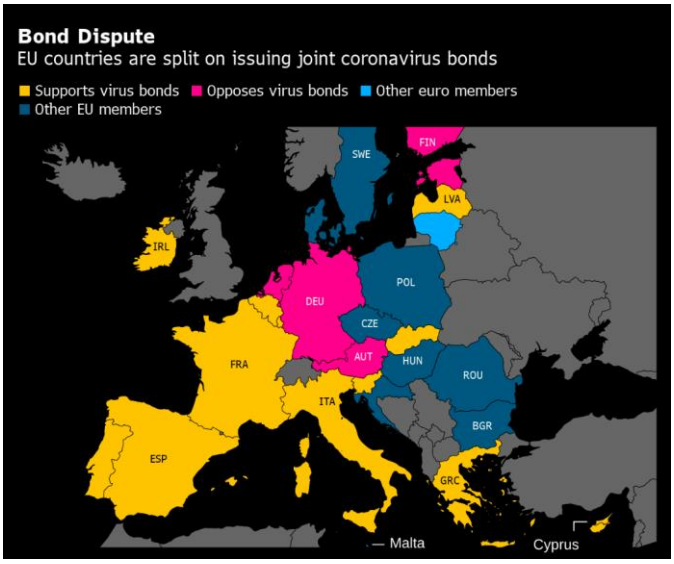

मौजूदा तंत्र:

- यूरोज़ोन संयुक्त रूप से अपने राहत पैकेज निधि, यूरोपीय स्थिरता तंत्र के माध्यम से ऋण जारी करता है, जो कि यूरोज़ोन सरकारों द्वारा प्रदान की गई भुगतान-योग्य और प्रतिदेय पूंजी की सुरक्षा के खिलाफ बाजार पर उधार लेता है।
- यूरोपीय आयोग ने ग्रीस, आयरलैंड और पुर्तगाल के राहत पैकेज की सहायता के लिए यूरोपीय वित्तीय स्थिरता तंत्र (ई.एफ.एस.एम.) के माध्यम से ऋण जारी किया है।
- सभी 27 यूरोपीय संघ देशों ने ई.एफ.एस.एम. ऋण को ब्लॉक के संयुक्त दीर्घकालिक बजट के माध्यम से वापस किया है। यूरोपीय निवेश बैंक (ई.आई.बी.) उधार ले रहा है।
- ई.आई.बी., ईयू की निवेश शाखा, यूरोपीय संघ की सरकारों के स्वामित्व में है और प्रत्येक वर्ष लगभग 60 बिलियन यूरो ऋण जारी करती है, जो विभिन्न परियोजनाओं के लिए ऋण देती है।

टॉपिक- जी.एस. पेपर 2- अंतर्राष्ट्रीय संगठन

स्रोत- इंडियन एक्सप्रेस

विश्व स्वास्थ्य संगठन वित्तपोषण

खबरों में क्यों है?

- हाल ही में, राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यू.एच.ओ.) को अमेरिकी वित्तपोषण को बंद करने की धमकी दी थी, जिसमें कहा गया था कि अंतर्राष्ट्रीय समूह ने कोरोनोवायरस महामारी पर "कॉल को मिस" किया था। वर्तमान में, संयुक्त राज्य अमेरिका,

विश्व स्वास्थ्य संगठन का सबसे बड़ा योगदानकर्ता है, जो कुल वित्तपोषण का 14.67 प्रतिशत योगदान देता है।

डब्ल्यू.एच.ओ. के लिए वित्तपोषण जुटाने हेतु चार तरह के योगदान हैं। ये हैं:

a. मूल्यांकन योगदान
b. निर्दिष्ट स्वैच्छिक योगदान
c. प्रमुख स्वैच्छिक योगदान
d. पी.आई.पी. योगदान

डब्ल्यू.एच.ओ. की वेबसाइट के अनुसार, योगदान की इस प्रकार व्याख्या की जा सकती है:

a. मूल्यांकन योगदान, संगठन के सदस्य बनने के लिए देश द्वारा देय राशि हैं। प्रत्येक सदस्य राज्य द्वारा भुगतान की जाने वाली राशि की गणना देश की धन और जनसंख्या के सापेक्ष की जाती है।
b. स्वैच्छिक योगदान, सदस्य राज्यों (उनके मूल्यांकन योगदान के अतिरिक्त) या अन्य भागीदारों से प्राप्त होता है। वे लचीले से लेकर अत्यधिक निर्धारित हो सकते हैं।
c. प्रमुख स्वैच्छिक योगदान, कम अच्छी तरह से वित्त पोषित गतिविधियों को संसाधनों के बेहतर प्रवाह से लाभान्वित करने और तत्काल कार्यान्वयन में बाधा उत्पन्न करने की अनुमति देता है जो तब उत्पन्न होता है जब तत्काल वित्तपोषण की कमी होती है।
d. इन्फ्लूएंजा वायरस को मानव महामारी क्षमता के साथ साझा करने में सुधार लाने और उन्हें विकसित करने और विकासशील देशों को टीके और अन्य महामारी की आपूर्ति में वृद्धि करने के लिए 2011 में महामारी इन्फ्लुएंजा तैयारी (पी.आई.पी.) योगदान शुरू किया गया था।

कुछ विशेषताएं

- हाल के वर्षों में, डब्ल्यू.एच.ओ. में मूल्यांकन योगदान में गिरावट आई है और अब इसके वित्तपोषण के एक-चौथाई से भी कम हिस्सा है।
- ये फंड डब्ल्यू.एच.ओ. के लिए महत्वपूर्ण हैं क्योंकि वे एक स्तर की भविष्यवाणी करते हैं और एक संकीर्ण दाता आधार पर निर्भरता को कम करते हैं।
- शेष धन के अधिकांश के लिए स्वैच्छिक योगदान करते हैं।

वर्तमान वित्तपोषण प्रारूप

- 2019 की चौथी तिमाही के दौरान, कुल योगदान 5.62 बिलियन अमरीकी डॉलर के लगभग था, जिसमें से 956 मिलियन अमेरिकी डॉलर मूल्यांकन योगदान के, 4.38 बिलियन अमेरिकी डॉलर विशिष्ट स्वैच्छिक योगदान के, 160 मिलियन अमेरिकी डॉलर प्रमुख स्वैच्छिक योगदान के और 178 मिलियन अमेरिकी डॉलर पी.आई.पी. योगदान के थे।

टॉपिक- जी.एस. पेपर 2- गवर्नेंस

स्रोत- द हिंदू

रासायनिक हथियार निषेध संगठन (ओ.पी.सी.डब्ल्यू.)

खबरों में क्यों है?

- वैश्विक रासायनिक हथियार प्रहरी के रूप में माने जाने वाले ओ.पी.सी.डब्ल्यू. ने पहली बार स्पष्ट रूप से जहरीले हमलों के लिए सीरिया को दोषी ठहराया है, इसमें कहा गया है कि राष्ट्रपति बशर अल-असद की वायु सेना ने 2017 में तीन बार नर्व गैस सरीन और क्लोरीन का इस्तेमाल किया था।

रासायनिक हथियार निषेध संगठन के संदर्भ में जानकारी

- यह एक अंतरसरकारी संगठन है और रासायनिक हथियार सम्मेलन के लिए कार्यान्वयन निकाय है, जो 1997 से प्रभावी हुआ था।

मिशन

- ओ.पी.सी.डब्ल्यू. का मिशन रासायनिक हथियारों से मुक्त दुनिया के अपने दृष्टिकोण और उनके उपयोग के खतरे को प्राप्त करने के लिए रासायनिक हथियार सम्मेलन के प्रावधानों को लागू करना है। यह रासायनिक हथियारों को स्थायी रूप से और मौखिक रूप से समाप्त करने के वैश्विक प्रयास की देखरेख करता है।
- इसका मुख्यालय नीदरलैंड के हेग में स्थित है।

सदस्यता:

- सम्मेलन हेतु राज्य पार्टियां: 193
- हस्ताक्षरकर्ता राज्य: 1
- गैर-हस्ताक्षरकर्ता राज्य: 3

यह कैसे काम करता है?

ओ.पी.सी.डब्ल्यू. के सदस्य राज्य युद्ध के लिए पुन: रसायनिक हमलों की रोकथाम के सामूहिक लक्ष्य को साझा करते हैं, जिससे अंतर्राष्ट्रीय सुरक्षा मजबूत होती है। इसके लिए, सम्मेलन में चार प्रमुख प्रावधान शामिल हैं:

- ओ.पी.सी.डब्ल्यू. द्वारा अंतर्राष्ट्रीय सत्यापन के अंतर्गत सभी मौजूदा रासायनिक हथियारों को नष्ट करना
- रासायनिक हथियारों को फिर से उभरने से रोकने के लिए रासायनिक उद्योग की निगरानी करना
- रासायनिक खतरों के खिलाफ राज्यों की पार्टियों को सहायता और सुरक्षा प्रदान करना
- अंतर्राष्ट्रीय सहयोग को बढ़ावा देना और रसायन विज्ञान के शांतिपूर्ण उपयोग को बढ़ावा देना

नोबेल शांति पुरस्कार

- ओ.पी.सी.डब्ल्यू. को वर्ष 2013 में सीरिया के नागरिक क्षेत्र में सबसे हाल ही में रासायनिक हथियारों को खत्म करने के व्यापक प्रयासों के लिए "नोबेल शांति पुरस्कार" से सम्मानित किया गया था।

टॉपिक- जी.एस. पेपर 2- अंतर्राष्ट्रीय संस्थान

स्रोत- ए.आई.आर.

आसियान विशेष शिखर सम्मेलन

खबरों में क्यों है?

- हाल ही में, वियतनाम कोरोनोवायरस वैश्विक महामारी के कारण वीडियो-सम्मेलन के माध्यम से एक विशेष दक्षिणपूर्व एशियाई राष्ट्र संगठन (आसियान) की अध्यक्षता कर रहा है।

आसियान विशेष शिखर सम्मेलन के संदर्भ में जानकारी

- इस शिखर सम्मेलन की अध्यक्षता एच. ई. न्गूयेन जुआन फुक, वियतनाम के प्रधानमंत्री द्वारा अपनी क्षमता में आसियान के अध्यक्ष के रूप में की गई है।
- शिखर सम्मेलन में, वायरल के प्रकोप के प्रतिकूल प्रभावों और लोगों की भलाई और वैश्विक सामाजिक-आर्थिक विकास पर चिंता व्यक्त की गई है।

शिखर सम्मेलन की मुख्य विशेषताएं

- राष्ट्रों के प्रमुखों ने एकजुट रहने का संकल्प लिया है और 'एकजुट और उत्तरदायी आसियान' की भावना में दृढ़ संकल्प और प्रतिबद्धता की पुष्टि की है।
- डब्ल्यू.एच.ओ. के साथ प्रतिबद्ध होकर काम करने का संकल्प लिया है। सार्वजनिक स्वास्थ्य सहयोग उपायों को मजबूत करने के लिए सदस्य राज्यों द्वारा लिए गए वास्तविक समय की स्थिति और महामारी संबंधी प्रतिक्रिया उपायों के बारे में जानकारी का समयबद्ध साझाकरण और पारदर्शी आदान-प्रदान करें, जिससे कि अन्य चीजों के बीच महामारी को नियंत्रित किया जा सके और लोगों की रक्षा की जा सके।
- कोविड-19 के खिलाफ आसियान की सामूहिक लड़ाई में हमारे लोगों की भलाई को प्राथमिकता दें।
- संकट की स्थिति में आसियान सदस्य देशों के नागरिकों को तीसरे देश में आसियान मिशन द्वारा आपातकालीन सहायता के प्रावधान पर आसियान दिशानिर्देशों के प्रभावी संचालन को प्रोत्साहित करना।
- सदस्य देश व्यापार और निवेश के लिए आसियान के बाजारों को खुला रखने के लिए प्रतिबद्ध हैं और आसियान के सदस्य देशों के बीच और आसियान के बाहरी साझेदारों के साथ सहयोग बढ़ाते हैं।
- आसियान प्लस थ्री इमरजेंसी राइस रिजर्व (APTERR) की खाद्य सुरक्षा उपयोगिता सुनिश्चित करने का प्रयास करता है।

- कोविड-19 के प्रभाव से पीड़ित लोगों, विशेष रूप से सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों (MSMEs) और कमजोर समूहों और व्यवसायों की मदद करने सहित नीति प्रोत्साहन के माध्यम से विश्वास को बढ़ावा देने और क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था की स्थिरता में सुधार करने के लिए उपयुक्त उपायों को लागू करना।
- सदस्यों ने सीखे गए सबक साझा करने, आसियान की कनेक्टिविटी, पर्यटन, सामान्य व्यवसाय और सामाजिक गतिविधियों को बहाल करने, संभावित आर्थिक मंदी को रोकने के लिए एक पोस्ट-महामारी बहाली योजना के विकास को बढ़ावा किया है।
- मौजूदा उपलब्ध निधियों के पुनः आवंटन में सहायता करना और कोविड-19 के खिलाफ सहयोग की सुविधा के लिए आसियान के भागीदारों से तकनीकी और वित्तीय सहायता को प्रोत्साहित करना है, जिसमें कोविड-19 आसियान प्रतिक्रिया कोष की प्रस्तावित स्थापना शामिल है।

दक्षिणपूर्व एशियाई राष्ट्र संगठन (आसियान) के संदर्भ में जानकारी

- आसियान, एक क्षेत्रीय समूह है, जिसे 1967 में बैंकॉक घोषणा पत्र पर हस्ताक्षर के साथ स्थापित किया गया था।
- सदस्य देश: इंडोनेशिया, थाईलैंड, सिंगापुर, मलेशिया, फिलीपींस, वियतनाम, म्यांमार, कंबोडिया, ब्रुनेई और लाओस हैं।
- इसका मुख्यालय इंडोनेशिया के जकार्ता में स्थित है।
- भारत, जो कि आसियान का एफ.टी.ए. भागीदार भी है, भारत नवंबर, 2019 में आर.सी.ई.पी. से बाहर हो गया है।

आर.सी.ई.पी. क्या है?

- क्षेत्रीय व्यापक आर्थिक भागीदारी (आर.सी.ई.पी.), दक्षिणपूर्व एशियाई राष्ट्र संगठन (आसियान) के सदस्य राज्यों और इसके मुक्त व्यापार समझौते (एफ.टी.ए.) के भागीदारों के बीच एक प्रस्तावित समझौता है।
- इस संधि का उद्देश्य उत्पाद और सेवाओं, बौद्धिक संपदा आदि में व्यापार को शामिल करना है।
- पिछले वर्ष नवंबर, 2019 में, भारत ने उस समझौते में असंतुलन को लेकर चीन और अन्य आसियान देशों के साथ आर.सी.ई.पी. समझौते में शामिल नहीं होने का फैसला किया था।
- आर.सी.ई.पी. का लक्ष्य 16 देशों के साथ एक एकीकृत बाजार का निर्माण करना है, जिससे कि इन देशों में से प्रत्येक के उत्पाद और सेवाएं इस पूरे क्षेत्र में आसानी से उपलब्ध हो सके।
- भारत, आर.सी.ई.पी. व्यापार समझौते में शामिल होने के लिए अनिच्छुक था क्योंकि इसके उद्योग चीन के साथ प्रतिस्पर्धा करने में असमर्थ होंगे और चीनी सामान की भारतीय बाजारों में बाढ़ आ जाएगी। भारत के किसान भी चिंतित थे कि वे वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धा करने में असमर्थ होंगे।

अन्य संबंधित शिखर सम्मेलन

a. आसियान प्लस थ्री

यह एक मंच है, जिसे 1997 में दक्षिण पूर्व एशियाई राष्ट्र संगठन (आसियान) और चीन, दक्षिण कोरिया और जापान के तीन पूर्वी एशियाई देशों के बीच सहयोग के समन्वयक के रूप में कार्य करने के लिए स्थापित किया गया था।

b. **पूर्वी एशिया शिखर सम्मेलन**

यह 2005 में स्थापित किया गया था। इसमें आठ सदस्यों: ऑस्ट्रेलिया, चीन, जापान, भारत, न्यूजीलैंड, कोरिया गणराज्य, रूस और संयुक्त राज्य अमेरिका के साथ आसियान देशों के दस सदस्य राष्ट्र शामिल हैं।

टॉपिक- जी.एस. पेपर 2- अंतर्राष्ट्रीय संगठन

स्रोत- टी.ओ.आई.

खाद्य संकट पर वैश्विक रिपोर्ट 2020

खबरों में क्यों है?

- ग्लोबल नेटवर्क ने खाद्य संकट के खिलाफ खाद्य संकट पर वैश्विक रिपोर्ट 2020 जारी की है।
- रिपोर्ट एक सर्वसम्मति-आधारित और बहु-साझेदार विश्लेषणात्मक प्रक्रिया का परिणाम है, जिसमें 16 अंतर्राष्ट्रीय मानवीय और विकास भागीदार शामिल हैं।

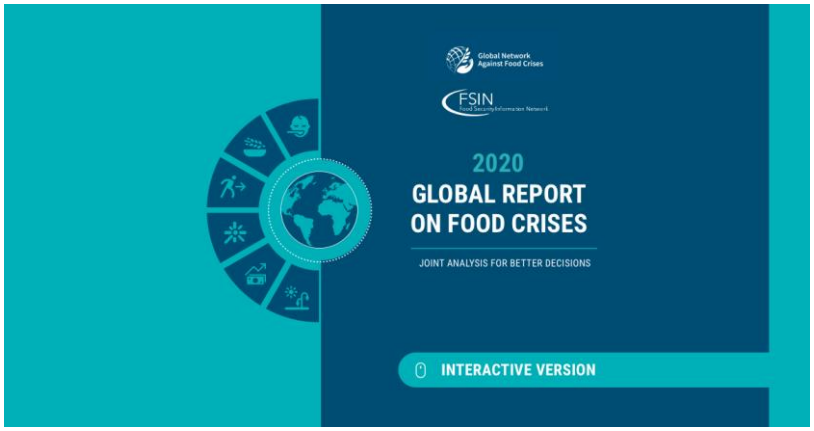

वैश्विक रिपोर्ट के मुख्य निष्कर्ष

- खाद्य संकट के खिलाफ ग्लोबल नेटवर्क की रिपोर्ट बताती है कि वर्ष 2019 के अंत में 55 देशों और क्षेत्रों के 135 मिलियन लोगों ने तीव्र खाद्य असुरक्षा का अनुभव किया है। इसके अतिरिक्त, रिपोर्ट में शामिल किए गए 55 खाद्य-संकट वाले देशों में 75 मिलियन बच्चें अविकसित हैं और 17 मिलियन वर्ष 2019 में बर्बादी से पीड़ित हुए हैं।
- यह वर्ष 2017 में रिपोर्ट के पहले संस्करण के बाद से नेटवर्क द्वारा प्रलेखित तीव्र खाद्य असुरक्षा और कुपोषण का उच्चतम स्तर है।
- रिपोर्ट में शामिल किए गए 135 मिलियन लोगों में से आधे (73 मिलियन) से अधिक लोग अफ्रीका, 43 लाख मध्य पूर्व और एशिया में, 18.5 मिलियन लैटिन अमेरिका और कैरिबियन में रहते हैं।

तीव्र खाद्य असुरक्षा के संदर्भ में जानकारी

- तीव्र खाद्य असुरक्षा, वह है जब किसी व्यक्ति की पर्याप्त भोजन का उपभोग करने की अक्षमता उसके जीवन या आजीविका को तत्काल खतरे में डालती है।
- यह एकीकृत खाद्य सुरक्षा चरण वर्गीकरण (आई.पी.सी.) और कैडर हार्मोलाइज़ जैसे चरम भुखमरी के अंतर्राष्ट्रीय स्वीकृत उपायों पर आधारित है।
- खाद्य संकट के खिलाफ ग्लोबल नेटवर्क की रिपोर्ट प्रमुख निष्कर्षों के साथ, भागीदारों द्वारा बयान और इसकी सामग्री को अनपैक करने वाले मल्टीमीडिया उत्पादों पर अब उपलब्ध हैं:

खाद्य संकट के खिलाफ वैश्विक नेटवर्क

- इसे वर्ष 2016 के विश्व मानवीय शिखर सम्मेलन (डब्ल्यू.एच.एस.) के दौरान यूरोपीय संघ, खाद्य एवं कृषि संगठन (एफ.ए.ओ.) और विश्व खाद्य कार्यक्रम (डब्ल्यू.एफ.पी.) द्वारा लॉन्च किया गया था।
- इसका उद्देश्य मानवीय और विकास के दृष्टिकोण से खाद्य संकटों का मुकाबला करना है और हितधारकों के बीच समन्वय को बढ़ावा देने और परियोजनाओं के कार्यान्वयन द्वारा इसके मूल कारणों से निपटना है।

टॉपिक- जी.एस. पेपर 2- खाद्य सुरक्षा
स्रोत- यूनिसेफ और टी.ओ.आई.

यू.एन.75 पहल

खबरों में क्यों है?

- संयुक्त राष्ट्र की 75वीं वर्षगांठ पहल (यू.एन.75) ने दुनिया भर के लोग अंतर्राष्ट्रीय सहयोग को कैसे देखते हैं, इस संदर्भ में 2020 के पहले तीन महीनों में एकत्र आंकड़ों से प्रारंभिक निष्कर्ष निकाला है।

डेटा की मुख्य विशेषताएं

- 'हमारे प्रयासों को संयोजित करने का संकल्प: यू.एन.75 सर्वेक्षण और संवाद का प्रारंभिक मूल्यांकन' नामक यू.एन.75 कार्यालय के प्रकाशन के शीर्षक के अनुसार, वर्ष 2020 के प्रारंभ में एकत्र किए गए आंकड़े इंगित करते हैं कि:

a. वैश्विक रुझानों के प्रबंधन पर एक साथ काम करने के लिए देशों का भारी समर्थन
b. फरवरी के अंत में समर्थन बढ़ना शुरू हो जाएगा, जो दुनिया भर में कोविड-19 के प्रसार के साथ मेल खाता है।

- प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण यह भी दर्शाता है कि लोगों का मानना है कि जलवायु और पर्यावरण, मानवता के भविष्य को सबसे अधिक प्रभावित करेंगे।

यू.एन.75 पहल के संदर्भ में जानकारी

- संयुक्त राष्ट्र ने वर्ष 2019 में यू.एन.75 पहल की शुरुआत की है।
- इसका उद्देश्य एक संवाद शुरू करके वर्ष 2045 के लिए एक वैश्विक दृष्टिकोण का निर्माण करना है और कई चुनौतियों का सामना करने के बावजूद हम कैसे बेहतर दुनिया बना सकते हैं, इस पर कार्य करना है।
- संवाद के माध्यम से उत्पन्न दृष्टिकोण और विचार सितंबर, 2020 में महासभा के 75वें सत्र के दौरान प्रस्तुत किए जाएंगे।

संयुक्त राष्ट्र के संदर्भ में जानकारी

- यह द्वितीय विश्व युद्ध के बाद वर्ष 1945 में स्थापित एक अंतर्राष्ट्रीय संगठन है।
- इसके घोषणापत्र को 26 जून, 1945 को सैन फ्रांसिस्को में हस्ताक्षरित किया गया था और 51 देशों द्वारा घोषणापत्र पर हस्ताक्षर करने के बाद 24 अक्टूबर, 1945 को यह अस्तित्व में आया था।
- इसके पूर्ववर्ती, 1919 में वर्साय की संधि द्वारा बनाए गए राष्ट्र संघ 1946 में भंग कर दिया गया था।
- इसका मिशन अंतर्राष्ट्रीय शांति और सुरक्षा बनाए रखना, राष्ट्रों के बीच मैत्रीपूर्ण संबंधों को विकसित करना और सामाजिक प्रगति, बेहतर जीवन स्तर और मानवाधिकारों को बढ़ावा देना है।
- इसका मुख्यालय न्यूयॉर्क में स्थित है और इसकी आधिकारिक भाषाएं- अरबी, चीनी, अंग्रेजी, फ्रेंच, स्पेनिश, रूसी हैं।
- सदस्य- 193 (नवीनतम सदस्य दक्षिण सूडान)
- महासचिव- एंटोनियो गुटेरेस (पुर्तगाल)

इसके छह प्रमुख अंग हैं:

a. महासभा
b. सुरक्षा परिषद
c. आर्थिक एवं सामाजिक परिषद
d. न्यास परिषद
e. अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय
f. संयुक्त राष्ट्र सचिवालय

टॉपिक- जी.एस. पेपर 2- अंतर्राष्ट्रीय संगठन

स्रोत- यूएन.ऑर्ग

वैश्विक आतंकवाद सूचकांक (जी.टी.आई.) 2019

खबरों में क्यों है?

- नीति आयोग द्वारा संकलित एक रिपोर्ट ने अर्थशास्त्र एवं शांति संस्थान द्वारा भारत को सातवें सबसे खराब आतंकवाद प्रभावित देश के रूप में स्थान प्रदान करने हेतु अपनाई गई कार्यप्रणाली पर सवाल उठाया है।

सूचकांक की मुख्य विशेषताएं

- भारत, वार्षिक वैश्विक आतंकवाद सूचकांक (जी.टी.आई.) 2019 में पिछले वर्ष आठवें से सातवें स्थान पर आ गया है।
- इससे आगे के देश अफगानिस्तान, इराक, नाइजीरिया, सीरिया, पाकिस्तान और सोमालिया हैं। पहले से छठें स्थान वाले देश कांगो लोकतांत्रिक गणराज्य, दक्षिण सूडान, सूडान, बुर्किना फासो, फिलिस्तीन और लेबनान हैं।

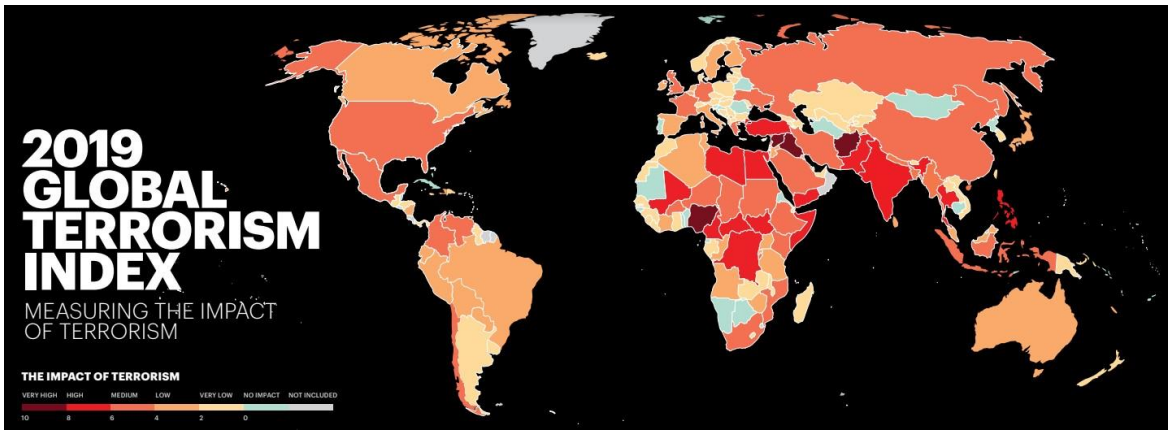

वैश्विक आतंकवाद सूचकांक (जी.टी.आई.) 2019 के संदर्भ में जानकारी

- यह रिपोर्ट अर्थशास्त्र एवं शांति संस्थान (आई.ई.पी.) द्वारा प्रतिवर्ष प्रकाशित की जाती है।
- सूचकांक वर्ष 2000 के बाद से आतंकवाद में प्रमुख वैश्विक रूझानों और प्रारूपों का एक व्यापक सारांश प्रदान करता है।
- यह आतंकवाद के प्रभाव के संदर्भ में देशों को क्रमिक स्थान प्रदान करने के लिए एक समग्र स्कोर का जारी करता है।
- सूचकांक, आतंकवाद के प्रभाव की एक स्पष्ट तस्वीर बनाने, रूझान की व्याख्या करने और शोधकर्ताओं और नीति निर्माताओं द्वारा विश्लेषण के लिए एक डेटा श्रृंखला प्रदान के लिए आतंकवादी हमलों से संबंधित कई कारकों को संयोजित करता है।

सूचकांक में प्रयुक्त डेटाबेस

- यह सूचकांक, वैश्विक आतंकवाद डेटाबेस (जी.टी.डी.) के आंकड़ों पर आधारित है।
- जी.टी.डी. को मैरीलैंड विश्वविद्यालय में आतंकवाद और आंतकवाद के लिए प्रतिक्रियाओं के अध्ययन (स्टार्ट) हेतु राष्ट्रीय संघ द्वारा एकत्र किया जाता है और उसकी तुलना की जाती है।
- इसने आतंकवाद के 190,000 मामलों को संहिताबद्ध किया है।

इन स्कोरों का इस्तेमाल कहां होता है?

इन स्कोरों का प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से विभिन्न सूचकांकों में उपयोग किया जाता है।

- वॉक फ्री फाउंडेशन द्वारा प्रकाशित वैश्विक शांति सूचकांक, वैश्विक गुलामी रिपोर्ट में प्रत्यक्ष रूप से सूचकांक के स्कोर का उपयोग किया गया था।

- इसका उपयोग अप्रत्यक्ष रूप से विश्व आर्थिक मंच की यात्रा एवं पर्यटन प्रतिस्पर्धा और वैश्विक प्रतिस्पर्धा सूचकांक और आर्थिक खुफिया इकाई द्वारा सुरक्षित शहर सूचकांक के संकलन में देश के स्कोर की गणना करने के लिए किया जाता है।

अर्थशास्त्र एवं शांति संस्थान के संदर्भ में जानकारी

- अर्थशास्त्र एवं शांति संस्थान (आई.ई.पी.), एक वैश्विक प्रबुद्ध मंडल है, जिसका मुख्यालय ऑस्ट्रेलिया के सिडनी में स्थित है, इसकी शाखाएं न्यूयॉर्क शहर, मेक्सिको सिटी और हेग में स्थित हैं।
- इसने वैश्विक शांति सूचकांक भी प्रकाशित किया था।

नोट: वर्ष 2017 में, भारत ने ऑस्ट्रेलिया की वॉक फ्री फाउंडेशन द्वारा संकलित एक वैश्विक गुलामी रिपोर्ट में अपनी रैंकिंग को चुनौती देते हुए अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन (आई.एल.ओ.) को लिखा था।

टॉपिक- जी.एस. पेपर 3- महत्वपूर्ण सूचकांक

स्रोत- द हिंदू

आर्थिक और सामाजिक विकास सम्बन्धी घटनाएँ

फुली एक्सेसिबल रूट (एफ.ए.आर.)

खबरों में क्यों है?

- भारतीय रिज़र्व बैंक (आर.बी.आई.) ने गैर-निवासी भारतीयों (एन.आर.आई.) को निर्दिष्ट सरकारी बॉन्ड में निवेश करने में सक्षम बनाने हेतु फुली एक्सेसिबल रूट (एफ.ए.आर.) नामक एक पृथक चैनल की शुरूआत की है।
- ये विशेष प्रतिभूतियाँ परिपक्वता तक किसी विदेशी पोर्टफोलियो निवेशक (एफ.पी.आई.) सीमा को आकर्षित नहीं करेंगी और यह भारतीय जी-सेक की ओर पहला कदम है, जिसे वैश्विक बॉन्ड सूचकांकों में सूचीबद्ध किया जाएगा क्यों कि केंद्र, विदेशी बाजारों में सस्ती तरलता को आकर्षित करने के लिए प्रयासरत है।

फुली एक्सेसिबल रूट के संदर्भ में जानकारी

- योग्य निवेशक किसी भी निवेश सीमा के अधीन हुए बिना निर्दिष्ट सरकारी प्रतिभूतियों में निवेश कर सकते हैं।
- यह योजना दो मौजूदा मार्गों के साथ संचालित होगी।
- मध्यम अवधि रूपरेखा (एम.टी.एफ.)
- स्वैच्छिक प्रतिधारण मार्ग (वी.आर.आर.)

पृष्ठभूमि

- यह कदम केंद्रीय बजट 2020-21 में की गई घोषणा का अनुसरण करता है कि केंद्र सरकार की प्रतिभूतियों की कुछ निश्चित निर्दिष्ट श्रेणियां बिना किसी प्रतिबंध के पूर्ण रूप से अनिवासी निवेशकों के लिए खोली जाएंगी।
- तदनुसार, भारत सरकार द्वारा जारी प्रतिभूतियों में गैर-निवासियों द्वारा निवेश के लिए एक अलग मार्ग अर्थात फुली एक्सेसिबल रूट (एफ.ए.आर.) शुरू किया गया है।
- इससे गैर-निवासियों को भारत सरकार के प्रतिभूति बाजारों तक पहुंच में आसानी होगी और वैश्विक बॉन्ड सूचकांकों में समावेशन की सुविधा होगी।
- इससे सरकारी बॉन्डों में स्थायी विदेशी निवेश के अंतर्वाह को बढ़ावा मिलेगा।

टॉपिक- जी.एस. पेपर 3- अर्थशास्त्र

स्रोत- बिजनेस स्टैंडर्ड

मूल प्रमाणपत्र

खबरों में क्यों है?

- हाल ही में, वाणिज्य मंत्रालय ने निर्यातकों के लिए 'मूल प्रमाण पत्र' जारी करने के लिए एक ऑनलाइन प्लेटफॉर्म बनाया है।

मूल प्रमाण पत्र क्या है?

- मूल प्रमाण पत्र (सी.ओ.), एक दस्तावेज है जिसमें यह घोषित किया जाता है कि किस देश में उपभोक्ता उत्पाद या वस्तु का निर्माण किया गया था। मूल प्रमाण पत्र में उत्पाद, उसके गंतव्य और निर्यात के देश के बारे में जानकारी शामिल है।
- सीमा पार व्यापार के लिए कई संधि समझौतों द्वारा आवश्यक है, सी.ओ. एक महत्वपूर्ण फॉर्म है क्योंकि यह निर्धारित करने में मदद कर सकता है कि कुछ निश्चित उत्पाद आयात के योग्य हैं या उत्पाद, शुल्कों के अधीन हैं।

मूल प्रमाण पत्र के दो प्रकार

सी.ओ. के दो प्रकार: गैर-अधिमान्य और अधिमान्य हैं।

- **गैर-अधिमान्य सी.ओ**. को "साधारण सी.ओ." के रूप में भी जाना जाता है, यह इंगित करता है कि उत्पाद, देशों के बीच व्यापार समझौते के अंतर्गत कम टैरिफ या टैरिफ-मुक्त उपचार के लिए योग्य नहीं है। समान प्रकार से, **अधिमान्य सी.ओ**. घोषित करता है कि उत्पाद इस योग्य हैं।

महत्व

- मुक्त व्यापार समझौतों (एफ.टी.ए.) के अंतर्गत शुल्क रियायतों का दावा करने के लिए यह दस्तावेज़ महत्वपूर्ण है।
- यह प्रमाण पत्र, यह साबित करने के लिए आवश्यक है कि उनका माल कहाँ से आता है।

टॉपिक- जी.एस. पेपर 3- अर्थशास्त्र

स्रोत- ई.टी.

बैंकएसॉरेंस समझौता

खबरों में क्यों है?

- बीमा विनियामक, भारत के बीमा विनियामक एवं विकास प्राधिकरण (IRDAI) ने हाल ही में मेगा बैंक विलय की कवायद से उभरे चार बैंकों को उनके साथ सम्मिलित ऋणदाताओं के मौजूदा बैंकएसॉरेंस समझौते के साथ एक वर्ष तक जारी रखने की अनुमति प्रदान की है।

बैंकएसॉरेंस के संदर्भ में जानकारी

- इसका अर्थ बैंकों के माध्यम से बीमा उत्पाद बेचना है। बैंक और बीमा कंपनी एक साझेदारी करती हैं, जिसमें बैंक अपने ग्राहकों को बीमा कंपनी के बीमा उत्पाद बेचता है।

दोहरे-लाभ

- एक ओर, बैंक, बीमा कंपनी से ब्याज की आय के अतिरिक्त शुल्क राशि (गैर-ब्याज आय) अर्जित करता है जब कि दूसरी ओर, बीमा फर्म अपनी बाजार पहुंच और ग्राहकों को बढ़ाती है।

नियम

- भारत सरकार अधिसूचना (बैंकिंग विनियमन अधिनियम) दिनांक 3 अगस्त, 2000 ने बैकएसॉरेंस अनुमति प्रदान की है।
- बैकएसॉरेंस विनियमों के अनुसार, एक बैंक केवल तीन: जीवन, सामान्य और स्वास्थ्य बीमा कंपनियों के उत्पादों का विपणन कर सकता है।

बीमा विनियामक एवं विकास प्राधिकरण के संदर्भ में जानकारी

- यह एक स्वायत्त, संवैधानिक निकाय है जो भारत में बीमा और पुन: बीमा उद्योगों को विनियमित और संवर्धित करता है।
- यह बीमा विनियामक एवं विकास प्राधिकरण अधिनियम, 1999 द्वारा गठित किया गया था, जो भारत सरकार द्वारा पारित संसद का एक अधिनियम है।
- इरडा, 10 सदस्यीय निकाय है, जिसमें भारत सरकार द्वारा नियुक्त अध्यक्ष, पांच पूर्णकालिक और चार अंशकालिक सदस्य शामिल हैं।

टॉपिक- जी.एस. पेपर 3- अर्थशास्त्र

स्रोत- द हिंदू

हेलीकाप्टर मनी

खबरों में क्यों है?

- हाल ही में, तेलंगाना के मुख्यमंत्री ने भारतीय रिजर्व बैंक को सुझाव दिया है कि वह राज्य सरकारों को वर्तमान संकट से बचाने और भारत में आर्थिक गतिविधि को शुरू करने में मदद करने के लिए हेलीकॉप्टर मनी की अवधारणा को अपना सकता है।

हेलीकाप्टर मनी के संदर्भ में जानकारी

- हेलीकॉप्टर मनी शब्द को अमेरिकी अर्थशास्त्री मिल्टन फ्राइडमैन ने अपने पेपर "द ऑप्टिमेट क्वांटिटी ऑफ मनी" में गढ़ा था।
- यह एक अपरंपरागत मौद्रिक नीति उपकरण को संदर्भित करता है जिसका उद्देश्य बड़ी मात्रा में धन की छपाई करके और इसे जनता में वितरित करके अर्थव्यवस्था को पटरी पर लाना है।

लाभ: मांग वृद्धि में वृद्धि| अन्य के बीच मुद्रास्फीति में वृद्धि

चुनौतियां

- इससे अतिस्फीति हो सकती है।
- अन्य के बीच मुद्रा का अवमूल्यन

टॉपिक- जी.एस. पेपर 3-अर्थशास्त्र

स्रोत- ई.टी.

विश्व आर्थिक आउटलुक रिपोर्ट 2020

खबरों में क्यों है?

- हाल ही में, अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष ने विश्व आर्थिक आउटलुक रिपोर्ट जारी की है।

विश्व आर्थिक आउटलुक रिपोर्ट के संदर्भ में जानकारी

- यह रिपोर्ट वर्ष में दो बार प्रकाशित की जाती है।
- इसका उद्देश्य सदस्य देशों के आर्थिक विकास का विश्लेषण और पूर्वानुमान प्रदान करना और जोखिमों और अनिश्चितता पर प्रकाश डालना है।

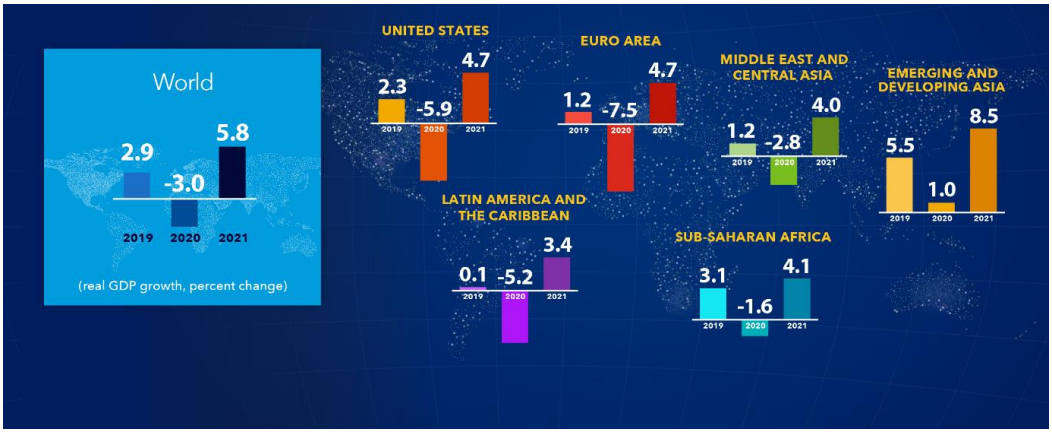

रिपोर्ट की मुख्य विशेषताएं

- रिपोर्ट में कहा गया है कि वैश्विक महामारी के परिणामस्वरूप, वैश्विक अर्थव्यवस्था के वर्ष 2020 में तेजी से -3 प्रतिशत तक घटने का अनुमान है, जो 2008-09 के वित्तीय संकट के दौरान की गिरावट से बेहद खराब है।
- आई.एम.एफ. ने अपने 2020 विश्व आर्थिक आउटलुक में, 2021 में आंशिक रूप से पलटाव की भविष्यवाणी की है, जिसमें वैश्विक अर्थव्यवस्था के 5.8 प्रतिशत की दर से बढ़ने का अनुमान है।
- अमेरिकी अर्थव्यवस्था वर्ष 2020 में 5.9 प्रतिशत घटेगी, फंड के सर्वश्रेष्ठ परिदृश्य के अंतर्गत वर्ष 2021 में 4.7 प्रतिशत की वृद्धि के साथ पलटाव का अनुमान है।
- वर्ष 2020 में यूरोजोन अर्थव्यवस्थाओं में 7.5 प्रतिशत की गिरावट आएगी, जिसमें अत्यधिक प्रभाव के साथ इटली की जी.डी.पी. में 9.1 प्रतिशत की गिरावट और स्पेन में 8.0 प्रतिशत की गिरावट और जर्मनी में 7.0 प्रतिशत की गिरावट और फ्रांस में 7.2 प्रतिशत की गिरावट होगी।
- इसने भविष्यवाणी की है कि यूरो-क्षेत्र की अर्थव्यवस्थाएं वर्ष 2021 में 4.7 प्रतिशत की अमेरिकी विकास दर से मेल खाएंगी।
- चीन की अर्थव्यवस्था वर्ष 2021 में 9.2 प्रतिशत से बढ़ने का अनुमान है।
- भारत की वर्ष 2020 के वित्तीय वर्ष की वृद्धि के सकारात्मक क्षेत्र में रहने की उम्मीद है, लेकिन लैटिन अमेरिकी अर्थव्यवस्थाएं, जो अभी भी बढ़ते हुए कोरोनोवायरस के प्रकोप का सामना कर रही हैं, उनमें 5.2 प्रतिशत की गिरावट का अनुमान है।

अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष के संदर्भ में जानकारी

- आई.एम.एफ., 189 देशों का एक संगठन है।
- इसका मुख्यालय वाशिंगटन, अमेरिका में स्थित है।
- आई.एम.एफ. की आधिकारिक भाषा- चीनी, अंग्रेजी, फ्रेंच, रूसी, स्पेनिश, अरबी है।

उद्देश्य

यह निरंतर रूप से अंतर्राष्ट्रीय मौद्रिक प्रणाली की स्थिरता सुनिश्चित करना चाहता है:

a. वैश्विक मौद्रिक सहयोग को बढ़ावा देना
b. वित्तीय स्थिरता सुरक्षित करना
c. अंतर्राष्ट्रीय व्यापार की सुविधा प्रदान करना
d. उच्च रोजगार और सतत आर्थिक विकास को बढ़ावा देना
e. पूरे विश्व में गरीबी को कम करना

आई.एम.एफ. द्वारा प्रकाशित अन्य रिपोर्टें

- वैश्विक वित्तीय स्थिरता रिपोर्ट
- राजकोषीय मॉनिटर

टॉपिक- जी.एस. पेपर 3- अर्थशास्त्र

स्रोत- आई.एम.एफ. वेबपेज

अनिश्चित समय के लिए मुद्रा विनिमय

खबरों में क्यों है?

- भारत, डॉलर स्वैप लाइन को सुरक्षित करने के लिए संयुक्त राज्य अमेरिका के साथ काम कर रहा है जो इसके बाहरी खाते के बेहतर प्रबंधन में मदद करेगा और धन के अचानक बहिर्वाह की स्थिति में एक अतिरिक्त सहयोग प्रदान करेगा।

भारत का परिदृश्य

- भारत के पास पहले से ही जापान के साथ 75 बिलियन डॉलर की द्विपक्षीय मुद्रा स्वैप लाइन है, जिसमें चीन के बाद दूसरा सबसे बड़ा डॉलर भंडार है।
- भारतीय रिज़र्व बैंक भी $ 2 बिलियन के कुल कोष के भीतर सार्क क्षेत्र में केंद्रीय बैंकों को इसी तरह की स्वैप लाइनें प्रदान करता है।

एक मुद्रा विनिमय क्या है?

- एक मुद्रा विनिमय, दो देशों के बीच पूर्व निर्धारित नियमों और शर्तों के साथ मुद्राओं (दोनों देशों या किसी भी कठिन मुद्रा) का विनिमय करने हेतु एक समझौता या अनुबंध है। यह हमेशा दो केंद्रीय बैंकों के बीच होता है।
- मुद्रा विनिमय समझौता, द्विपक्षीय या बहुपक्षीय हो सकता है।

मुद्रा विनिमय का क्या उद्देश्य है?

- मुद्रा विनिमय का मुख्य उद्देश्य विदेशी मुद्रा बाजार और विनिमय दर में उतार-चढ़ाव और अन्य जोखिमों से बचना है।
- केंद्रीय बैंक और सरकारें विदेशी मुद्रा की कमी के दौरान पर्याप्त विदेशी मुद्रा सुनिश्चित करने के लिए विदेशी समकक्षों के साथ मुद्रा विनिमय में संलग्न हैं।

सामान्यतः, मुद्रा विनिमय समझौते पांच प्रकार के होते हैं और ये उनकी प्रकृति और विनियमित की गई मुद्राओं की स्थिति पर निर्भर करता है।

a. प्रतिभूतियों के लिए नकदी बनाम नकद के लिए विनिमय नकद
b. विनिमय सशर्त बनाम बिना शर्त विनिमय
c. दोनों तरफ विनिमय आरक्षित मुद्राएं
d. गैर-आरक्षित मुद्रा के लिए विनिमय आरक्षित मुद्रा
e. दोनों तरफ गैर-आरक्षित मुद्राओं का विनिमय करना

संबंधित लाभ क्या हैं?

- ये विनिमय परिचालन, कोई विनिमय दर या अन्य बाजार जोखिम नहीं उठाते हैं, क्योंकि लेनदेन की शर्तें पहले से निर्धारित होती हैं।
- विनिमय दर जोखिम की अनुपस्थिति इस प्रकार की सुविधा का प्रमुख लाभ है।
- यह तीसरी मुद्रा के खिलाफ अस्थिरता के जोखिम को कम करता है और कई मुद्रा विनिमय में शामिल शुल्कों को समाप्त करता है।
- विनिमय समझौते, संभव अल्पकालिक तरलता असमानता को संबोधित करने में मदद करता है और मौजूदा अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय व्यवस्था के पूरक में मदद करेगा।
- बैलेंस ऑफ पेमेंट (बी.ओ.पी.) से उत्पन्न होने वाली कठिनाइयों से निपटने के लिए इस तरह की स्वैप लाइन की उपलब्धता घरेलू मुद्रा पर काल्पनिक हमलों को रोकती है और विनिमय दर की अस्थिरता को प्रबंधित करने की आर.बी.आई. की क्षमता को बहुत अधिक बढ़ा देती है।

नोट: शुरूआती मुद्रा विनिमय, अमेरिकी फेडरल रिजर्व और सेंट्रल बैंक ऑफ फ्रांस के बीच 28 फरवरी, 1962 को हस्ताक्षरित किया गया था।

टॉपिक- जी.एस. पेपर 3- अर्थशास्त्र

स्रोत- द हिंदू

अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा एवं वित्तीय समिति की पूर्ण बैठक

खबरों में क्यों है?

- हाल ही में, केंद्रीय वित्त मंत्री ने वीडियोकांफ्रेंसिंग के माध्यम से अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा एवं वित्तीय समिति (आई.एम.एफ.सी.) की पूर्ण बैठक में भाग लिया है, जो अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (आई.एम.एफ.) की मंत्रिस्तरीय-स्तरीय समिति है।

एक पूर्ण सत्र क्या है?

- पूर्ण सत्र या विस्तृत बैठक, एक सम्मेलन का एक सत्र होता है जिसमें सभी दलों के सभी सदस्यों को भाग लेना होता है।
- इस तरह के सत्र में सामग्री की एक विस्तृत श्रृंखला शामिल हो सकती है, जिसमें प्रमुख बिंदुओं से लेकर पैनल चर्चा तक शामिल हो सकती है और यह आवश्यक रूप से प्रस्तुति की विशिष्ट शैली या विचारशील प्रक्रिया से संबंधित नहीं है।

पृष्ठभूमि

- आई.एम.एफ.सी., वर्ष में दो बार आयोजित होती है, एक बार अक्टूबर में फंड-बैंक वार्षिक बैठक के दौरान और फिर अप्रैल में वसंत बैठकों के दौरान आयोजित होती है।
- यह समिति वैश्विक अर्थव्यवस्था को प्रभावित करने वाले आम चिंता के मुद्दों पर चर्चा करती है और आई.एम.एफ. को अपने काम की दिशा में सलाह देती है।

बैठक का एजेंडा

- बैठक में चर्चा आई.एम.एफ. के प्रबंध निदेशक की वैश्विक नीति एजेंडा पर आधारित थी, जिसका शीर्षक "असाधारण टाइम्स- असाधारण कार्रवाई" था।
- सदस्यों ने आई.एम.एफ. के संकट-प्रतिक्रिया पैकेज पर वैश्विक तरलता और सदस्यों के वित्तपोषण की जरूरतों को पूरा करने के लिए भी टिप्पणी की है।

भारत में किए गए उपाय हैं:

- केंद्रीय वित्त मंत्री ने स्वास्थ्य संकट की प्रतिक्रिया के साथ-साथ इसके प्रभाव को कम करने के लिए भारत में किए गए विभिन्न उपायों को रेखांकित किया है। इस संबंध में, स्वास्थ्य देखभाल प्रणाली को मजबूत करने के लिए भारत सरकार द्वारा $ 2 बिलियन (15,000 करोड़ रुपये) का आवंटन किया गया है।
- गरीबों और कमजोर लोगों की कठिनाईयों को कम करने के लिए $ 23 बिलियन (1.70 लाख करोड़ रुपये) की राशि की सामाजिक सहायता उपायों की एक योजना की घोषणा की गई है।
- संवैधानिक और विनियामक अनुपालन मामलों में फर्मों को राहत का प्रावधान किया गया है।
- आर.बी.आई. द्वारा मौद्रिक नीति को आसान बनाना और ऋण किस्तों पर तीन महीने की मोहलत प्रदान की गई है।

टॉपिक- जी.एस. पेपर 3-अर्थशास्त्र

स्रोत- पी.आई.बी.

सरकार ने पड़ोसी देशों से एफ.डी.आई. के लिए अनिवार्यता को मंजूरी दी है।

खबरों में क्यों है?

- हाल ही में, केंद्र सरकार ने कोविड-19 वैश्विक महामारी के बाद घरेलू कंपनियों के "अवसरवादी अधिग्रहण" को रोकने के लिए भारत के साथ भूमि सीमा साझा करने वाले देशों

से विदेशी निवेश के लिए अपनी पूर्व स्वीकृति अनिवार्य कर दी है, यह एक ऐसा कदम है जो चीन से एफ.डी.आई. को प्रतिबंधित करेगा।

- जो देश भारत के साथ भूमि सीमा साझा करते हैं वे चीन, बांग्लादेश, पाकिस्तान, भूटान, नेपाल, म्यांमार और अफगानिस्तान हैं।

सरकार द्वारा अपनाए गए परिवर्तन

- उद्योग एवं आंतरिक व्यापार संवर्धन विभाग (डी.पी.आई.आई.टी.) के अनुसार, किसी देश की एक इकाई, जो भारत के साथ भूमि सीमा साझा करती है या जहां भारत में निवेश का लाभकारी मालिक स्थित है या ऐसे किसी भी देश का नागरिक है, वह केवल सरकारी मार्ग के अंतर्गत ही निवेश कर सकता है।
- प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से भारत में एक इकाई में किसी भी मौजूदा या भविष्य की एफ.डी.आई. के स्वामित्व के हस्तांतरण की स्थिति के परिणामस्वरूप पड़ोसी देशों से सभी एफ.डी.आई. के लिए सरकार की मंजूरी आवश्यक होनी चाहिए।
- पाकिस्तान का नागरिक या पाकिस्तान में शामिल एक इकाई, केवल सरकारी मार्ग के अंतर्गत, रक्षा, अंतरिक्ष, परमाणु ऊर्जा और विदेशी निवेश के लिए निषिद्ध क्षेत्रों/ गतिविधियों के अतिरिक्त अन्य गतिविधियों में निवेश कर सकती है।

भारत में एफ.डी.आई.

- एफ.डी.आई., भारत के आर्थिक विकास के लिए एक महत्वपूर्ण मौद्रिक स्रोत है। 1991 के संकट के परिणामस्वरूप भारत में आर्थिक उदारीकरण की शुरुआत हुई थी और तब से देश में एफ.डी.आई. लगातार बढ़ रही है।
- ग्रीनफील्ड एफ.डी.आई. रैंकिंग में भारत विश्व स्तर पर प्रथम स्थान पर है।

वे मार्ग जिनके माध्यम से भारत को एफ.डी.आई. मिलती है

'स्वचालित मार्ग' के क्या प्रावधान हैं?

- अनिवासी या भारतीय कंपनी को एफ.डी.आई. के लिए आर.बी.आई. या भारत सरकार की पूर्व अनुमति की आवश्यकता नहीं होती है।
- अधिकांश क्षेत्रों में एफ.डी.आई. को स्वचालित मार्ग के माध्यम से अनुमति दी जाती है, कुछ निश्चित क्षेत्रों जैसे रक्षा, दूरसंचार, मीडिया, फार्मास्यूटिकल्स और बीमा, विदेशी निवेशकों के लिए सरकार की मंजूरी आवश्यकता होती है।

सरकार का मार्ग क्या है?

- सरकार की मंजूरी अनिवार्य होती है।
- कंपनी को विदेशी निवेश सुविधा पोर्टल के माध्यम से एक आवेदन दायर करना होगा, जो एकल-खिड़की मंजूरी की सुविधा प्रदान करता है।
- फिर आवेदन को संबंधित मंत्रालय को भेज दिया जाता है, जो वाणिज्य मंत्रालय के उद्योग एवं आंतरिक व्यापार संवर्धन विभाग (डी.पी.आई.आई.टी.) के परामर्श से आवेदन को मंजूरी पदान करेगा/ अस्वीकार कर देगा।
- डी.पी.आई.आई.टी., मौजूदा एफ.डी.आई. नीति के अंतर्गत आवेदनों के प्रसंस्करण हेतु मानक परिचालन प्रक्रिया (एस.ओ.पी.) जारी करेगा।

वे क्षेत्र जहां एफ.डी.आई. निषिद्ध है:

- ऐसे नौ क्षेत्र हैं जहां एफ.डी.आई. निषिद्ध है और जिसमें लॉटरी व्यवसाय, जुआं और सट्टेबाजी, चिट फंड, निधि कंपनी, रियल एस्टेट व्यवसाय और तंबाकू के साथ सिगार, चेरूट, सिगारिल और सिगरेट का निर्माण शामिल हैं।

टॉपिक- जी.एस. पेपर 3- अर्थशास्त्र

स्रोत- द हिंदू

रिवर्स रेपो दर, अर्थव्यवस्था में बेंचमार्क ब्याज दर बन रही है।

खबरों में क्यों है?

- हाल ही में, आर.बी.आई. द्वारा उठाए गए नीतिगत कदम इस तथ्य की पुष्टि कर रहे हैं कि कोविड 19 संकट के बीच रिवर्स रेपो दर, अब नई बेंचमार्क दर बन गई है।

रेपो और रिवर्स रेपो दर के संदर्भ में जानकारी:

- रेपो (पुनर्खरीद समझौते) दर, वह दर है जिस पर आर.बी.आई. छोटी अवधि के लिए बैंकिंग प्रणाली (या बैंकों) को पैसा उधार देता है।
- रिवर्स रेपो दर, वह दर है जिस पर बैंक, आर.बी.आई. के पास अपना पैसा रख सकते हैं।
- दोनों परिदृश्यों में लेनदेन बांड के माध्यम से होता है- एक पक्ष बाद में निर्दिष्ट तिथि पर उन्हें वापस खरीदने (या उन्हें पुनर्खरीद) करने के वादे के साथ दूसरे पक्ष को बांड बेचता है।
- रेपो दर, धन जुटाने के लिए वाणिज्यिक बैंकों के लिए एक महत्वपूर्ण विकल्प है।

सामान्य परिदृश्य:

- सामान्य परिस्थितियों में, जब अर्थव्यवस्था बढ़ रही होती है तो रेपो दर बाजार में बेंचमार्क ब्याज दर होती है क्योंकि यह सबसे कम ब्याज दर होती है जिस पर फंड उधार लिया जा सकता है।
- यह अर्थव्यवस्था में अन्य सभी ब्याज दरों के लिए फ्लोर रेट बनाता है- उदाहरण के लिए, जिस ब्याज दर पर उपभोक्ताओं को कार ऋण का भुगतान करना होता है या वह ब्याज दर, जो आप सावधि जमा आदि पर अर्जित करते हैं।

रिवर्स रेपो दर, बेंचमार्क दर बन रही है:

- बैंकिंग प्रणाली में अतिरिक्त तरलता का मतलब है कि मार्च और अप्रैल के प्रारंभिक 15 दिनों के दौरान बैंक, रेपो (फंड उधार लेने हेतु) के बजाय केवल रिवर्स रेपो (आर.बी.आई. के साथ धन रखने के लिए) का उपयोग कर रहे हैं।
- 15 अप्रैल तक, आर.बी.आई. के पास बैंकों के 7 लाख करोड़ रुपये का पैसा था, जो उसने अब बंद कर दिया है।
- दूसरे शब्दों में, रिवर्स रेपो दर, अर्थव्यवस्था में सबसे प्रभावशाली दर बन गई है।
- इस मुद्दे के कारण, केंद्रीय बैंक ने पिछले तीन हफ्तों के अंतराल में रेपो (ग्राफ देखें) की तुलना में रिवर्स रेपो दर में दो बार कटौती की है।

इस कदम की प्रभावकारिता:

- यह सब भारत में उपभोक्ता मांग के पुनरूद्धार पर निर्भर करता है।

- यदि नॉवेल कोरोनावायरस बीमारी के प्रकोप से प्रेरित व्यवधान लंबे समय तक जारी रहते हैं, उपभोक्ता मांग शांत बनी रहती है और व्यवसायों को नए निवेश करने के लिए बड़े उधार लेने की आवश्यकता नहीं होगी।
- यदि उपभोक्ता की मांग में तेजी आती है, तो ऋण की मांग भी बढ़ेगी।
- बैंकों के परिप्रेक्ष्य से, उन्हें नए ऋणों के बारे में आश्वस्त होना भी महत्वपूर्ण है, उन्हें एन.पी.ए. में नहीं बदलने देना और उनके पास पहले से ही उच्च स्तर के बुरे ऋण उपलब्ध हैं।
- जब तक बैंक एक आर्थिक बदलाव की संभावनाओं के बारे में आश्वस्त महसूस नहीं करते हैं तब तक रिवर्स रेपो दरों में कटौती का बहुत कम प्रभाव हो सकता है।

टॉपिक- जी.एस. पेपर 3- अर्थशास्त्र

स्रोत- इंडियन एक्सप्रेस

टी.एल.टी.आर.ओ. 2.0 के अंतर्गत बैंकों के लिए प्राथमिकता क्षेत्र राहत

खबरों में क्यों है?

- हाल ही में, भारतीय रिजर्व बैंक ने संशोधित लक्षित दीर्घकालिक रेपो परिचालन (टी.एल.टी.आर.ओ.) 2.0 के अंतर्गत लघु एवं मध्यम आकार के एन.बी.एफ.सी. और माइक्रोफाइनेंस संस्थानों द्वारा जारी किए गए दस्तावेजों में निवेश करने वाले बैंकों को प्राथमिकता क्षेत्र राहत प्रदान की है।
- प्राथमिकता वाले क्षेत्र की प्रतिबद्धता का आकलन करते हुए इन निवेशों की गणना बैंक के समायोजित गैर-खाद्य बैंक ऋण के हिस्से के रूप में नहीं की जाएगी।

आर.बी.आई. के दिशानिर्देश

- आर.बी.आई. ने निर्दिष्ट किया था कि टी.एल.टी.आर.ओ. 2.0 योजना के अंतर्गत, बैंकों को 500 करोड़ और उससे कम की संपत्ति आकार के छोटे एन.बी.एफ.सी., 500 करोड़ से 5000 करोड़ के बीच की संपत्ति आकार के मध्यम आकार के एन.बी.एफ.सी. और एम.एफ.आई. के बांड में कुल फंड का कम से कम आधा निवेश करना होगा। बैंको को वर्तमान में कृषि, छोटे व्यवसायों, शिक्षा, सामाजिक बुनियादी ढांचे जैसे क्षेत्रों में अपने कुल ऋण का 40% आवंटित करना है, जिन्हें सामूहिक रूप से प्राथमिकता वाले क्षेत्रों के रूप में जाना जाता है।
- यह छूट केवल टी.एल.टी.आर.ओ. 2.0 के अंतर्गत प्राप्त फंड पर लागू होती है और आर.बी.आई. को उम्मीद है कि इससे इन एन.बी.एफ.सी. और एम.एफ.आई. में बैंकों के निवेश को प्रोत्साहन मिलेगा।

दीर्घकालिक रेपो परिचालन के संदर्भ में जानकारी

- यह एक ऐसा उपकरण है, जिसके अंतर्गत आर.बी.आई. प्रचलित रेपो दर पर बैंकों को एक वर्ष से तीन वर्ष तक के ऋण प्रदान करता है।

उद्देश्य

- अल्पकालिक ब्याज दरों को पॉलिसी रेपो दर के साथ सिंक में बनाए रखना

लक्षित दीर्घकालिक रेपो परिचालन (टी.एल.टी.आर.ओ.) के संदर्भ में जानकारी

- इसे आर.बी.आई. द्वारा पेश किया गया था, जिसके अंतर्गत बैंक तीन वर्ष तक के वित्तपोषण तक पहुँच सकते हैं और इसका उपयोग निवेश-ग्रेड कॉर्पोरेट बॉन्ड, वाणिज्यिक दस्तावेजों और ऋणपत्रों में निवेश करने के लिए कर सकते हैं।
- इसमें से, बैंकों को प्राथमिक बाजार जारीकर्ता से योग्य उपकरणों के वृद्धिशील स्वामित्व का 50 प्रतिशत तक खरीदना आवश्यक है और शेष द्वितीयक जारीकर्ता से खरीदना आवश्यक है, जिसमें म्यूच्युअल फंड और एन.बी.एफ.सी. शामिल हैं।
- एल.टी.आर.ओ., ई-कुबेर प्लेटफॉर्म पर आयोजित किए जाते हैं जो आर.बी.आई. का प्रमुख बैंकिंग समाधान है।

टी.एल.टी.आर.ओ. का महत्व

- यह आर.बी.आई. द्वारा वित्तीय संस्थानों सहित कंपनियों की मदद करने के लिए पेश किया गया था, जो कोरोनोवायरस प्रकोप और लगाए गए लॉकडाउन के मद्देनजर उनकी नकदी प्रवाह की समस्याओं का समाधान करता है।

टॉपिक- जी.एस. पेपर 3- अर्थशास्त्र

स्रोत- इकोनॉमिक टाइम्स

ऑपरेशन ट्विस्ट

खबरों में क्यों है?

- हाल ही में, भारतीय रिज़र्व बैंक (आर.बी.आई.) ने लंबी अवधि की पैदावार को सुगम बनाने के लिए एक बोली में सरकारी बॉन्ड की एक साथ खरीद और बिक्री की घोषणा की है।

उद्देश्य:

- इसका उद्देश्य तरलता और बाजार की स्थितियों का प्रबंधन करना है: वर्तमान और विकसित होती तरलता और बाजार की स्थितियों की समीक्षा पर आर.बी.आई. ने सरकारी बांडों की एक साथ खरीद और बिक्री करने का निर्णय लिया है, जो कि कोविड-19 से प्रभावित हैं।

खुला बाजार परिचालन:

- आर.बी.आई. वर्ष 2026 से 2030 के बीच परिपक्व होने वाले 10,000 करोड़ रूपए मूल्य के बॉन्ड खरीदेगा और समान संख्या में टी-बिल बेचेगा।
- ऐसे खुले बाज़ार परिचालन को 'ऑपरेशन ट्विस्ट' के रूप में जाना जाता है।
- केंद्रीय बैंक ने ऑपरेशन ट्विस्ट का पहली बार इस्तेमाल पिछले वर्ष दिसंबर में किया था।

आर.बी.आई. के कदम का प्रभाव

- 10 वर्ष के बांड पर उपज में 20 आधार अंकों की गिरावट आई है।
- यह कदम बैंकों को अपने ग्राहकों को ब्याज दरों में कटौती के लाभों को प्रेषित करने हेतु प्रेरित करके मौद्रिक संचरण की प्रक्रिया में भी मदद करेगा।
- आर.बी.आई. ने हाल ही में मौद्रिक नीति समीक्षा में प्रमुख नीतिगत दर या रेपो दर को 75 बी.पी.एस. घटाकर 4.4% कर दिया था।

टॉपिक- जी.एस. पेपर 3- अर्थशास्त्र

स्रोत- द हिंदू

म्यूचुअल फंड के लिए विशेष तरलता सुविधा (एस.एल.एफ.-एम.एफ.)

खबरों में क्यों है?

- हाल ही में, भारतीय रिज़र्व बैंक ने एक विशेष तरलता खिड़की की घोषणा की है जिसे विशेष तरलता सुविधा कहते हैं, ऋण फंड सेगमेंट में उथल-पुथल से प्रभावित होने वाले म्यूचुअल फंड को जमानत पर छुड़ाने हेतु 50,000 करोड़ रूपए के म्यूचुअल फंड के लिए सुविधा प्रदान की है, इस उथल-पुथल सेगमेंट के कारण फ्रेंकलिन टेम्पलटन म्यूचुअल फंड द्वारा छह क्रेडिट रिस्क फंड को बंद कर दिया गया है।

म्यूचुअल फंड खिड़की के लिए यह विशेष तरलता सुविधा कैसे काम करती है?

- एस.एल.एफ.-एम.एफ. के अंतर्गत, आर.बी.आई. ने निर्धारित रेपो दर पर 90 दिनों की अवधि का रेपो परिचालन करेगा।
- एस.एल.एफ.-एम.एफ. ऑन-टैप और ओपन-एंडेड है और बैंक 11 मई तक या आवंटित राशि का उपयोग करने तक, जो भी पहले हो, वित्तपोषण का लाभ उठाने के लिए अपनी बोलियां प्रस्तुत कर सकते हैं।

बैंक इस पैसे का क्या करेंगे?

- बैंक, म्यूचुअल फंड में ऋण का विस्तार कर सकते हैं और एम.एफ. द्वारा रखे गए निवेश स्तर के वाणिज्यिक बॉन्ड, वाणिज्यिक दस्तावेजों (सी.पी.), ऋणपत्रों और जमा के प्रमाणपत्रों (सी.डी.) के संपार्श्विक के विरूद्ध रेपो की प्रत्यक्ष खरीद कर सकते हैं। एस.एल.एफ.-एम.एफ. के अंतर्गत लिया गया तरलता समर्थन, परिवक्वता के रूप में रखे गए (एच.टी.एम.) के रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है, यहां तक कि एच.टी.एम. पोर्टफोलियो में शामिल करने हेतु स्वीकृत कुल निवेश के 25 प्रतिशत से अधिक क्यों न हो।

प्रस्ताव की विशेषताएं

- इस सुविधा के अंतर्गत ऋण की बड़े ऋण ढांचे के अंतर्गत गणना नहीं की जाएगी।

- एस.एल.एफ.-एम.एफ. के अंतर्गत अधिगृहीत और एच.टी.एम. श्रेणी में रखी गई प्रतिभूतियों का अंकित मूल्य प्राथमिकता वाले क्षेत्र के लक्ष्यों/ उप-लक्ष्यों को निर्धारित करने के लिए समायोजित गैर-खाद्य बैंक ऋण (ए.एन.बी.सी.) की गणना के लिए नहीं माना जाएगा।
- एस.एल.एफ.-एम.एफ. के अंतर्गत एम.एफ. को बढ़ाए गए समर्थन को बैंकों की पूंजी बाजार जोखिम सीमा से मुक्त किया जाएगा।

टॉपिक- जी.एस. पेपर 3- अर्थशास्त्र

स्रोत- द हिंदू + इकोनॉमिक टाइम्स

केयर्स कार्यक्रम

खबरों में क्यों है?

- भारत सरकार और एशियाई विकास बैंक (ए.डी.बी.) ने 1.5 बिलियन डॉलर के ऋण पर हस्ताक्षर किए हैं, जो नॉवेल कोरोनावायरस वायरस (कोविड-19) महामारी की प्रतिक्रिया में सरकार का समर्थन करेगा।
- केयर्स कार्यक्रम सरकार की तात्कालिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए पहले समर्थन के रूप में प्रदान किया गया है।

इस धनराशि का उपयोग कहां होगा?

- इस धनराशि का उपयोग परीक्षण-निगरानी-उपचार क्षमता को तेजी से बढ़ाने के लिए कोविड-19 रोकथाम योजना को लागू करने के लिए किया जाएगा।
- यह अगले तीन महीनों में 800 मिलियन से अधिक लोगों की सुरक्षा के लिए गरीब, कमजोर, महिलाओं और वंचित समूहों हेतु सामाजिक सुरक्षा प्रदान करेगा।
- एशियाई विकास बैंक की वित्तीय और तकनीकी सहायता मार्च, 2020 में शुरू किए गए सरकार के दूरगामी आपातकालीन प्रतिक्रिया कार्यक्रमों के बेहतर कार्यान्वयन में योगदान देगी।

एशियाई विकास बैंक (ए.डी.बी.) के संदर्भ में जानकारी

- यह 19 दिसंबर, 1966 को स्थापित एक क्षेत्रीय विकास बैंक है।
- इसका मुख्यालय फिलीपींस के मनीला में स्थित है।

उद्देश्य

- एशिया में सामाजिक और आर्थिक विकास को बढ़ावा देना

सदस्य

- अब इसके 68 सदस्य हैं, जिनमें से 49 सदस्य एशिया और प्रशांत के और 19 सदस्य बाहर के हैं।
- ए.डी.बी. में अमेरिका के बाद जापान का शेयरों का सबसे बड़ा अनुपात है।

नोट:

- हाल ही में एशियाई विकास बैंक ने एशियाई विकास आउटलुक 2019 प्रकाशित किया है।
- इसमें, ए.डी.बी. ने निवेश की मांग में अपेक्षित वृद्धि की तुलना में धीमी गति के कारण वर्ष 2019-20 के लिए भारत के विकास के अनुमान को घटाकर 7.2% कर दिया है।
- वित्त वर्ष 2020-21 में विकास दर 7.3% रहने की संभावना है।

टॉपिक- जी.एस. पेपर 3- अर्थशास्त्र

स्रोत- पी.आई.बी.

अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय सेवा केंद्र प्राधिकरण

खबरों में क्यों है?

- हाल ही में, भारत सरकार ने अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय सेवा केंद्र प्राधिकरण की स्थापना को अधिसूचित किया है।

अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय सेवा केंद्र प्राधिकरण के संदर्भ में जानकारी

- यह विशेष आर्थिक क्षेत्र अधिनियम, 2005 के अंतर्गत स्थापित अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय सेवा केंद्रों में वित्तीय सेवा बाजार को विनियमित करने हेतु स्थापित किया गया था।

संरचना

इसमें नौ सदस्य शामिल हैं:

- अध्यक्ष
- आर.बी.आई., सेबी, इरडा, पी.एफ.आर.डी.ए. प्रत्येक से एक सदस्य
- वित्त मंत्रालय से दो सदस्य
- एक खोज समिति की सिफारिश पर नियुक्त दो अन्य सदस्य

कार्यकाल

- सदस्यों के पास पुनर्नियुक्ति के अधीन तीन वर्ष का कार्यकाल होगा।

कार्य

- यह वित्तीय उत्पादों जैसे कि प्रतिभूतियों, जमा या बीमा, वित्तीय सेवाओं और वित्तीय संस्थानों के अनुबंधों को विनियमित करेगा, जिन्हें एक आई.एफ.एस.सी. में उपयुक्त विनियामक द्वारा अनुमोदित किया गया है।

शक्तियां:

- संबंधित अधिनियमों के अंतर्गत संबंधित वित्तीय क्षेत्र विनियामक (आर.बी.आई., सेबी, इरडा, पी.एफ.आर.डी.ए.) द्वारा प्रयोग की जाने वाली सभी शक्तियां प्राधिकरण द्वारा आई.एफ.एस.सी. में प्रयोग की जा सकती हैं।

टॉपिक- जी.एस. पेपर 3- अर्थशास्त्र

स्रोत- इकोनॉमिक्स टाइम्स

पर्यावरण और पारिस्थितिकी

शांति वन पहल

खबरों में क्यों है?

- मरूस्थलीकरण से निपटने हेतु संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन और कोरिया गणराज्य वन सेवा की सरकार ने शांति वन पहल की स्थापना के लिए एक समझौता ज्ञापन (एम.ओ.यू.) पर हस्ताक्षर किए हैं।

शांति वन पहल के संदर्भ में जानकारी

- यह 2019 में नई दिल्ली, भारत में यू.एन.सी.सी.डी. के पार्टियों के 14वें सम्मेलन के दौरान शुरू की गई दक्षिण कोरिया की एक पहल है।
- इसका उद्देश्य शांति और सुरक्षा का निर्माण करने वाली साझेदारियों के माध्यम से भूमि पतन तटस्थता (एल.डी.एन.) को लागू करना है।
- पी.एफ.आई. का लक्ष्य हिंसक संघर्ष से उबरने वाले देशों की पेशकश करना है, जो आजीविका और अर्थव्यवस्थाओं का पुनर्निर्माण करते समय स्थिरता और विश्वास प्राप्त करने का अवसर है।

टॉपिक- जी.एस. पेपर 3- पर्यावरण

स्रोत- ई.टी.

सारस

खबरों में क्यों है?

- हाल ही में, नीन्दाकारा तटीय स्टेशन (केरल) में, कुछ बगुले भुखमरी के कारण अकालग्रस्त और मृत पाए गए हैं।

सारस के संदर्भ में जानकारी

- यह पक्षी की एक बड़ी प्रजाति है जो आर्द्रभूमि और उन क्षेत्रों का निवास करती है जो झीलों, तालाबों और नदियों के नजदीक होते हैं।
- यह सामान्यत: यूरोप और उत्तरी अमेरिका में और अफ्रीका, एशिया और ऑस्ट्रेलिया के अधिक समशीतोष्ण क्षेत्रों में भी पाए जाते हैं।
- यह एक मांसाहारी प्रजाति का पक्षी है, जिसमें सारस मुख्य रूप से मछलियाँ चरती हैं।

संरक्षण स्तर

- इसे जोखिमग्रस्त प्रजातियों की आई.यू.सी.एन. रेड लिस्ट में 'न्य'नतम चिंतनीय' के रूप में सूचीबद्ध किया गया है।

टॉपिक- जी.एस. पेपर 3- पर्यावरण

स्रोत- द हिंदू + ए टू जेड एनिमल

लेदरबैक समुद्री कछुआ

खबरों में क्यों है?

- हाल ही में, थाईलैंड ने दुर्लभ लेदरबैक कछुए के घोंसलों की सबसे बड़ी संख्या देखी है और उनमें से कई ने पहली बार फांग-न्गा जिले में एक समुद्र तट पर समुद्र में अपना मार्ग बनाने हेतु अंडे से बाहर निकल गए हैं, इस घटना को दो दशकों से भी अधिक समय में देखा गया है।

लेदरबैक समुद्री कछुओं के संदर्भ में जानकारी

- लेदरबैक समुद्री कछुए, दुनिया के सबसे बड़े समुद्री कछुए हैं।
- उन्हें यह नाम उनके शेल के लिए दिया गया है, जो अन्य कछुओं की तरह सख्त होने के बजाय चमड़े की तरह होता है।

वितरण

- लेदरबैक कछुए को दुनिया भर में उष्णकटिबंधीय रेतीले समुद्र तटों पर स्थित घोंसले के शिकार स्थलों के साथ वितरित किया गया है और विदेशी सीमाएं शीतोष्ण और उपोष्णकटिबंधीय अक्षांशों तक विस्तारित होती हैं।

संरक्षण स्तर

- आई.यू.सी.एन. रेड लिस्ट के अनुसार, दुनिया भर में लेदरबैक कछुए की आबादी को गंभीर रूप से लुप्तप्राय और संकटग्रस्त माना जाता है।
- यह दर्जा उस क्षेत्र के साथ भी बदलती है जहां देश गिरता है। उन्हें थाईलैंड में लुप्तप्राय माना जाता है।

टॉपिक- जी.एस. पेपर 3-पर्यावरण

स्रोत- न्यूएशिया.कॉम, द गार्डियन

पृथ्वी दिवस 2020

खबरों में क्यों है?

- प्रत्येक वर्ष, विश्व पृथ्वी दिवस 22 अप्रैल को मनाया जाता है और इस वर्ष इसने पृथ्वी दिवस के 50 वर्ष पूरे होने को चिन्हित किया है। प्रत्येक वर्ष पृथ्वी दिवस एक थीम के साथ आता है और वर्ष 2020 के लिए चुनी गई थीम "जलवायु कार्रवाई" है।
- जलवायु कार्रवाई पर आधारित पृथ्वी दिवस 2020 में संग्रह में बहुत कुछ: डिजिटल इवेंट, प्रदर्शन और सहयोग है।
- कोविड 19 के प्रकोप के कारण चल रहे वैश्विक लॉकडाउन के साथ इस वर्ष पृथ्वी दिवस समारोह मुख्य रूप से डिजिटल रूप से आयोजित किया जाएगा।

उद्देश्य

- पर्यावरणीय सुरक्षा के अभियान का पूरा प्रभाव प्राप्त करने के लिए आम जनता, विशेषकर युवाओं के मध्य जागरूकता बढ़ाना है।

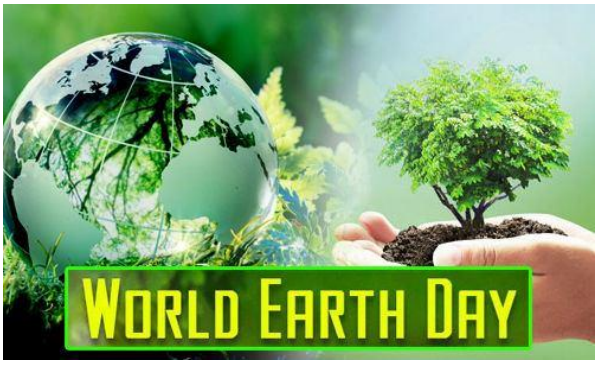

पृथ्वी दिवस के संदर्भ में जानकारी

- पृथ्वी दिवस प्रत्येक वर्ष 22 अप्रैल को हमारे ग्रह के बारे में जागरूकता बढ़ाने हेतु मनाया जाता है, जो कि जीवन को स्थायित्व प्रदान करता है। पृथ्वी दिवस की शुरूआत संयुक्त राज्य अमेरिका में एक राजनीतिक आंदोलन के रूप में हुई थी।
- यह पहली बार 1970 में मनाया गया था। 22 अप्रैल, 1970 को 150 वर्षों के औद्योगिक विकास के नकारात्मक प्रभावों का विरोध करने के लिए लाखों लोग सड़कों पर उतर आए थे।

संगठन

- पृथ्वी दिवस नेटवर्क (ई.डी.एन.), दुनिया भर में पृथ्वी दिवस का नेतृत्व करने वाला गैर-लाभकारी संगठन है।

पृथ्वी दिवस नेटवर्क के संदर्भ में जानकारी

पृथ्वी दिवस नेटवर्क, एक गैर-लाभकारी संगठन है जिसका मिशन दुनिया भर में पर्यावरण आंदोलन को चित्रित, शिक्षित और सक्रिय करना है। इसका मुख्यालय अमेरिका के वाशिंगटन, डी.सी. में स्थित है।

पृथ्वी के संदर्भ में कुछ रोचक बातें:

- पृथ्वी, गोलाकार नहीं है। विपरीत अपकेंद्र बल लगने के कारण भूमध्य रेखा के चारों ओर एक अतिरिक्त टायर के समान एक उभार है।
- पृथ्वी की आयु लगभग 4.54 बिलियन वर्ष है और यह निष्कर्ष, ग्रह की सतह पर खोजी गई पुरानी चट्टानों और उल्कापिंडों की डेटिंग पर आधारित हैं।
- प्रत्येक दिन धूल के रूप में लगभग 100 टन इंटरप्लेनेटरी कण पृथ्वी की सतह से नीचे की ओर गिरते हैं।
- ग्रहों का वर्तमान विन्यास कभी एकल इकाई या सुपरकंटिनेंट (महाद्वीप) था। सबसे हालिया सुपरकॉन्टिनेंट पैंजिया था, जो 200 मिलियन वर्ष पहले टूटना शुरू हुआ था और एक सेटअप स्थापित किया है, जिसे वर्तमान में हम देख रहे हैं।
- कई पृथ्वी जैसे ग्रह, तारों की परिक्रमा करते हैं, हालांकि यह अभी तक साबित नहीं हुआ है कि क्या पृथ्वी पर कभी जीवन मौजूद था। इस पर शोध चल रहा है।
- दुनिया का सबसे बड़ा पर्वत मध्य महासागर चोटी है, जो पानी के नीचे 65,000 किलोमीटर क्षेत्र पर फैले हुए ज्वालामुखियों की एक श्रृंखला है।
- यहां पर क्रेटर झीलें हैं, न्योस, मोनोउन और किवु उपस्थित हैं, कैमरून में और कांगो गणराज्य और ज़िम्बाब्वे की सीमा पर स्थित हैं, जो ज्वालामुखी पृथ्वी के ऊपर हैं और विस्फोट कर सकती है।
- चिली और पेरू के अटाकामा रेगिस्तान में कुछ धब्बे हैं, जहां इसकी स्थापना के बाद से बारिश कभी दर्ज नहीं की गई थी। यह ग्रह का सबसे शुष्क स्थान है।

टॉपिक- जी.एस. पेपर 3- पर्यावरण

स्रोत- ए.आई.आर.

देहिंग पतकाई वन्यजीव अभयारण्य

खबरों में क्यों है?

- देशव्यापी लॉकडाउन के बीच, राष्ट्रीय वन्यजीव बोर्ड (एन.बी.डब्ल्यू.एल.) ने असम में एक हाथी रिजर्व (देहिंग पतकाई वन्यजीव अभयारण्य) के एक हिस्से में कोयला खनन की सिफारिश की है।

पैनल की स्थापना

- एन.बी.डब्ल्यू.एल. ने जुलाई, 2019 में एक सदस्य समिति का गठन किया था, जिसमें उसके सदस्य आर. सुकुमार, असम के मुख्य वन्यजीव संरक्षक और खनन क्षेत्र के आकलन के लिए स्थानीय वन्यजीव प्रभाग के एक प्रतिनिधि शामिल थे।

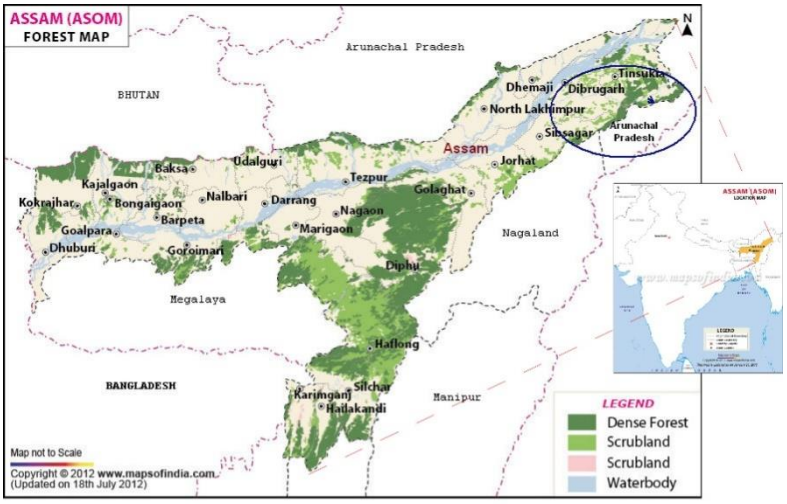

Figure 1. Forest map of Assam depicting the study area (circle).

Image 1. Tirap Reserve Forest (along the Tirap River on Arunachal Pradesh border)

Image 2. Bhorjan Reserve Forest, near Tinsukhia Town - potential site for butterfly inclusive ecotourism

देहिंग पतकाई वन्यजीव अभयारण्य के संदर्भ में जानकारी

- इसे जेपोर वर्षावन के रूप में भी जाना जाता है, जो असम में डिब्रूगढ़ और तिनसुकिया जिलों में स्थित है।
- देहिंग, एक नदी का नाम है जो इस जंगल से होकर बहती है और पतकाई पहाड़ी है जिसके तल पर अभयारण्य स्थित है।
- वनस्पति: यह एक पर्णपाती वर्षावन है, जो अर्ध-सदाबहार और हरे-भरे वनस्पतियों से घिरा हुआ है।

राष्ट्रीय वन्यजीव बोर्ड के संदर्भ में जानकारी

- यह एक संवैधानिक निकाय है क्योंकि इसका गठन धारा 5ए वन्यजीव संरक्षण अधिनियम, 1972 के अंतर्गत किया गया है।
- यह वन्यजीव संबंधी सभी मामलों की समीक्षा करने और राष्ट्रीय उद्यानों और अभयारण्यों अर्थात संरक्षित क्षेत्रों में और इसके आसपास की परियोजनाओं को मंजूरी देने हेतु शीर्ष निकाय है।

संरचना:

- इसकी अध्यक्षता प्रधानमंत्री द्वारा की जाती है और इसमें 47 सदस्यीय बोर्ड (अध्यक्ष सहित) है, जो सामान्यत: वर्ष में एक बार मिलते हैं।

टॉपिक- जी.एस. पेपर 3-पर्यावरण, स्रोत- इंडियन एक्सप्रेस

भूगोल सम्बन्धी घटनाएँ

अमेरिका वर्जीनिया द्वीप

खबरों में क्यों है?

- हाल ही में, संयुक्त राज्य वर्जिन द्वीप (यू.एस.वी.आई.) ने रसायनयुक्त सनस्क्रीन उत्पादों पर प्रतिबंध लगा दिया है, जो प्रवाल भित्तियों और समुद्री जीवन के लिए हानिकारक माने जाते हैं।
- संयुक्त राज्य वर्जिन द्वीप, संयुक्त राज्य अमेरिका में पहला क्षेत्र बन गया है, जिसने सनस्क्रीन उत्पादों पर प्रतिबंध लगाया है।

सनस्क्रीन के संदर्भ में जानकारी

- 3 Os- ऑक्सीबेंज़ोन, ऑक्टोक्राइलीन और ऑक्टिनॉक्सेट युक्त सनस्क्रीन, प्रवाल भित्तियों को नुकसान पहुंचाते हैं जो वर्जिन द्वीप समूह की तटरेखा की रक्षा करते हैं।
- खनिज ऑक्साइड जैसे जिंक ऑक्साइड और टाइटेनियम डाइऑक्साइड वाले सनस्क्रीन को प्रतिबंध से छूट प्रदान की गई है।
- इन रसायनों की सांद्रता, हमारे कुछ क्षेत्रीय जल में स्वीकार्य स्तर से 40 गुना अधिक है।

अन्य देश जिन्होंने सनस्क्रीन पर प्रतिबंध लगाया है:

- पलाऊ का द्वीपसमूह राष्ट्र, सनस्क्रीन प्रतिबंध लागू करने वाला पहला देश बनने वाला है, जो 2020 से प्रभावी होगा।
- फ्लोरिडा में की वेस्ट ने वर्ष 2021 से स्टोरों पर उन सनस्क्रीन को रखने पर प्रतिबंध लगा दिया है जिसमें विषाक्त 3 Os है।
- बोनाइर के कैरेबियाई द्वीप समूह ने 2021 तक सनस्क्रीन की बिक्री पर प्रतिबंध लगाने के लिए सर्वसम्मति से मतदान किया है।
- हवाई सरकार ने भी वर्ष 2021 से उन सनस्क्रीन की बिक्री पर प्रतिबंध लगाने के लिए वोट किया है जिसमें प्रवाल भित्तियों को हानि पहुँचाने वाले रसायन ऑक्सीबेंज़ोन और ऑक्टिनॉक्सेट हैं।

टॉपिक- जी.एस. पेपर 3- पर्यावरण, स्रोत- डाउन टू अर्थ

नातुना द्वीप

खबरों में क्यों है?

- चीन अवैध रूप से नातुना द्वीप समूह क्षेत्र में मछली पकड़ रहा है, जिसे अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर इंडोनेशिया के विशिष्ट क्षेत्र के रूप में मान्यता प्राप्त है।

नातुना द्वीप के संदर्भ में जानकारी

- नातुना द्वीप, 272 द्वीपों का एक द्वीपसमूह है, जो मलेशिया और बोर्नियो (कालीमंतन) के बीच स्थित है।
- वे इंडोनेशिया के रियाउ द्वीप समूह प्रांत (दक्षिण चीन सागर का पश्चिमी हिस्सा) का एक हिस्सा बनाते हैं।

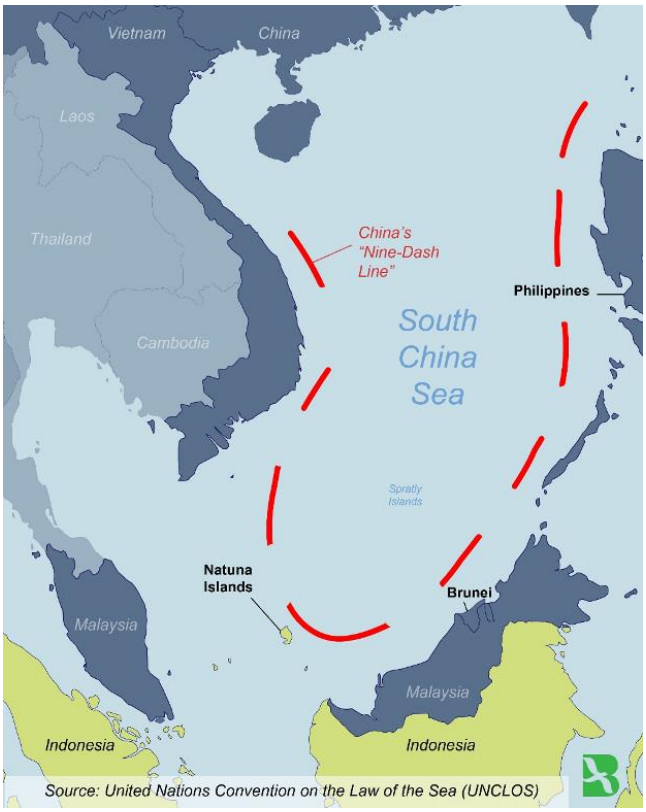

दक्षिण चीन सागर के संदर्भ में जानकारी

- यह दक्षिण पूर्व एशिया में पश्चिमी प्रशांत महासागर का एक भाग है।
- यह चीन के दक्षिण, वियतनाम के पूर्व और दक्षिण, फिलीपींस के पश्चिम और बोर्नियो द्वीप के उत्तर में स्थित है।
- ताइवान जलडमरूमध्य इसे पूर्वी चीन सागर से जोड़ता है और लुजॉन जलसंधि द्वारा फिलीपीन सागर से जोड़ता है।
- इसमें कई शोल, प्रवाल, प्रवाल द्वीप और द्वीप शामिल हैं।
- पेरासेल द्वीप समूह, स्प्राटली द्वीप समूह और स्कारबोरो शोल सबसे महत्वपूर्ण हैं।

टॉपिक- जी.एस. पेपर 1- भूगोल

स्रोत- न्यूयॉर्क टाइम्स

धौलाधार पर्वत श्रृंखला

खबरों में क्यों है?

- हाल ही में, धौलाधार पर्वत श्रृंखला पहली बार पंजाब के जालंधर से दिखाई दे रही है, क्योंकि चल रहे लॉकडाउन के कारण वायु प्रदूषण काफी कम हो गया है।

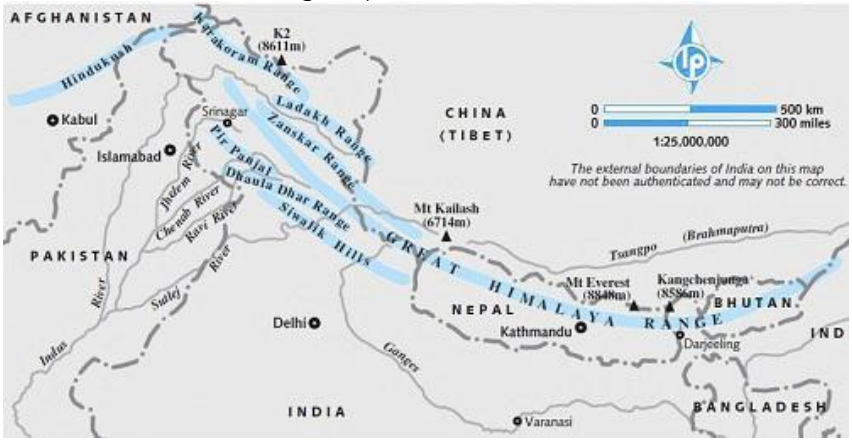

धौलाधार पर्वत श्रृंखला के संदर्भ में जानकारी

- यह पहाड़ों की निम्न हिमालयी श्रृंखला का हिस्सा है और मुख्य रूप से हिमाचल प्रदेश में स्थित है।
- ये पहाड़ मुख्यत: ग्रेनाइट से बने हैं, लेकिन चूना पत्थर और बलुआ पत्थर भी कुछ हिस्सों में मौजूद हैं।
- लाम डल झील, एक ग्लेशियर झील, भी इस पर्वत श्रृंखला में स्थित है।
- इस पर्वत श्रृंखला में से एक प्रमुख दर्रा इंद्रहार दर्रा है, जो राज्य के कांगड़ा और चंबा जिलों के बीच की सीमा का निर्माण करता है।

टॉपिक- जी.एस. पेपर 1- भूगोल

स्रोत- द हिंदू

ग्रेट बैरियर रीफ की तीसरी मास-ब्लीचिंग: अध्ययन

खबरों में क्यों है?

- हाल ही में, ऑस्ट्रेलिया के ग्रेट बैरियर रीफ को रिकॉर्ड स्तरीय सबसे व्यापक प्रवाल विरंजन का सामना करना पड़ा है, जो कि दुनिया के सबसे बड़े जीवित जीव के लिए जलवायु परिवर्तन से उत्पन्न एक बड़ा खतरा है।

प्रवाल भित्ति क्या हैं?

- प्रवाल भित्ति, छोटे जीवों के उपनिवेश हैं, जो महासागरों में पाए जाते हैं।
- वे पानी के नीचे की संरचनाएं हैं जो प्रवाल जंतुओं से बनती हैं जो कैल्शियम कार्बोनेट द्वारा एक साथ जुड़ी होती हैं।
- प्रवाल भित्ति को समुद्र के उष्णकटिबंधीय वर्षावन के रूप में भी माना जाता है और समुद्र की सतह के केवल 0.1% हिस्से पर कब्जा करते हैं, लेकिन 25% समुद्री प्रजातियों का घर है।

प्रवाल विरंजन क्या है?

- प्रवाल और ज़ूक्सैंथेला, एक सहजीवी संबंध साझा करते हैं और शैवाल द्वारा उत्पादित पोषक तत्वों का 90% प्रवाल आयोजकों को हस्तांतरित किया जाता है।
- लेकिन यह संबंध गंभीर पर्यावरणीय तनाव के अंतर्गत प्रभावित होता है जो सहजीवी शैवाल (ज़ूक्सैंथेला) के नुकसान का कारण बनता है।
- इसके परिणामस्वरूप, सफेद कैल्शियम-कार्बोनेट बाह्य कंकाल अपने पारदर्शी ऊतक के माध्यम से दिखाई देता है, जो प्रवाल विरंजन नामक स्थिति को बढ़ावा देता है।
- प्रवाल, शैवाल की अनुपस्थिति में कमजोर हो जाते हैं और यदि समुद्र का तापमान हफ्तों तक अधिक रहता है तो वे मरना शुरू हो जाते हैं।
- 2016 और 2017 के रिकॉर्ड के अनुसार, आधा ग्रेट बैरियर रीफ, प्रवाल विरंजन के कारण मर गया था।

प्रवाल भित्ति के प्रकार

प्रवाल भित्तियों को उनके आकार, प्रकृति और पाए जाने के मोड के आधार पर तीन श्रेणियों में विभेदित किया जाता है।

a. **फ्रिंज भित्ति**

- प्रवाल भित्तियाँ, जो भूमि के बहुत करीब पाई जाती हैं और एक उथले लैगून का निर्माण करती हैं जिन्हें बोट चैनल के नाम से जाना जाता है, वे फ्रिंज प्रवाल भित्ति कहलाती हैं।
- फ्रिंज भित्तियां, द्वीपों और महाद्वीपीय सीमांतो के किनारे विकसित होती हैं।
- वे समुद्र के गहरे तल से उगती हैं और समुद्र के ओर की सीधी ढलान गहरे समुद्र में जाती है।
- ये तीनों में सबसे अधिक पाई जाने वाली प्रवाल भित्तियाँ हैं।
- उदाहरण: न्यू हर्बाइड्स, दक्षिण फ्लोरिडा भित्ति में सकाउ द्वीप

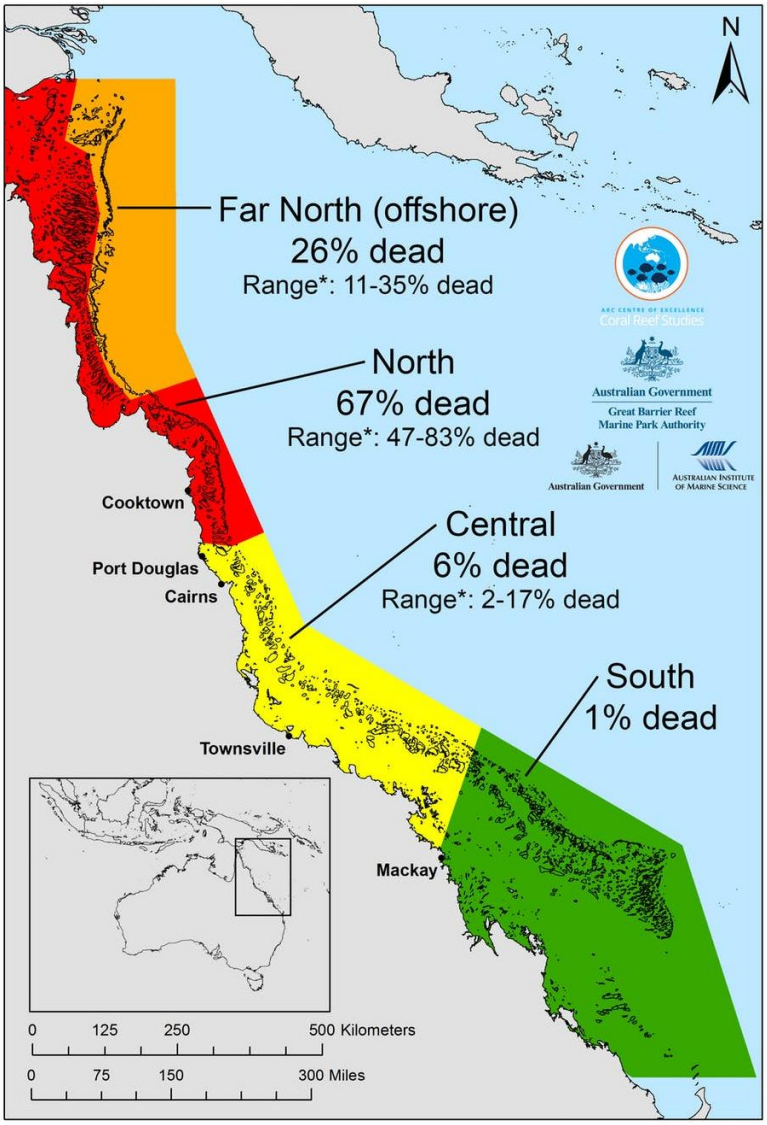

b. **बैरियर भित्ति**

- बैरियर भित्ति को तीनों प्रवाल भित्तियों में सबसे बड़ी, सबसे ऊंची और चौड़ी भित्ति माना जाता है।
- वे तट से दूर और किनारे के समानांतर एक टूटे हुए और असमान गोले के रूप में विकसित होती हैं।
- बैरियर भित्ति का उदाहरण: ऑस्ट्रेलिया का ग्रेट बैरियर भित्ति, जो 1200 मील लंबी है।

c. प्रवाल द्वीप:

- एक प्रवाल द्वीप को एक भित्ति के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जो लगभग गोलाकार होती है और एक बड़ी केंद्रीय लैगून को घेरती है।
- इस लैगून की गहराई ज्यादातर 80-150 मीटर होती है।
- प्रवाल द्वीप, गहरे समुद्र के प्लेटफार्मों से दूर स्थित होते हैं और एक द्वीप के आसपास या पनडुब्बी प्लेटफॉर्म पर अण्डाकार रूप में पाए जाते हैं।
- उदाहरण: फिजी प्रवाल द्वीप, मालदीव में सुवादिवो और एलिस के फुनाफूथिस प्रवाल द्वीप

प्रवाल विरंजन के लिए जिम्मेदार कारक

- पानी का बढ़ा हुआ तापमान (सामान्यत: ग्लोबल वार्मिंग के कारण) या पानी का घटा हुआ तापमान
- जूप्लांकटन (प्राणीमंदप्लवक) के स्तर में वृद्धि के कारण ऑक्सीजन की अत्यधिक कमी
- संवर्धित सौर विकिरण (प्रकाश संश्लेषण रूप से सक्रिय विकिरण और पराबैंगनी प्रकाश)
- संवर्धित अवसादन (तलछट अपवाह के कारण)
- लवणता में जीवाणु संक्रमण परिवर्तन
- शाकनाशी
- अत्यधिक कम ज्वार और जोखिम
- साइनाइड मछली पकड़ना
- प्रदूषक जैसे कि ऑक्सीबेंज़ोन, ब्यूटिलपैराबेन, ओक्टाइल मेथोक्सीसिनैमेट या एंजाकैमिन: चार सामान्य सनस्क्रीन तत्व जो नॉन-बॉयोडीग्रेडेबल हैं और त्वचा को धो सकते हैं।
- वायु प्रदूषण के कारण CO2 के उच्च स्तर के कारण महासागर का अम्लीकरण
- तेल या अन्य रासायनिक फैलाव के संपर्क में होना

भारत में प्रवाल भित्ति

- भारत में प्रमुख प्रवाल भित्तियों में पाल्क खाड़ी, मन्नार की खाड़ी, कच्छ की खाड़ी, अंडमान और निकोबार द्वीप समूह और लक्षद्वीप द्वीप समूह शामिल हैं।
- इन सभी प्रवाल भित्तियों में लक्षद्वीप भित्ति, प्रवाल द्वीप का एक उदाहरण है, जब कि बाकी सभी फ्रिंज भित्तियां हैं।

टॉपिक- जी.एस. पेपर 1- भूगोल

स्रोत- डाउन टू अर्थ

अनक कृकातौ ज्वालामुखी

खबरों में क्यों है?

- हाल ही में, इंडोनेशियाई अनक कृकातौ ज्वालामुखी ने वर्ष 2018 में अपने विस्फोटक पतन के बाद सबसे लंबा विस्फोट देखा है।

अनक कृकातौ के संदर्भ में जानकारी

- अनक कृकातौ, इंडोनेशिया के लामपुंग प्रांत में जावा और सुमात्रा के द्वीपों के बीच सुंडा जलसंधि में कॉल्डेरा में एक द्वीप है।
- 29 दिसंबर, 1927 को अनक कृकातौ 1883 में बने कॉल्डेरा से ज्वालामुखी विस्फोट से उभरकर सामने आया था, जिसने कृकातौ द्वीप को नष्ट कर दिया था।
- अनक कृकातौ, जिसका अर्थ कृकातौ का बच्चा है, यह प्रसिद्ध कृकातौ ज्वालामुखी की संतान है, जिसके 1883 के स्मारकीय विस्फोट से वैश्विक शीतलन का दौर शुरू हुआ था।

हाल ही में देखी गई अन्य ज्वालामुखी गतिविधियां:

ताल ज्वालामुखी

- यह मनीला से 50 कि.मी. दूर लुजोन द्वीप पर स्थित है, 12 जनवरी, 2020 को फिलीपींस में विस्फोट हुआ था। इसे फिलीपींस ज्वालामुखी विज्ञान एवं भूकंप विज्ञान संस्थान द्वारा "जटिल" ज्वालामुखी के रूप में वर्गीकृत किया गया है।

- एक जटिल ज्वालामुखी, जिसे यौगिक ज्वालामुखी भी कहा जाता है, इसे ऐसे ज्वालामुखी के रूप में परिभाषित किया जाता है, जिसमें केवल एक मुख्य द्वार या शंकु नहीं होता है, लेकिन कई विस्फोट बिंदु होते हैं। ऐसा ही एक अन्य उदाहरण इटली के पश्चिमी तट पर स्थित माउंट वेसुवियस है।

टॉपिक- जी.एस. पेपर 1- भूगोल
स्रोत- ए.आई.आर.

मैटरहॉर्न पर्वत

खबरों में क्यों है?

- स्विट्जरलैंड ने स्विस आल्प्स में मैटरहॉर्न पर्वत पर तिरंगा बनाकर कोरोनोवायरस महामारी के खिलाफ अपनी लड़ाई में भारत के साथ एकजुटता व्यक्त की है।

मैटरहॉर्न पर्वत के संदर्भ में जानकारी

- मैटरहॉर्न, स्विट्जरलैंड और इटली की सीमा पर स्थित आल्प्स का एक पर्वत है।
- यह पेन्निने आल्प्स के विस्तारित मोंटे रोजा क्षेत्र में एक व्यापक, सममित पिरामिडनुमा चोटी है, जिसकी ऊँचाई 4,478 मीटर (14,692 फीट) है।
- यह आल्प्स और यूरोप का छठा सबसे ऊँचा पर्वत है।

आल्प्स पर्वत के संदर्भ में जानकारी

- आल्प्स, एक व्यापक पर्वत श्रृंखला है जो पूरी तरह से यूरोप में स्थित है।
- यह आठ अल्पाइन देशों: फ्रांस, स्विट्जरलैंड, मोनाको, इटली, लिचेटेंस्टीन, ऑस्ट्रिया, जर्मनी और स्लोवेनिया में फैला हुआ है। मोंट ब्लांक, आल्प्स का सबसे ऊंचा पर्वत है।

टॉपिक-जी.एस. पेपर 1-भूगोल

स्रोत- द हिंदू

पेरियार नदी

खबरों में क्यों है?

- हाल ही में, यहां के निवासियों ने पथाराम बांध के शटर खोले जाने के बाद 'पेरियार नदी' के कुछ हिस्सों को काला होते हुए देखा है।

पेरियार नदी के संदर्भ में जानकारी

- यह केरल की सबसे लंबी नदी है, जिसे केरल की जीवन रेखा के रूप में जाना जाता है।
- यह एक बारहमासी नदी है।
- यह इस क्षेत्र की कुछ बारहमासी नदियों में से एक है और कई प्रमुख शहरों के लिए पीने का पानी प्रदान करती है।
- पेरियार नदी पर इदुक्की बांध, केरल की विद्युत शक्ति का एक महत्वपूर्ण अनुपात उत्पन्न करता है।
- यह पेरियार राष्ट्रीय उद्यान से होती हुई पेरियार झील में उत्तर दिशा में बहती है, जो 1895 में नदी पर एक बांध के निर्माण से निर्मित 55 वर्ग कि.मी. का कृत्रिम जलाशय है।
- पानी को झील से पश्चिमी घाट से गुजरती हुई एक सुरंग के माध्यम से तमिलनाडु की वैगई नदी में मोड़ा जाता है।
- झील से, यह नदी उत्तर पश्चिम में नीलेस्वरम गांव से होकर वेम्बानड झील में बहती है और अरब सागर तट तक जाती है।
- पेरियार झील बांध और सुरंग से गुजरती हुई नदी तमिलनाडु के पांच सूखाग्रस्त जिलों के लिए प्राथमिक जल स्रोत के रूप में कार्य करती है, जिनमें थेनी, मदुरई और रामनाथपुरम शामिल हैं।

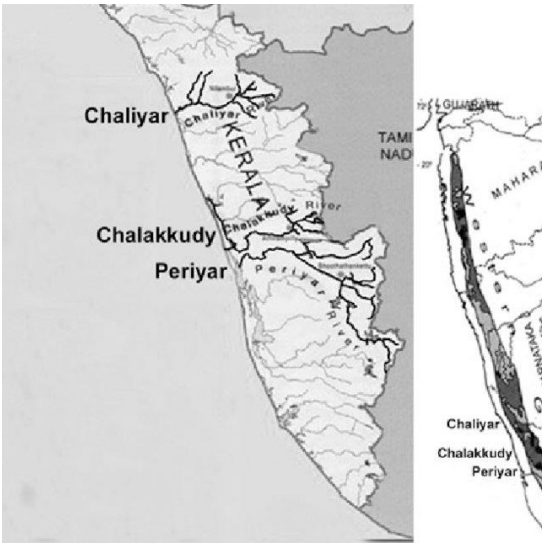

नदी का स्रोत

- यह पश्चिमी घाट की शिवगिरी पहाड़ियों से निकलती है और पेरियार राष्ट्रीय उद्यान से होकर पेरियार झील तक पहुँचती है और फिर पानी वेम्बनाड झील में गिरता और अंत में अरब सागर में गिरती है।

प्रमुख सहायक नदियां

- इसकी सबसे बड़ी सहायक नदियां मुथिरापुझा नदी, मुल्लायार नदी, चेरूथोनी नदी, पेरिंजंकुट्टी नदी और एडामाला नदी हैं।

इस नदी पर स्थित बांध

a. मुल्लापेरियार बांध

- यह केरल के इदुक्की जिले में मुल्लायार और पेरियार नदियों के संगम पर स्थित है, जिसका पड़ोसी राज्य तमिलनाडु द्वारा संचालन और रखरखाव किया जाता है।

b. इदुक्की बांध

- यह पेरियार नदी पर स्थित है और केरल की विद्युत शक्ति का एक महत्वपूर्ण अनुपात उत्पन्न करता है।

नदी पर अन्य मौजूदा पनबिजली परियोजनाएं

- सेंगुलम
- नेरीमंगलम
- पन्नियार

केरल में आर्द्रभूमि:

a) **अष्टमुडी झील:** यह कोल्लम जिले में एक प्राकृतिक बांध है। कल्लादा और पल्लीचल नदियां, इसमें गिरती हैं। यह नींदरकारा में समुद्र के साथ एक मुहाना बनाती है, जो केरल का एक प्रसिद्ध मछली पकड़ने का बंदरगाह है। 'राष्ट्रीय जलमार्ग 3' इससे होकर गुजरता है। कंजीराकोड कायल के करीमेन, अष्टमुडी झील से निकलने वाले प्रमुख मछली बंदरगाह है।

b) **सस्थमकोट्टा झील:** यह केरल की सबसे बड़ी ताजे पानी की झील है, जो कोल्लम जिले में स्थित है। धान के खेत की एक पट्टी से गुजरती हुई कोल्लड नदी की एक अनूठी पुनःपूर्ति प्रणाली थी, जो अब अव्यवस्थित रेत और मिट्टी के खनन के कारण गायब हो गई है। पुन: पूर्ति तंत्र के विनाश के कारण झील अब कम हो रही है।

c) **वेम्बनाड-कोल आद्रभूमि:** यह केरल की सबसे बड़ी झील है, जो अलप्पुझा, कोट्टायम और एर्नाकुलम जिलों में फैली हुई है। हाउसबोट के लिए जाने जाने वाले अलाप्पुझा और कुमायेकॉम जैसे प्रसिद्ध पर्यटन स्थल यहां स्थित हैं। वेम्बनाड में पम्बा-अचेनकोविल नदियों के नदी मुहाने केरल की अनूठी आद्रभूमि स्थलाकृति, कुट्टानाद का निर्माण करते हैं। यह समुद्र तल से नीचे है और विदेशी मछली की किस्मों और धान के खेतों के लिए प्रसिद्ध है, जो समुद्र तल से नीचे हैं।

नोट: कुट्टानाद के किसान जैव-खारी कृषि के लिए प्रसिद्ध हैं। खाद्य एवं कृषि संगठन (एफ.ए.ओ.) ने कुट्टानाड कृषि प्रणाली को वैश्विक रूप से महत्वपूर्ण कृषि विरासत प्रणाली (जी.आई.ए.एच.एस.) घोषित किया है। केरल की प्रमुख नदियों में से चार नदियां पम्बा, मीनाचिल, अचनाकोविल और मणिमाला इस क्षेत्र में बहती हैं। यह पन्नमादा बांध में नाव की दौड़ के लिए प्रसिद्ध है, जिसे मलयालम में वल्लमकल्ली के रूप में जाना जाता है।

टॉपिक- जी.एस. पेपर 1- भूगोल

स्रोत- द हिंदू

एडक्कल गुफाएं

खबरों में क्यों हैं?

- हाल ही में अंबुकुथी पहाड़ियों के पूर्वी भाग पर एक बड़ी दरार विकसित हुई है, जिस पर कुछ दिनों पहले आग लगने के बाद स्थित एडक्कल गुफाओं का कुछ भाग नष्ट हो गया है।

एडक्कल गुफाओं के संदर्भ में जानकारी

- यह केरल में वायनाड जिले के सुल्तान बाथरी तालुक में अम्बुकुथी पर्वत पर स्थित है।

ऐतिहासिक महत्व

- एडक्कल गुफाएं, अपने सचित्र चित्रों (गुफा चित्रों) के लिए प्रसिद्ध हैं, जिन्हें 6000 ई.पू. का माना जाता है, जो भारत में पाषाण युग की नक्काशी के साथ एकमात्र ज्ञात स्थान है, जो नवपाषाण और मध्यपाषाण युग से संबंधित है।

टॉपिक- जी.एस. पेपर 1- भूगोल

स्रोत- इंडियन एक्सप्रेस

आई.एम.डी. ने चक्रवात नामों की नई सूची जारी की है।

खबरों में क्यों है?

- भारत मौसम विज्ञान विभाग (आई.एम.डी.) ने बंगाल की खाड़ी और अरब सागर सहित उत्तर हिंद महासागर में उष्णकटिबंधीय चक्रवातों के नामों की एक नई सूची जारी की है।

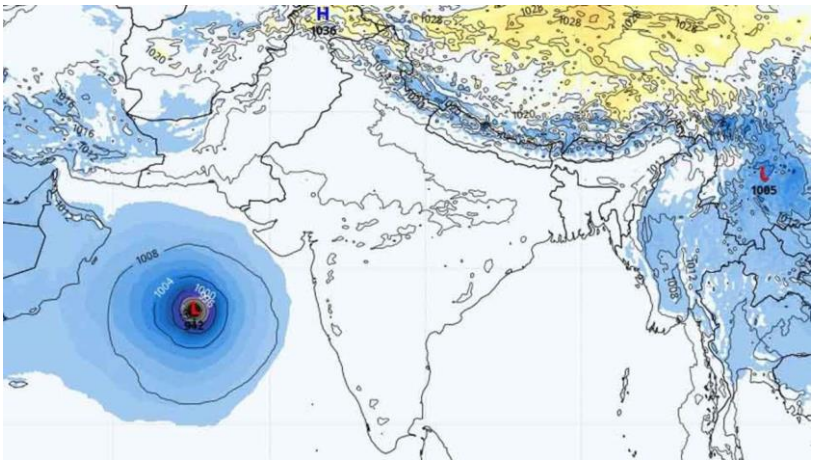

कुछ प्रमुख विशेषताएं

- इसमें 169 नाम शामिल हैं, जिनमें 13 भारत से शामिल हैं जैसे कि गति, तेज, आग, नीर, व्योम, झार और जलधि हैं।
- नई सूची में भारत के अन्य नामों में मुरासु, प्रोबहो, प्रभंजन, घुमी, अंबुद और वेग शामिल हैं।
- वर्तमान सूची में, वास्तविकता में, बांग्लादेश, ईरान, मालदीव, म्यांमार, ओमान, पाकिस्तान, कतर, सऊदी अरब, श्रीलंका, थाईलैंड, संयुक्त अरब अमीरात और यमन सहित क्षेत्रीय विशिष्ट मौसम केंद्रों (आर.एस.एम.सी.) के सभी 13 सदस्य देशों में प्रत्येक के 13 नाम शामिल हैं।

नाम कैसे निर्धारित किए जाते हैं?

- कोई भी उष्णकटिबंधीय चक्रवात जो क्षेत्र से टकराता है उसे सूची में दिए गए नाम से जाना जाता है।
- चूंकि वर्ष 2004 की पूर्व सूची में केवल एक ही नाम- अम्फन (थाईलैंड द्वारा साझाकृत) शेष है।

भारत मौसम विज्ञान विभाग के संदर्भ में जानकारी

- भारत मौसम विज्ञान विभाग, उष्णकटिबंधीय चक्रवात और तूफान वृद्धि की सलाह देने के लिए विश्व के छह आर.एस.एम.सी. में से एक है, जिसने 169 नामों की नई सूची को अंतिम रूप प्रदान किया है।

महत्व

- उष्णकटिबंधीय चक्रवातों का नामकरण वैज्ञानिक समुदायों, आपदा प्रबंधकों, मीडिया और आम जनता की निम्न में मदद करता है:

a. प्रत्येक व्यक्तिगत चक्रवात की पहचान करने में
b. इसके विकास के संदर्भ में जागरूकता पैदा करने में
c. एक क्षेत्र पर उष्णकटिबंधीय चक्रवातों की एक साथ घटना के संदर्भ में भ्रम को दूर करने में
d. एक उष्णकटिबंधीय चक्रवात को आसानी से याद रखने में
e. बहुत अधिक दर्शकों के लिए चेतावनी को तेज और प्रभावी ढंग से प्रसारित करने में

कुछ उष्णकटिबंधीय चक्रवातों के नाम

a. निसरगा (बांग्लादेश द्वारा साझाकृत)
b. गति (भारत)
c. निवार (ईरान)

नोट: उत्तर हिंद महासागर में उष्णकटिबंधीय चक्रवातों के नाम दोहराए नहीं जाते हैं अर्थात एक बार उपयोग किए जाने बाद दोबारा इसका इस्तेमाल नहीं किया जाता है।

टॉपिक- जी.एस. पेपर 1- भूगोल

स्रोत- इंडियन एक्सप्रेस

पैरासेल और स्प्रैटली द्वीप विवाद

खबरों में क्यों है?

- हाल ही में, चीन ने एकतरफा रूप से स्प्रैटली और पेरासेल द्वीपसमूह (दक्षिण चीन सागर में) के आस-पास के 80 द्वीपों, भित्तियों और अन्य भौगोलिक विशेषताओं के नाम चीनी नामों से बदल दिए हैं, जिसकी उन पड़ोसी देशों ने आलोचना की है, जिन्होंने उस क्षेत्र में दावा किया है।

स्प्रैटली द्वीप समूह के संदर्भ में जानकारी

- स्प्रैटली द्वीप समूह, दक्षिण चीन सागर में एक विवादित द्वीपसमूह है, जो काफी हद तक निर्जन है।

विवाद में शामिल देश: चीन, ताइवान, वियतनाम, फिलीपींस और मलेशिया और ब्रुनेई हैं, जिन्होंने भी स्प्रैटली के दक्षिणपूर्वी हिस्से पर दावा किया है।

पैरासेल द्वीप समूह के संदर्भ में जानकारी

- पैरासेल द्वीपसमूह, एक विवादित द्वीपसमूह है जो 130 द्वीपों और प्रवाल भित्तियों का संग्रह है और दक्षिण चीन सागर में स्थित है, जो चीन और वियतनाम से लगभग समान दूरी पर स्थित है।

विवाद में शामिल देश: चीन और वियतनाम हैं

टॉपिक-जी.एस. पेपर 1- भूगोल

स्रोत- इंडियन एक्सप्रेस

विज्ञानं और प्रौद्योगिकी

उन्नत अत्यधिक उच्च आवृत्ति (ए.ई.एच.एफ.)

खबरों में क्यों है?

- अमेरिकी अंतरिक्ष फोर्स ने अपना पहला राष्ट्रीय सुरक्षा मिशन शुरू किया है, जिसे उन्नत अत्यधिक उच्च आवृत्ति कहा जाता है, यहां तक कि कोरोनोवायरस महामारी के कारण अधिकांश देश प्रभावित हैं।

उन्नत अत्यधिक उच्च-आवृत्ति उपग्रह के संदर्भ में जानकारी

- यह छठा सैन्य संचार उपग्रह है और अन्य पांच उपग्रहों को 2010 और 2019 के बीच लॉन्च किया गया था। उपग्रह तारामंडल रणनीतिक कमान और जमीन, समुद्र और हवा में संचालित होने वाले वारफाइटर के लिए वैश्विक, जीवित, संरक्षित संचार क्षमता प्रदान करता है।
- यह परमाणु युद्ध सहित संघर्ष के सभी स्तरों में सैन्य बलों को संचार की एक जीवित रेखा प्रदान करता है।
- यह संचार नीदरलैंड, ब्रिटेन और कनाडा सहित अमेरिका और इसके अंतर्राष्ट्रीय भागीदारों के सशस्त्र बलों को दिया जाएगा।
- यह पहल प्राकृतिक संसाधनों के क्षरण से होने वाली शांति और सुरक्षा चुनौतियों को कम करने के लिए संघर्ष के बाद के क्षेत्रों में भूमि और वन पुनर्वास का समर्थन करेगी।

टॉपिक- जी.एस. पेपर 3- रक्षा

स्रोत- आउटलुक

ग्रेस-एफ.ओ. मिशन

खबरों में क्यों है?

- नासा ने ग्रेस एफ.ओ. मिशन उपग्रह का प्रयोग करते हुए भूजल, मृदा की नमी का मानचित्रण करने हेतु नये वैश्विक मानचित्र जारी किए हैं।

उद्देश्य

- भूमिगत जल भंडारण में परिवर्तन, झीलों में पानी की मात्रा, मिट्टी की नमी, बर्फ की चादरों, ग्लेशियर और समुद्र के स्तर में परिवर्तन की निगरानी करने के लिए प्रत्येक 30 दिनों में पृथ्वी के गुरूत्व क्षेत्र का मानचित्रण करना है।

ग्रेस-एफ.ओ. मिशन के संदर्भ में जानकारी

- ग्रेविटी रिकवरी एंड क्लाइमेट एक्सपेरिमेंट (गुरूत्व बहाली एवं जलवायु परीक्षण) फॉलो-ऑन (GRACE-FO) मिशन वर्ष 2018 में लॉन्च किया गया था।
- यह मूल ग्रैस मिशन का उत्तराधिकारी है, जिसने 2002-2017 तक पृथ्वी की परिक्रमा की थी, जिस पर 2017 के अंत में पाबंदी लगा दी गई थी।
- ग्रेस को नासा और जर्मन एयरोस्पेस सेंटर के संयुक्त मिशन के रूप में लागू किया गया था।

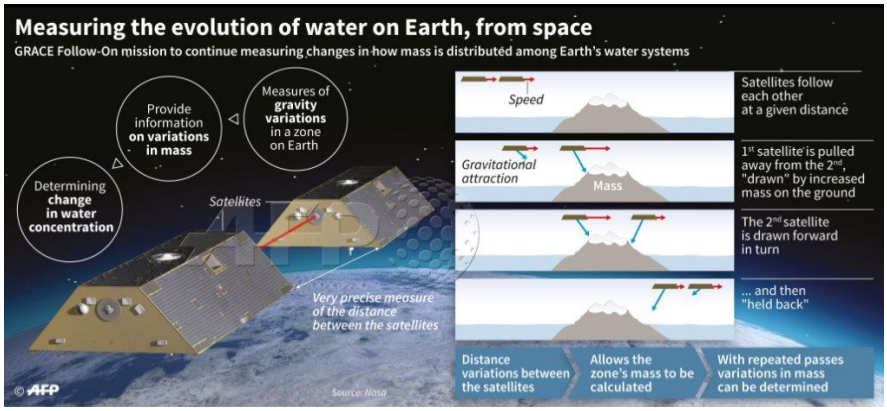

यह किस प्रकार कार्य करता है?

- ग्रेस-एफ.ओ. का कच्चा डेटा मापों की एक श्रृंखला से तुलना करता है जो दर्शाता है कि दो उपग्रह एक दूसरे से कितनी दूर हैं।
- जुड़वां उपग्रह, पृथ्वी के चारों ओर कक्षा में एक दूसरे का अनुसरण करते हैं, एक-दूसरे से लगभग 137 मील (220 कि.मी.) की दूरी पर हैं, अपने बीच की दूरी को मापने के लिए लगातार एक दूसरे को माइक्रोवेव सिग्नल भेजते हैं।
- जैसा कि ये जोड़ी पृथ्वी का चक्कर पूरा कर लेती है, थोड़ा अधिक मजबूत गुरुत्वाकर्षण (अधिक द्रव्यमान सांद्रता) के क्षेत्र पहले नेतृत्वकर्ता उपग्रह को प्रभावित करते हैं, जो इसे पीछा करने वाले उपग्रह से और अधिक दूर कर देता है।
- उपग्रहों से प्राप्त यह सभी जानकारी पृथ्वी के औसत गुरुत्वाकर्षण क्षेत्र के मासिक मानचित्रों का निर्माण करने के लिए उपयोग की जाएगी, जो कि इस चीज की विस्तृत जानकारी प्रदान करेगा कि किस प्रकार द्रव्यमान, अधिकांश मामलों में, पानी ग्रह के चारों ओर घूम रहा है।

टॉपिक- जी.एस. पेपर 3- विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी

स्रोत- नासा.ऑर्ग

कवच - कोविड-19 स्वास्थ्य संकट के साथ युद्ध को संवर्धित करने हेतु केंद्र

खबरों में क्यों है?

- हाल ही में, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग ने कोविड-19 वैश्विक महामारी से निपटने के लिए त्वरित प्रतिक्रिया के रूप में कोविड-19 स्वास्थ्य संकट के साथ युद्ध को संवर्धित करने

हेतु एक केंद्र की स्थापना को मंजूरी प्रदान की है।

उद्देश्य

- इसका उद्देश्य कोविड-19 चुनौतियों को संबोधित करने वाले नवाचारों और स्टार्ट-अप्स का स्काउट, मूल्यांकन और समर्थन करना है।

कार्यान्वयन संस्था

- विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग द्वारा समर्थित आई.आई.टी. बॉम्बे में एक प्रौद्योगिकी व्यवसाय इनक्यूबेटर, नवाचार एवं उद्यमिता सोसायटी (एस.आई.एन.ई.) है।

कवच के संदर्भ में जानकारी

- कवच के शासनादेश को संभावित स्टार्टअप्स को अपेक्षित वित्तीय सहायता और निधि परिनियोजन लक्ष्यीकरण नवाचारों के माध्यम से समय पर समर्थन का विस्तार करना होगा, जो अगले 6 महीनों के भीतर बाजार में तैनात करने योग्य हैं।
- यह 50 नवाचारों और स्टार्टअप्स की पहचान करेगा जो नए, कम लागत, सुरक्षित और प्रभावी वेंटिलेटर, श्वसन सहायक सामग्रियों, सुरक्षात्मक गियर, सैनिटाइज़र, कीटाणुनाशक, निदान, चिकित्सा, सूचना विज्ञान के लिए नए समाधान और कोविड-19 के नियंत्रण के लिए कोई भी प्रभावी हस्तक्षेप हैं।
- यह प्राथमिकता वाले कोविड-19 समाधानों की पहचान वाले क्षेत्रों में इन उत्पादों और समाधानों के टेस्ट, परीक्षण और बाजार परिनियोजन के लिए अखिल भारतीय नेटवर्क तक पहुंच प्रदान करेगा।

टॉपिक- जी.एस. पेपर 3- विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी

स्रोत- पी.आई.बी.

उच्च प्राथमिकता क्षेत्रों में अनुसंधान की गहनता (आई.आर.पी.एच.ए.)

खबरों में क्यों है?

- हाल ही में, विज्ञान एवं इंजीनियरिंग अनुसंधान बोर्ड ने उच्च प्राथमिकता क्षेत्रों में अनुसंधान की गहनता (आई.आर.पी.एच.ए.) के अंतर्गत प्रतिस्पर्धी प्रस्तावों को आमंत्रित किया था।

उद्देश्य

- कोविड-19 और संबंधित श्वसन वायरल संक्रमणों के खिलाफ नई एंटी-वायरल दवाओं, टीके और सस्ते निदान पर महामारी विज्ञान के अध्ययन के लिए राष्ट्रीय अनुसंधान एवं विकास प्रयासों को गति प्रदान करना है।

उच्च प्राथमिकता क्षेत्रों में अनुसंधान की गहनता के संदर्भ में जानकारी

- यह विज्ञान एवं इंजीनियरिंग अनुसंधान बोर्ड (एस.ई.आर.बी.) का एक कार्यक्रम है, जो आधारभूत विज्ञान में उन्नयन के दृष्टिकोण से उच्च प्राथमिकता वाले क्षेत्रों में प्रस्तावों का समर्थन करता है।
- यह परियोजना, एक प्रमुख अन्वेषक (पी.आई.) के नेतृत्व में स्थापित अनुसंधान समूहों के आसपास स्थापित की जाएगी।
- परियोजना की अवधि सामान्यत: 5 वर्ष (कोविड-19 के लिए 3 वर्ष) है।

विज्ञान एवं इंजीनियरिंग अनुसंधान बोर्ड के संदर्भ में जानकारी

- यह भारत सरकार के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग के अंतर्गत एक सांविधिक निकाय है, जिसे वर्ष 2009 में भारत की संसद के एक अधिनियम द्वारा स्थापित किया गया था।
- बोर्ड का गठन विज्ञान और इंजीनियरिंग के क्षेत्र में बुनियादी अनुसंधान को बढ़ावा देने और इस प्रकार के अनुसंधान के लिए वैज्ञानिकों, शैक्षणिक संस्थानों, अनुसंधान एवं विकास प्रयोगशालाओं, औद्योगिक चिंताओं और अन्य एजेंसियों को वित्तीय सहायता प्रदान करने के लिए किया गया था।

टॉपिक- जी.एस. पेपर 3- विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी

स्रोत- पी.आई.बी.

nCoVSENSEs (एनकोवसेंस) (TM)

खबरों में क्यों है?

- केंद्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय ने nCoVSENSEs (TM) उपकरणों को विकसित करने के लिए एक पुणे आधारित स्वास्थ्य सेवा स्टार्टअप 'मॉड्यूल इनोवेशन' को वित्तपोषित किया है।

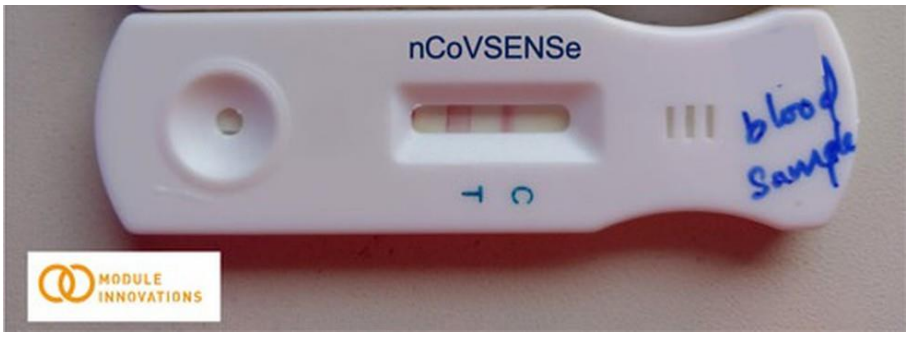

NCoVSENSEs (TM) के संदर्भ में जानकारी

- यह एक रैपिड टेस्ट डिवाइस है जिसका उद्देश्य वायरल संक्रमण की शुरुआत में मानव शरीर में उत्पन्न **IgG और IgM** एंटीबॉडी का पता लगाना है और यह स्पाइक प्रोटीन के खिलाफ लक्षित है जो इसे कोविड 19 के लिए विशिष्ट बनाता है।

- यह डिवाइस देश में लोगों की बड़े पैमाने पर स्क्रीनिंग करने में मदद करेगी और रोगियों में संक्रमण की पुष्टि करेगी।
- यह एक संक्रमित रोगी के ठीक होने को भी निर्धारित करेगी और रोगियों में संक्रमण के चरण की पहचान करेगी।

IgG और IgM के संदर्भ में जानकारी

- इम्यूनोग्लोबुलिन **G** (**IgG**), एंटीबॉडी का सबसे प्रचुर प्रकार है, जो शरीर के सभी तरल पदार्थों में पाया जाता है और बैक्टीरिया और वायरल संक्रमण से बचाता है।
- इम्युनोग्लोबुलिन **M** (**IgM**), जो मुख्य रूप से रक्त और लसीका द्रव में पाया जाता है, यह शरीर द्वारा बनाई गई पहली एंटीबॉडी है, जो नए संक्रमणों से लड़ती है।

वर्तमान विधि

- रियल-टाइम रिवर्स ट्रांसक्रिप्शन पॉलीमरेज़ चेन रिएक्शन (आर.टी.-पी.सी.आर.) की वर्तमान पुष्टिकरण विधि हालांकि एक स्वर्ण मानक है, जो महंगा और समय लेने वाली विधि है।
- यह नया रैपिड टेस्ट कम लागत पर अधिक कुशलता से समस्या का प्रबंधन करने में मदद करेगा।

टॉपिक- जी.एस. पेपर 3- विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी

स्रोत- इंडियन एक्सप्रेस

कोरोनावायरस के प्रसार को कम करने के लिए भारत में शुरू की गई अनुसंधान परियोजनाएं

खबरों में क्यों हैं?

- विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग- विज्ञान एवं इंजीनियरिंग बोर्ड (डी.एस.टी.-एस.ई.आर.बी.) ने कई विशेष अनुसंधान परियोजनाओं की घोषणा की है।
- कार्यान्वयन योग्य प्रौद्योगिकियों में आगे के विकास के लिए पांच परियोजनाओं के पहले सेट का चयन किया गया है।

इन पांच प्रोजेक्ट के संदर्भ में जानकारी

इन परियोजनाओं को कोविड- 19 प्रोजेक्टों के लिए एक विशेष विशेषज्ञ समिति द्वारा सहकर्मी-समीक्षा और मूल्यांकन के बाद चुना गया था।

- पहला प्रोजेक्ट कोरोनावायरस के लिए संभावित मेटाबोलाइट बायोमार्कर हस्ताक्षर की खोज और चिकित्सा के लिए नए लक्ष्यों की पहचान करने में मदद करेगा।
- बायोमार्कर या जैविक मार्कर, एक निश्चित समय पर एक कोशिका या एक जीव की गतिविधि को पकड़ता हैं और संभावित दवाओं या टीकों की पहचान करने में मदद करता है।
- दूसरी परियोजना कोरोनावायरस, सार्स-सी.ओ.वी.-2 जैसे संक्रामक रोगजनकों के कारण होने वाली संक्रामक बीमारियों की रोकथाम के लिए स्वास्थ्य देखभाल सेटिंग्स में प्रयोग की जाने वाली निर्जीव सतहों के लिए विषाणुजनित कोटिंग्स को विकसित करने में मदद करेगी।
- तीसरी परियोजना इन्फ्लूएंजा वायरस के कारण संक्रमण के प्रसार को रोकने के लिए एंटीवायरल सतह कोटिंग्स को विकसित करने से संबंधित है।
- इसका उद्देश्य छोटे आणविक और बहुलक यौगिकों को विकसित करना है जो विभिन्न सतहों पर लेपित होंगे और श्वसन वायरस को संपर्क में आने पर पूरी तरह से मार देंगे।

- चौथी परियोजना, ऐसी सामग्री विकसित करना है जो सतहों को कीटाणुरहित करने और किसी भी चिपकने वाले वायरस या बैक्टीरिया को हटाने के लिए पोछे पर लगाई जा सकती है।
- पांचवीं परियोजना 2019-nCoV के एंटीबॉडी-आधारित कैप्चर के विकास और सीटू जेल में लिपिड-आधारित का उपयोग करके इसकी निष्क्रियता से संबंधित है।

टॉपिक- जी.एस. पेपर 3- विज्ञान एवं तकनीकि

स्रोत- टी.ओ.आई., इकानॉमिक टाइम्स

हाइड्रोक्सीक्लोरोक्वीन

खबरों में क्यों है?

- यौगिक "हाइड्रोक्सीक्लोरोक्वीन" प्राय: खबरों में है। सरकार ने हाइड्रोविक्लोरोक्वीन के निर्यात पर प्रतिबंध को कम करने का फैसला किया है, यह जो एक ऐसी दवा है जिसने कोविड-19 के उपचार और रोकथाम में वैश्विक रुचि पैदा की है।

हाइड्रोक्सीक्लोरोक्वीन क्या है?

- यह एक एंटीमलेरिया दवा विकल्प है, जिसे क्लोरोक्वीन से कम विषाक्त माना जाता है और कुछ उदाहरणों में निर्धारित किया गया है। रूहमैट्वाइड और ल्यूपस के रोगियों के लिए डॉक्टर भी हाइड्रोक्सीक्लोरोक्वीन लिखते हैं।

अन्य संबंधित जानकारी

- पिछले महीने के अंत में, भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद (आई.सी.एम.आर.) ने कोविड-19 रोगियों का इलाज करने वाले स्पर्शोन्मुख स्वास्थ्य देखभाल कार्यकर्ताओं में हाइड्रॉक्सीक्लोरोक्वीन के उपयोग की सिफारिश करते हुए एक एडवाइजरी जारी की थी।
- इस दवा को शेड्यूल एच 1 दर्जे में स्थानांतरित कर दिया गया है, जिसका अर्थ है कि जिन रोगियों को दवा की आवश्यकता है तो उनके पास इस दवा को खरीदने के लिए हर बार एक नया पर्चा होना चाहिए।
- औषधि एवं सौंदर्य प्रसाधन नियम, 1945 में अनुसूची H1 में निर्दिष्ट दवाओं की बिक्री के लिए शर्तें दी गई हैं।

टॉपिक- जी.एस. पेपर 3- विज्ञान एवं तकनीकि

स्रोत- इंडियन एक्सप्रेस

मधुबन गाजर

खबरों में क्यों है?

- हाल ही में, मधुबन गाजर, गुजरात के जूनागढ़ जिले के एक किसान वैज्ञानिक श्री वल्लभभाई वासरामभाई मारवानिया द्वारा विकसित उच्च- **β कैरोटीन और आयरन** सामग्री के साथ एक बॉयोफोर्टिफाइड गाजर की किस्म है।

बायोफोर्टिफिकेशन क्या है

- यह वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा खाद्य फसलों के पोषण की गुणवत्ता में कृषि संबंधी प्रथाओं, पारंपरिक पौधों के प्रजनन या आधुनिक जैव प्रौद्योगिकी के माध्यम से सुधार किया जाता है।

मधुवन गाजर के संदर्भ में जानकारी

- मधुवन गाजर, एक उच्च कोटि की पौष्टिक गाजर किस्म है जिसे चयन विधि के माध्यम से उच्च β-कैरोटीन सामग्री और सूखी आयरन की सामग्री के आधार पर विकसित किया जाता है।
- इसका उपयोग विभिन्न मूल्य वर्धित उत्पादों जैसे गाजर चिप्स, जूस और अचार के लिए किया जाता है।

संबंधित जानकारी

- राष्ट्रीय नवाचार फाउंडेशन (एन.आई.एफ.)- भारत, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग के अंतर्गत एक स्वायत्त संस्थान है, भारत सरकार ने राजस्थान कृषि अनुसंधान संस्थान (आर.ए.आर.आई.), जयपुर में इस किस्म के लिए सत्यापन परीक्षण किया है।
- परीक्षणों में यह पाया गया है कि मधुबन गाजर की किस्म में जांच किस्म की तुलना में अपेक्षाकृत अधिक किस्म और पौधा बायोमास की उपज होती है।

टॉपिक- जी.एस. पेपर 3- विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी

स्रोत- पी.आई.बी.

सभी इन्फ्लुएंजा डेटा के साझाकरण पर वैश्विक पहल

खबरों में क्यों है?

- हाल ही में, भारत ने सभी इन्फ्लुएंजा डेटा के साझाकरण पर वैश्विक पहल (जी.आई.एस.ए.आई.डी.) के साथ कोरोनोवायरस के 9 संपूर्ण-जीनोम अनुक्रम साझा किए हैं।

GISRS
GLOBAL INFLUENZA SURVEILLANCE & RESPONSE SYSTEM
Uniting the world in the fight against influenza

सभी इन्फ्लुएंजा डेटा साझा करने पर वैश्विक पहल के संदर्भ में जानकारी

- सभी इन्फ्लुएंजा डेटा के साझाकरण पर वैश्विक (जी.आई.एस.ए.आई.डी.) पहल को वर्ष 2008 में 61वीं विश्व स्वास्थ्य सभा के अवसर पर लांच किया गया था।
- इस पहल का उद्देश्य नैदानिक और महामारी विज्ञान के आंकड़ों से संबंधित सभी इन्फ्लूएंजा वायरस अनुक्रम के अंतर्राष्ट्रीय साझाकरण को बढ़ावा देना है जिससे कि यह समझा जा सकें कि वायरस कैसे विकसित होते हैं, फैलते हैं और संभवतः महामारी बन जाते हैं।
- इसका मुख्यालय जर्मनी के म्यूनिख में स्थित है।

टॉपिक- जी.एस. पेपर 3- विज्ञान एवं तकनीकि

स्रोत- द हिंदू

सक्रिय वायरोसोम प्रौद्योगिकी

खबरों में क्यों है?

- पुणे स्थित फर्म, सीगल बॉयोसॉल्यूशंस, नई जैविक तकनीकों पर काम करने वाला एक स्टार्टअप है, यह विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग द्वारा वित्तपोषित किया जा रहा है, जो कोविड-19 आपातकाल के लिए सक्रिय वायरोसोम (ए.वी.) -वैक्सीन और इम्यूनोडायग्नोस्टिक किट के विकास का कार्य कर रहा है।
- सीगल बायोसोल्यूशन, पहली कंपनी है जिसे सरकार कोरोनोवायरस वैक्सीन प्रयासों के लिए आर्थिक रूप से समर्थन कर रही है।

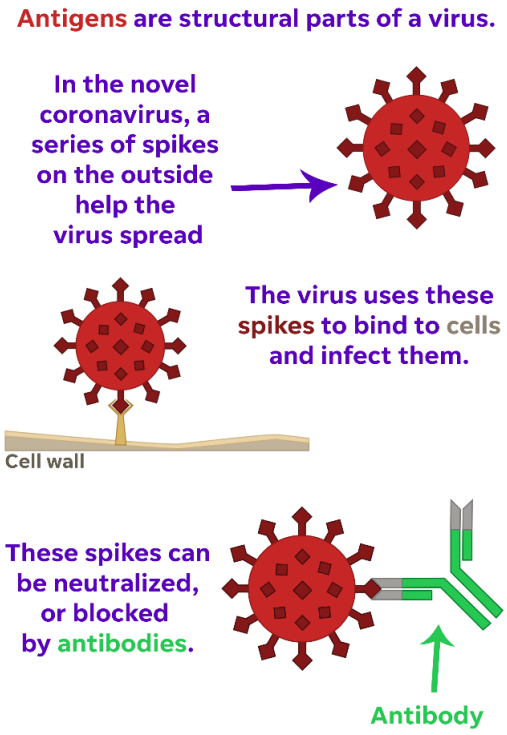

सक्रिय वायरोसोम प्रौद्योगिकी के संदर्भ में जानकारी

- इसे सीगल बायो ने विकसित किया है, यह वैक्सीन और इम्यूनोथेरेप्यूटिक एजेंटों के उत्पादन के लिए उपयोगी है। ए.वी.टी. प्लेटफॉर्म नए, गैर-खतरनाक और किफायती उत्पादन के लिए सहायक है। सक्रिय वायरोसोम एजेंट, लक्षित रोगज़नक़ से वांछित एंटीजन को प्रदर्शित कर रहे हैं।
- इसे कोविड-19 संक्रमण की रोकथाम के लिए एक नई वैक्सीन विकसित करने और कोविड-19 के लिए इम्यूनोडायग्नॉस्टिक एलिसा किट विकसित करने के लिए उपयोग किया जाएगा।

पी.सी.आर. डायग्नोस्टिक किट और इम्यूनोडायग्नॉस्टिक किट में अंतर:

- पॉलिमिरेज़ श्रृंखला अभिक्रिया (पी.सी.आर.) आधारित डायग्नोस्टिक किट, जो वर्तमान में भारत में उपलब्ध हैं, यह तेज हैं और सक्रिय कोविड-19 संक्रमण का पता लगाने में सक्षम हैं।
- यह स्पर्शोन्मुख संक्रमण या उन लोगों की पहचान नहीं कर सकता है जो अतीत में कोविड-19 से संक्रमित थे या उससे संक्रमित व्यक्तियों के संपर्क में थे और अभी भी वायरस फैला रहे हैं।
- इसके विपरीत, इम्युनोडायग्नोस्टिक किट कोविड-19 के लिए एंटीबॉडी का पता लगाने में मदद करती है, जो इन संक्रमणों की भी पहचान सकती है।

टॉपिक- जी.एस. पेपर 3- विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी

स्रोत- इंडियन एक्सप्रेस

मौलिक ब्लैक होल

खबरों में क्यों है?

- इंटर-यूनिवर्सिटी सेंटर फॉर एस्ट्रोनॉमी एंड एस्ट्रोफिजिक्स (IUCAA) के शोधकर्ताओं ने मौलिक ब्लैक होल (पी.बी.एच.) का अध्ययन किया है, जो ब्रह्मांड के संभावित ऊर्जा स्तर में मामूली वृद्धि के परिणामस्वरूप पैदा हुए थे।

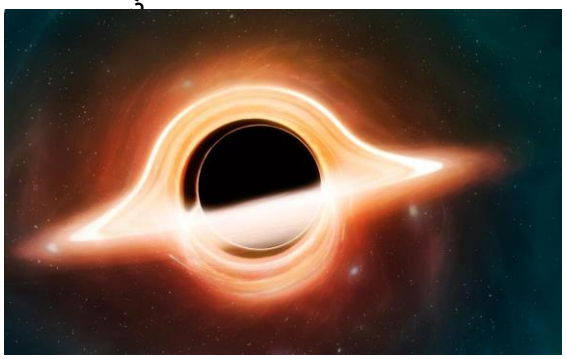

मौलिक ब्लैक होल के संदर्भ में जानकारी

- ये गर्म बिग बैंग चरण के दौरान बनाए गए थे।
- यह माना जाता है कि वे बड़े सितारों के पतन के विपरीत विकिरणों के पतन के परिणामस्वरूप बनते हैं, जो किसी भी अन्य ब्लैक होल के मामले में होता है।

- मौलिक ब्लैक होल 300 कि.मी. के रूप में बड़े पैमाने पर विशाल हो सकते हैं या परमाणु के नाभिक की तरह बेहद छोटे हो सकते हैं।

कुछ प्रमुख विशेषताएं

- वैज्ञानिकों के अनुसार, समय बीतने के साथ-साथ स्फीति क्षेत्र में प्रचलित यह एकसमान ऊर्जा समाप्त हो जाती है।
- लेकिन, इससे पहले कि ऊर्जा पूरी तरह से समाप्त हो जाए, एक बहुत कम समय के लिए सहसा के रूप में संभावित ऊर्जा में मामूली वृद्धि हो सकती है अन्यथा ऊर्जा स्तर का ग्राफ नीचे आता है।
- परिणामस्वरूप, ब्रह्मांड अपनी सामान्य मंदन दर को पुन: शुरू करता है।
- लगभग 14 बिलियन वर्ष पहले, गर्म बिग बैंग चरण के शुरू होने से पहले, बहुत ही तेज दर से युवा ब्रह्मांड को सक्रिय और विस्तारित पाया गया था।
- विशेषज्ञों का कहना है कि इसके आकार में यह घातीय वृद्धि, एकसमान ऊर्जा क्षेत्र और घनत्व की मौजूदगी के कारण हुई है क्योंकि ब्रह्मांड कॉस्मिक स्फीति चरण से गुजर रहा था।
- ब्रह्मांड अपने मूल आकार का लगभग 10^27 गुना तक विस्तारित हो गया था, वह भी, कॉस्मिक स्फीति चरण के समापन के समय के एक सेकंड के कुछ अंश के भीतर हो गया था।
- इसके बाद, इस गुरूत्वाकर्षण बल के पास मौजूद अवशेष ऊर्जा मुख्य रूप से प्रोटॉन, इलेक्ट्रॉनों, न्यूट्रॉन और अन्य कणों के अलावा फोटॉन (प्रकाश) में परिवर्तित हो गई थी।
- चूंकि कॉस्मिक स्फीति चरण के दौरान ब्रह्मांड तेजी से बढ़ता रहा था, इसलिए इसने छोटे क्वांटम जिटर्स भेजे हैं।
- ये परिवर्तन एक विशिष्ट फैशन में जारी किए गए थे, जिसने पर्याप्त रूप से बड़े और धीरे-धीरे आकाशगंगाओं और सितारों को जन्म दिया है।

अनुसंधान चल रहा है और आगे के अध्ययन से गहरी अंतर्दृष्टि का पता चल सकता है कि ऊर्जा कैसे क्षय हो रही थी।

ब्लैक होल के संदर्भ में जानकारी

ब्लैक होल, अंतरिक्ष में एक स्थान है जहाँ गुरुत्वाकर्षण बल इतना आकर्षित करता है कि प्रकाश भी बाहर नहीं निकल सकता है।

- गुरुत्वाकर्षण इतना मजबूत होता है क्योंकि इस द्रव्य को एक छोटे स्थान में निचोड़ दिया जाता है जो तब हो सकता है जब कोई तारा मरता है।
- ब्लैक होल अदृश्य होते हैं क्योंकि कोई भी प्रकाश इससे बाहर नहीं निकल सकता है। विशेष उपकरणों के साथ अंतरिक्ष दूरबीनें ब्लैक होल को खोजने में मदद कर सकती हैं।
- विशेष उपकरण यह देख सकते हैं कि कैसे वे तारे, अन्य तारों की तुलना में अलग तरह से कार्य करते हैं, जो ब्लैक होल के बहुत करीब हैं।

टॉपिक- जी.एस. पेपर 3- विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी

स्रोत- इंडियन एक्सप्रेस

NeMO-नेट

खबरों में क्यों है?

- हाल ही में, नासा ने एक 'NeMO-नेट' वीडियो गेम बनाया है जहां खिलाड़ी वर्चुअल महासागर अनुसंधान अभियान पर जा सकते हैं जो नेविगेशन के लिए वास्तविक डेटा के साथ प्रवाल भित्तियों की तलाश कर रहे हैं।

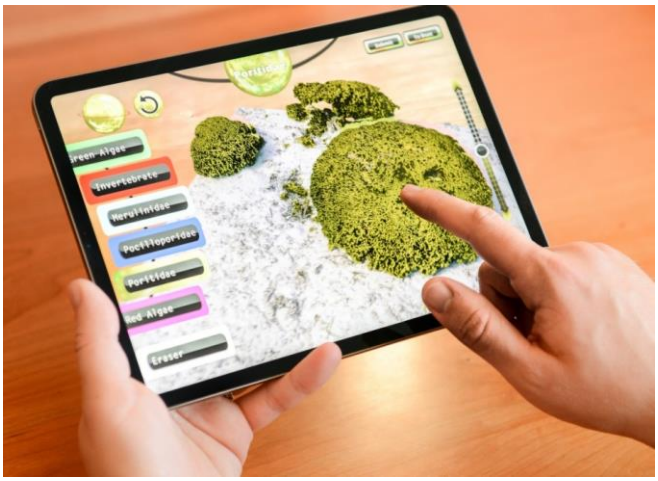

NeMO-नेट के संदर्भ में जानकारी

- NeMO-नेट को न्यूरल मल्टी-मॉडल अवलोकन और प्रशिक्षण नेटवर्क के रूप में भी जाना जाता है।
- यह नासा द्वारा विकसित एक वीडियो गेम है, जिसमें खिलाड़ी त्रिविमीय छवियों का उपयोग करके प्रवाल को पहचान सकते हैं और वर्गीकृत कर सकते हैं, जबकि समुद्र को नेविगेट कर सकते हैं और नासा की प्रवाल मानचित्र बनाने में मदद करते हैं।
- यह गेम वास्तविक नासा डेटा का उपयोग करता है जिसमें प्रवाल, शैवाल और समुद्री घास के साथ समुद्र तल की त्रिविमीय छवियां शामिल हैं, जो कि प्यूर्टो रिको, गुआम, अमेरिकी समोआ और अन्य स्थानों पर अभियानों पर ड्रोन या विमान से ली गई हैं।

कुछ प्रमुख विशेषताएं

- कोई भी, यहां तक कि एक पहला ग्रेडर, इस गेम को खेल सकता है और इन आंकड़ों के माध्यम से हमें जीवन के सबसे सुंदर रूपों में से एक को मैप करने में मदद करता है। इस तरीके से प्रवाल भित्तियों, विशाल समुद्री पारिस्थितिकी तंत्र के बारे में जागरूकता आसानी से फैलाई जा सकती है।
- यह गेम ऐप्पल ऐप स्टोर में उपलब्ध है और इसे आईफ़ोन, आईपैड और मैक कंप्यूटर पर खेला जा सकता है। एंड्राइड सिस्टम के लिए एक संस्करण आ रहा है।
- इस ऐप में, खिलाड़ी डाइव पर जाएंगे, जहां वे वास्तविक नासा डेटा और छवियों के संपर्क में आते हैं, जो विभिन्न प्रकार के प्रवालों के बारे में सीखते हैं जो समुद्र तल पर पाए जाते हैं और उन्हें हाईलाइट करते हैं।
- यह मिशन नासा के सुपर कंप्यूटर की प्रवाल को पहचानने और उन्हें वर्गीकृत करने के लिए सीखने में मदद करेगा। जितने ज्यादा लोग NeMO-नेट खेलते हैं, उतनी ही बेहतर सुपरकंप्यूटर की मैपिंग क्षमताएं बनती हैं।

वैज्ञानिकों का कहना है कि समुद्र के बढ़ते तापमान, प्रदूषण और समुद्र के अम्लीकरण से प्रवाल को खतरा है।

टॉपिक- जी.एस. पेपर 3- विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी

स्रोत- नासा.ऑर्ग

आई.सी.एम.आर. ने नमूनों की पूल टेस्टिंग का सुझाव दिया है।

खबरों में क्यों है?

- हाल ही में, भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद (आई.सी.एम.आर.) ने देश भर में प्रयोगशालाओं द्वारा किए जा रहे परीक्षणों की संख्या बढ़ाने के लिए कोविड-19 के परीक्षण के लिए पूल नमूनों का उपयोग करने के लिए एक एडवाइजरी जारी की है।

- भारत में कोविड-19 मामलों की संख्या तेजी से बढ़ रही है। इसे देखते हुए, प्रयोगशालाओं द्वारा किए जा रहे परीक्षणों की संख्या में वृद्धि करना महत्वपूर्ण है। मामलों में सकारात्मकता दर अभी भी कम है। अत: यह स्क्रीनिंग के लिए पूल नमूनों का उपयोग करने में मदद कर सकता है।

पूल टेस्टिंग क्या है?

- पूल टेस्टिंग में एक बार में एक के बजाय पांच नमूने शामिल होते हैं। यदि एक पूल पॉजिटिव आता है, तो प्रत्येक नमूने का व्यक्तिगत परीक्षण किया जाएगा।

पूल टेस्टिंग का क्या उद्देश्य है?

- आवश्यक संसाधनों को दोगुना किए बिना समान समय में अधिक नमूनों को स्क्रीन करने के लिए प्रयोगशालाओं की क्षमता बढ़ाना
- लागत में काफी बचत और टेस्टिंग किटों की आवश्यक्ता में कमी
- पूल स्क्रीनिंग बीमारी के स्पर्शोन्मुख मामलों को ट्रैक करने में भी मदद कर सकती है, जिससे सामुदायिक संक्रमण पर नज़र रखी जा सकती है।

कार्यप्रणाली

- आई.सी.एम.आर. ने एडवाइजरी में कहा है कि पूल टेस्टिंग एल्गोरिथ्म में एक नमूना पूल की पॉलिमरेज़ श्रृंखला अभिक्रिया (आर.टी.-पी.सी.आर.) स्क्रीनिंग शामिल है, जिसमें कई नमूने शामिल हैं।

- यदि कोई पूल टेस्ट पॉजिटिव आता है तो प्रत्येक नमूने का व्यक्तिगत परीक्षण किया जाएगा।
- कई नमूनों (पांच तक) के साथ कोविड-19 के लिए रियल टाइम पी.सी.आर. टेस्टिंग, संक्रमण की प्रसार दर कम होने पर संभव है।
- आर.टी.-पी.सी.आर. टेस्ट का उपयोग यह निर्धारित करने के लिए किया जाता है कि क्या कोई व्यक्ति कोविड-19 से संक्रमित है, जो कि सार्स-सी.ओ.वी.-2 वायरस के कारण होता है।
- यह टेस्ट केवल संक्रमण के कम प्रसार वाले क्षेत्रों में उपयोग करने के लिए निर्धारित किया गया है अर्थात 2 प्रतिशत से कम की सकारात्मकता दर वाले क्षेत्रों में किया जाना निर्धारित किया गया है।
- इसका अर्थ है कि एक क्षेत्र में 1,000 नमूनों में से यदि इनमें से 20 से कम कोविड-19 के लिए टेस्ट पाए गए हैं, तो कहा जाएगा कि इस क्षेत्र में सकारात्मकता दर कम है और यह क्षेत्र पूल टेस्टिंग के लिए अर्हता प्राप्त करेगा।

इस पहल के क्या लाभ हैं?

यह विधि दो तरीकों से प्रभावी है:

- यह टेस्टिंग की क्षमता को बढ़ाती है
- यह बहुत सारे संसाधनों- समय, लागत और जनशक्ति की बचत करती है।
- अंडमान और निकोबार प्रशासन, प्रयोग की जाने वाली टेस्टिंग किटों की संख्या को कम करने के लिए नमूनों की पूल टेस्टिंग कर रहा है, क्यों कि देश टेस्टिंग किटों की एक तीव्र कमी का सामना कर रहा है।

कौन से क्षेत्र पूल टेस्टिंग कर सकते हैं?

- कोविड-19 के कम प्रसार वाले क्षेत्रों के अतिरिक्त, जिन्हें शुरू में मौजूदा आंकड़ों के आधार पर निर्धारित किया जाएगा, एडवाइजरी 2-5 प्रतिशत की सकारात्मकता दर वाले क्षेत्रों में पूल टेस्टिंग का सुझाव देती हैं।
- 5 प्रतिशत से अधिक सकारात्मकता दर वाले क्षेत्रों या आबादी में नमूनों की पूलिंग की सिफारिश नहीं की गई है।

नोट: यह स्पष्ट नहीं है, हालांकि, क्या पूल टेस्टिंग का उपयोग केवल उन क्षेत्रों में किया जाएगा जहां पहले ही टेस्ट किए जा चुके हैं।

टॉपिक- जी.एस. पेपर 3- विज्ञान एवं तकनीकि

स्रोत- द हिंदू + आई.सी.एम.आर.

कोरोनोवायरस, मां से भ्रूण में जा सकता है।

खबरों में क्यों है?

- हाल ही में भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद (आई.सी.एम.आर.) ने 'कोविड-19 वैश्विक महामारी में गर्भवती महिलाओं के प्रबंधन हेतु दिशानिर्देश' नामक एक रिपोर्ट जारी की है।
- ये दिशानिर्देश विशेष रूप से प्रसव के समय अस्पताल के कर्मचारियों के लिए व्यक्तिगत सुरक्षा उपकरणों के उपयोग के लिए जारी किए गए हैं।

ऊर्ध्वाधर संचरण क्या है?

- एक ऊर्ध्वाधर संचरित संक्रमण, रोगजनकों (जैसे बैक्टीरिया और वायरस) के कारण होने वाला एक संक्रमण है, जो माता-से-बच्चे के संचरण का उपयोग करता है।
- यह संचरण गर्भावस्था या प्रसव के दौरान मां से भ्रूण, गर्भ या बच्चे को प्रत्यक्ष रूप से होता है।
- यह तब हो सकता है जब मां को गर्भावस्था में एक अंतवर्ती बीमारी के रूप में संक्रमण होता (समवर्ती, सहवर्ती या ज्यादातर मामलों में, पहले से मौजूद होता है) है।
- पोषण संबंधी कमियां, प्रसवकालीन (समय से संबंधित, सामान्यत: कई सप्ताह, जन्म से ठीक पहले और बाद में) संक्रमण के जोखिम को बढ़ा सकती हैं।

रिपोर्ट के संदर्भ में जानकारी

- आई.सी.एम.आर. के अनुसार, उस गर्भवती महिला के लिए बच्चे को वायरस प्रेषित करना संभव है, जो कोविड-19 के लिए पॉजिटिव है।
- उभरते हुए प्रमाण अब यह बताते हैं कि ऊर्ध्वाधर संचरण (माँ से बच्चे को जन्म से पहले [जन्म से पहले] या प्रसव के बाद [प्रसव के दौरान) होने की संभावना है।
- अमेरिकी रोग नियंत्रण एवं रोकथाम केंद्र के अनुसार, गर्भावस्था के दौरान कोरोनोवायरस के मां-से-बच्चे के संचरण की संभावना नहीं है, लेकिन जन्म के बाद, एक नवजात शिशु में व्यक्ति-से-व्यक्ति द्वारा फैलने की संभावना होती है।
- ऐसे उदाहरण हैं जब एक संक्रमित माँ ने एक पूरी तरह से स्वस्थ बच्चे को जन्म दिया है, लेकिन बच्चा जन्म के तुरंत बाद ही उसके संक्रमण में आ गया है।
- स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं और उन बच्चों के लिए विशेष सुरक्षा दिशानिर्देशों की सिफारिश की गई है जो माँ के शरीर के तरल पदार्थ के संपर्क में आते हैं।
- ऐसे वैज्ञानिक दिशानिर्देश दस्तावेज हैं जो ऐसे मामलों में जन्म के तुरंत बाद मां और बच्चे के अलगाव को निर्धारित करते हैं।
- अभी और शोध चल रहा है लेकिन सावधानियों के संदर्भ में एडवाइजरी आई.सी.एम.आर. द्वारा जारी की गई है।

उन बीमारियों पर एक त्वरित नजर, जिनमें ऊर्ध्वाधर संचरण (माँ से बच्चे) संभव है:

a. रूबेला

- रूबेला, जिसे जर्मन खसरा भी कहा जाता है, यह रूबेला वायरस के कारण होने वाला संक्रमण है।
- रूबेला, एक संक्रमित गर्भवती महिला से उसके विकासशील गर्भस्थ शिशु या भ्रूण में इनक्यूबेशन के पहले सप्ताह के बाद गर्भनाल को पार कर सकता है।

b. उपदंश (सिफिलिस)

- यह एक यौन संचारित संक्रमण है, जो जीवाणु ट्रेपोनेमा पैलिडम के कारण होता है।
- जन्मजात सिफिलिस, जो भ्रूण विकास के दौरान या जन्म के समय मां से बच्चे को होती है।

c. एच.आई.वी.

- एक्वायर्ड इम्यूनोडिफीसिअन्सी वायरस, ह्यूमन इम्यूनोडिफीसिअन्सी वायरस (एच.आई.वी.) के कारण होने वाला एक गंभीर संक्रमण है।
- गर्भावस्था के दौरान, गर्भनाल को पार करके भ्रूण एच.आई.वी. से संक्रमित होता है।

d. **जीका वायरस**

- गर्भावस्था के दौरान जीका वायरस संक्रमण वाले शिशु माइक्रोसेफली और अन्य जन्मजात विकृतियों के साथ पैदा हो सकते है, जिसे जन्मजात जीका सिंड्रोम के रूप में जाना जाता है।

टॉपिक- जी.एस. पेपर 3-विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी

स्रोत: आई.एम.आर.

कोविडग्यान: कोविड-19 पर विज्ञान पर आधारित वेबसाइट

खबरों में क्यों है?

- देश में तेजी से फैल रहे वायरल के प्रकोप के कारण देश में काफी डर का माहौल है, वैज्ञानिक और इंजीनियरों ने कोविडग्यान शुरू किया हैं।

कोविडग्यान के संदर्भ में जानकारी

- यह एक बहु-संस्थागत, बहुभाषी विज्ञान संचार पहल है जो इस महामारी के वैज्ञानिक और तथ्यात्मक पहलुओं को सार्वजनिक डोमेन पर लाने में मदद करता है।
- यह पहल टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ फंडामेंटल रिसर्च (टी.आई.एफ.आर.), भारतीय विज्ञान संस्थान (आई.आई.एस.सी.) और टाटा मेमोरियल सेंटर (टी.एम.सी.) के दिमाग की उपज है।

उद्देश्य

- इस वेबसाइट का प्राथमिक उद्देश्य सार्वजनिक जागरूकता पैदा करना है और इस बीमारी की समझ के लिए एक समग्र दृष्टिकोण लाना और इसे कम करने के लिए संभावित साधनों का उपयोग करना है।

कुछ प्रमुख विशेषताएं

- इसमें शामिल किए गए टॉपिकों में नॉवेल कोरोनोवायरस (सार्स-सी.ओ.वी.-2) के सटीक व्यवहार, कोरोना फ्लू के संचरण की गतिकीय और युद्ध को बढ़ाने हेतु इसके निदान के लिए नवीन तकनीकों को ईजाद करना, शारीरिक दूरी से मुकाबला करने का साधन और संचरण के महत्वपूर्ण मूल्यांकन हैं।

- कोविडग्यान नामक यह वेबसाइट कोविड-19 के प्रकोप की प्रतिक्रिया में संसाधनों के संग्रह को एक साथ लाने के लिए एक केंद्र के रूप में कार्य करती है।
- ये संसाधन भारत में सार्वजनिक समर्थित अनुसंधान संस्थानों और संबंधित कार्यक्रमों द्वारा उत्पन्न होते हैं।
- यह ऑडियो/ पॉडकास्ट प्रारूपों में प्रख्यात वैज्ञानिकों की बातचीत, इन्फोग्राफिक्स, पोस्टर, वीडियो, अक्सर पूछे जाने वाले प्रश्न और पौराणिक कथाओं और यहां तक कि वैज्ञानिक पत्रों के लिंक के माध्यम से बहुआयामी पहलुओं के साथ 'सही जानकारी' के लिए डिज़ाइन किया गया है।
- इसकी सुविधाओं में एक कैंपस ईमेल हेल्पडेस्क, एक कैंपस मैसेजिंग सर्विस, एक फोन हेल्पलाइन और एक सहकर्मी सहायता लाइन शामिल है, जो आने वाले वर्षों में कैंपस में रहने की संभावना है।
- युवा शोधकर्ताओं के समूह ने लॉकडाउन के दौरान छात्रों की जरूरतों को पूरा करने के लिए विभिन्न स्वयंसेवक समूहों की स्थापना की है, इसके साथ ही विभिन्न अल्पकालिक और दीर्घकालिक वैज्ञानिक चुनौतियों के साथ विशिष्ट अनुसंधान/ प्रोग्रामिंग/ डिजाइन कौशल का मिलान करने के लिए एक सतत प्रयास किया है।

टॉपिक- जी.एस. पेपर 3-विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी

स्रोत- पी.आई.बी.

एकीकृत भू-स्थानिक प्लेटफॉर्म

खबरों में क्यों है?

- विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग ने वर्तमान कोविड-19 के प्रकोप के दौरान निर्णय लेने में सहायता करने हेतु एक एकीकृत भू-स्थानिक प्लेटफ़ॉर्म बनाया है।

उद्देश्य:

- निर्णय निर्माण, शासन और विकास के लिए भू-स्थानिक डेटा के साथ जनसांख्यिकीय जानकारी का एकीकरण आवश्यक है। कोविड-19 प्रसार के संदर्भ में, यह प्रयास आरोग्य-सेतु जैसे प्लेटफार्मों के लिए एक विशेष डिजिटल संबल होगा।

एकीकृत भू-स्थानिक प्लेटफॉर्म के संदर्भ में जानकारी

- यह उपलब्ध भू-स्थानिक डेटासेट, मानकों-आधारित सेवाओं और विश्लेषणात्मक उपकरणों से विकसित किया गया है।
- इसका उद्देश्य वर्तमान कोविड-19 प्रकोप के दौरान निर्णय निर्माण में मदद करना है।
- यह बहाली के चरण में सामाजिक-आर्थिक प्रभाव को विनियमित करने के लिए क्षेत्र-विशिष्ट रणनीतियों को तैयार करने में भी मदद करेगा।
- इसके राज्य और केंद्र सरकारों की सार्वजनिक स्वास्थ्य वितरण प्रणाली को मजबूत करने और नागरिकों और एजेंसियों को आवश्यक भू-स्थानिक सूचना सहायता प्रदान करने की उम्मीद है।

सहयोग ऐप के संदर्भ में जानकारी

- यह भारतीय सर्वेक्षण विभाग (एस.ओ.आई.) द्वारा तैयार और प्रबंधित एक मोबाइल एप्लिकेशन है। जिसे सामुदायिक संलग्नता के माध्यम से कोविड-19 विशिष्ट भू-स्थानिक डेटासेट एकत्र करने के लिए अनुकूलित किया गया है।
- यह भारत सरकार द्वारा वैश्विक महामारी के लिए प्रतिक्रिया गतिविधियों को बढ़ाने हेतु बनाया गया है।
- बड़े प्रकोपों के लिए भारत सरकार की रणनीति और रोकथाम योजना के अनुसार, आवश्यक सूचना मापदंडों को सहयोग एप्लीकेशन में शामिल किया गया है।
- यह मोबाइल एप्लिकेशन, भारत सरकार द्वारा संपर्क ट्रेसिंग, जन जागरूकता और स्व-मूल्यांकन उद्देश्यों के लिए लॉन्च किए गए "आरोग्य-सेतु" मोबाइल ऐप का पूरक होगा।

यह कैसे प्रभावित करेगा?

- भू-स्थानिक सूचना को एकीकृत करने में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग (डी.एस.टी.) के प्रयासों से देश को बहुपक्षीय संकट का सामना करने के लिए तेजी से स्थानिक सूचना-आधारित निर्णय लेने में मदद मिल सकती है, जो महामारी लाई है और देश के माध्यम से इस तरह के निर्णयों के प्रभाव को फैलाती है।
- यह कोविड-19 प्रकोप के कारण राष्ट्र के स्वास्थ्य आपातकालीन प्रबंधन को मजबूत करेगा और स्थानिक डेटा, सूचना, और मानव, चिकित्सा, तकनीकी, अवसंरचनात्मक और प्राकृतिक संसाधनों के बीच संबंध के निर्बाध प्रावधान के माध्यम से सामाजिक-आर्थिक बहाली प्रक्रिया का समर्थन करेगा।
- मध्य प्रदेश, ओडिशा, पंजाब और जम्मू और कश्मीर में राज्य स्थानिक डेटा ढांचा (एस.एस.डी.आई.) संबंधित राज्यों में राज्य और जिला स्तर के अधिकारियों को कोविड-19 महामारी से निपटने के लिए संबंधित स्वास्थ्य डेटा सेट के साथ राज्य एकीकृत भू-पोर्टल के माध्यम से आनुषंगिक मानक-आधारित भू-स्थानिक डेटा सेवाएं प्रदान कर रहा है।

टॉपिक- जी.एस. पेपर 3- विज्ञान एवं तकनीकि

स्रोत- पी.आई.बी.

ट्रूनैट

खबरों में क्यों है?

- हाल ही में, भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद (आई.सी.एम.आर.) ने ट्रूलैब वर्कस्टेशन पर ट्रूनैट बीटा सी.ओ.वी. टेस्ट के उपयोग की सिफारिश की है। इसे शीर्ष चिकित्सा निकाय द्वारा स्क्रीनिंग टेस्ट के रूप में मान्य किया गया है।

ट्रूनैट के संदर्भ में जानकारी

- यह एक ऐसा उपकरण है जो छोटा, बैटरी से संचालित होता है और इसे चलाने हेतु न्यूनतम प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है और यह प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र जैसी निम्न सेटिंग्स में भी प्रयोग करने योग्य है।
- यह एक डायग्नोस्टिक मशीन है, जिसका इस्तेमाल दवा प्रतिरोधी तपेदिक का परीक्षण करने के लिए किया जाता है।
- यह एक चिप-आधारित तकनीक का उपयोग करती है और टेस्ट, स्क्रीनिंग या पुष्टिकरण के लिए सिर्फ 60 मिनट तक का समय लेती है।

टॉपिक- जी.एस. पेपर 3- विज्ञान एवं तकनीकि

स्रोत- ए.आई.आर.

पोस्ट-इंटेनसिंव केयर सिंड्रोम (पी.आई.सी.एस.)

खबरों में क्यों है?

- आई.सी.यू. से बाहर आने के बाद, कोविड-19 रोगी, पोस्ट-इंटेनसिंव केयर सिंड्रोम (पी.आई.सी.एस.) से पीड़ित हो जाता है, जो कि आई.सी.यू. में रहे किसी भी व्यक्ति को हो सकता है।

पोस्ट-इंटेनसिंव केयर सिंड्रोम क्या है?

- जर्नल ऑफ ट्रांसलेशनल इंटरनल मेडिसिन के एक लेख के अनुसार, पी.आई.सी.एस में एक व्यक्ति के संज्ञान, मनोवैज्ञानिक स्वास्थ्य और शारीरिक कार्य में हानि होती है, जो आई.सी.यू. में रहा है।

- इसे शारीरिक (आई.सी.यू.- एक्वायर्ड न्यूरोमस्कुलर कमजोरी), संज्ञानात्मक (सोच और निर्णय) में एक नई या बिगड़ती हानि के रूप में परिभाषित किया गया है या गंभीर बीमारी के बाद मानसिक स्वास्थ्य की स्थिति उत्पन्न हो रही है और तीव्र देखभाल सेटिंग से डिसचार्ज होने के बाद लंबे समय तक बने रह रही है।
- इसके अतिरिक्त, ऐसे रोगियों को न्यूरोमस्कुलर कमजोरी का अनुभव हो सकता है, जो खराब गतिशीलता और आवर्तक गिरावट के रूप में स्वयं प्रकट हो सकता है।
- अवसाद, चिंता और पोस्ट-ट्रॉमैटिक स्ट्रेस डिसऑर्डर (पी.टी.एस.डी.) के रूप में एक व्यक्ति में मनोवैज्ञानिक विकलांगता उत्पन्न हो सकती है। पी.आई.सी.एस. को प्रेरित किया जा सकता है यदि कोई व्यक्ति लंबे समय तक यांत्रिक वेंटिलेशन, अनुभवी सेप्सिस, कई अंग विफलता और दीर्घकालिक "बेड-रिस्टोर डीप सिडेशन" का अनुभव करता है।

लक्षण

- ये सामान्यीकृत कमजोरी, थकान, गतिशीलता में कमी, चिंतित या उदास मनोदशा, यौन रोग, नींद की गड़बड़ी और संज्ञानात्मक मुद्दे हैं।
- लेखकों के अनुसार, ये लक्षण कुछ महीनों या कई वर्षों तक ठीक हो सकते हैं।

इलाज

- यह अनुशंसा की जाती है कि पी.आई.सी.एस. से बचने के लिए, मरीजों के गहरे अवसाद का उपयोग सीमित है और उन्हें "आक्रामक" शारीरिक और व्यावसायिक चिकित्सा देने के साथ-साथ शुरुआती गतिशीलता को प्रोत्साहित किया जाता है।
- ऐसे रोगियों को संभव होने पर दर्द दवाओं की सबसे कम खुराक दी जानी चाहिए। उन्हें अवसाद, चिंता और पी.टी.एस.डी. के उपचार के साथ फेफड़ों या हृदय पुनर्वास उपचार पर रखा जाना चाहिए।

टॉपिक- जी.एस. पेपर 2- स्वास्थ्य मुद्दा

स्रोत- इंडियन एक्सप्रेस

विगत महामारियां

खबरों में क्यों हैं?

- दुनिया वर्तमान में चल रहे वायरल के प्रकोप का सामना कर रही है, जो वैश्विक अर्थव्यवस्था पर मार्गदर्शन रही है। हम, एक वैश्विक नागरिक के रूप में, इससे निपटने के उपाय भी नहीं जानते हैं क्योंकि इस पर शोध और कार्यप्रणाली चल रही है। क्वारंटाइन और लॉकडाउन जैसे विशिष्ट उपायों को लागू करना, आगे के प्रसार को रोका जा सकता है।
- ऐसी प्रचलित परिस्थितियों में, अतीत की सबसे घातक महामारियों का फिर से दौरा करने की आवश्यक्ता है और कोविड-19 से पहले दुनिया ने उनका कैसे मुकाबला किया था, यह जानना आवश्यक है।

पूरे इतिहास में विभिन्न महामारियां जिनका मानव समाज और राजनीति को आकार देने में महत्वपूर्ण प्रभाव रहा है और वे इस प्रकार है:

a. **जस्टिनियन प्लेग,** यह सबसे घातक महामारियों में से एक है जो मिस्र में छठी शताब्दी में फैली थी और पूर्वी रोमन (बीजान्टिन) साम्राज्य की राजधानी कॉन्स्टेंटिनोपल में तेजी से फैल गई थी।

- प्लेग का नाम तत्कालीन बीजान्टिन सम्राट जस्टिनियन के नाम पर रखा गया था।
- इस महामारी के कांस्टेंटिनोपल से पश्चिम और पूर्व दोनों में फैलने से 25 से 100 मिलियन लोग मारे गए थे।

b. **ब्लैक डेथ**

- 14वीं शताब्दी में यूरोप और एशिया को प्रभावित करने वाली ब्लैक डेथ या महामारी मानव इतिहास में दर्ज सबसे घातक महामारी थी। इसमें लगभग 75 से 200 मिलियन लोग मारे गए थे।
- प्लेग, 1347 में यूरोप में फैला था, जहां 50% तक आबादी इस बीमारी से मर गई थी।

c. **स्पेनिश फ्लू**

- प्रथम विश्व युद्ध के अंतिम चरण के दौरान स्पैनिश फ़्लू की शुरुआत हुई थी और यह पिछली सदी की सबसे घातक महामारी थी, जिसमें 50 मिलियन लोग मारे गए थे।
- प्रकोप के महत्वपूर्ण प्रभावों में से एक युद्ध का परिणाम था। हालांकि फ़्लू ने दोनों पक्षों को प्रभावित किया था, जर्मन और ऑस्ट्रियाई बुरी तरह प्रभावित हुए थे और प्रकोप ने उनके आक्रमण को पटरी से उतार दिया था।

d. **इन्फ्लुएंजा वायरस:**

i. **एच 1 एन 1 वायरस**

- 1918 में इन्फ्लूएंजा महामारी हाल के इतिहास में सबसे गंभीर थी।
- एक एच1एन1 वायरस, एवियन मूल के जीन के साथ इसका कारण बना था। यह 1918-1919 के दौरान दुनिया भर में फैल गई थी।
- इसे 20वीं शताब्दी की सबसे घातक महामारी माना जाता है।

ii. एच2 एन2 वायरस

- 1957 में, एक नया इन्फ्लूएंजा ए (एच2एन2) वायरस पूर्वी एशिया में उभरा था, जो एक महामारी ("एशियाई फ्लू") को ट्रिगर करता था।
- यह एच2एन2 वायरस, एन2एन2 संक्रमण से तीन अलग-अलग जीनों से युक्त था।
- ये एक एवियन इन्फ्लूएंजा ए वायरस से उत्पन्न हुए थे, जिसमें एन2 हेमाग्लगुटिनिन और एन2 न्यूरोमिनिडीन जीन शामिल हैं।

iii. एच3एन2 वायरस

- वर्ष 1968 में महामारी इन्फ्लूएंजा ए (एच3एन2) वायरस के कारण हुई थी।
- एच3एन2 वायरस में एवियन इन्फ्लूएंजा ए वायरस के दो जीन शामिल थे, जिसमें एक नया एच3 हेमाग्लगुटिनिन भी शामिल था, लेकिन इसमें 1957 एच2एन2 वायरस से एन2 न्यूरैमिनाइड भी शामिल था।
- यह पहली बार संयुक्त राज्य अमेरिका में सितंबर, 1968 में नोट किया गया था। यह एक मौसमी इन्फ्लूएंजा ए वायरस के रूप में दुनिया भर में प्रसारित हुआ था।
- मौसमी एच3एन2 वायरस, जो बुजुर्ग लोगों में गंभीर बीमारी से संबंधित हैं, नियमित रूप से एंटीजेनिक बहाव से गुजरते हैं।

iv. एच1 एन1 वायरस

- वर्ष 2009 में, एक नॉवेल इन्फ्लूएंजा ए(एच1 एन1) वायरस उभरा था।
- यह पहले संयुक्त राज्य अमेरिका में पाया गया था और संयुक्त राज्य अमेरिका और दुनिया भर में जल्दी से फैल गया था।
- इस नए एच1एन1 वायरस में इन्फ्लूएंजा जीन का एक अनूठा संयोजन था, जो पहले जानवरों या लोगों में पहचाना नहीं गया था।
- इस वायरस को इन्फ्लूएंजा ए (एच1एन1) पी.डी.एम.09 वायरस के रूप में नामित किया गया था।

2009 के एच1एन1 फ्लू महामारी के 10 साल के स्मरणोत्सव के साथ-साथ इतिहास में उस घटना को प्रतिबिंबित करने का एक अवसर है और इसके साथ ही नॉवेल फ्लू वायरस का पता लगाने और प्रतिक्रिया देने के लिए घरेलू और वैश्विक क्षमता में सुधार के लिए चल रहे प्रयासों के महत्व को स्वीकार करना है। 2009 से, इन्फ्लूएंजा विज्ञान और तैयारियों में पर्याप्त प्रगति हुई है।

टॉपिक- जी.एस. पेपर 2-स्वास्थ्य मुद्दा

स्रोत- द हिंदू और रोग नियंत्रण एवं रोकथाम केंद्र, अमेरिका

रेमेडेसिविर

खबरों में क्यों है?

- विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार, रेमेडेसिविर नामक दवा नॉवेल कोरोनावायरस बीमारी (कोविड-19) के गंभीर मामलों के संभावित उपचार के लिए सुर्खियों में रही है।

रेमेडेसिविर क्या है?

- यह एंटीवायरल गुणों वाली एक दवा है जो कि इबोला के मामलों के इलाज के लिए वर्ष 2014 में अमेरिका स्थित बायोटेक्नोलॉजी कंपनी द्वारा निर्मित की गई थी।
- इसे मर्स और सार्स के रोगियों में भी आजमाया गया था, दोनों रोग कोरोनोवायरस परिवार के सदस्यों के कारण होते है।
- यह एक न्यूक्लियोटाइड एनालॉग है, विशेष रूप से एक एडेनोसाइन एनालॉग है, जो वायरल आर.एन.ए. श्रृंखलाओं में प्रवेश करते हैं, जिससे उनका समयपूर्व समापन होता है। इस पर 2020 के दौरान कोविड-19 के संभावित संक्रमण के बाद के उपचार के रूप में अध्ययन किया जा रहा है।

रेमेडेसिविर की कार्यप्रणाली

- कोरोनावायरस में उसकी आनुवंशिक सामग्री के रूप में एकल-सिरा आर.एन.ए. है।
- जब नॉवेल कोरोनवायरस वायरस सार्स-सीओवी2, एक मानव कोशिका में प्रवेश करता है तो आर.डी.आर.पी. नामक एक एंजाइम वायरस को दोहराने में मदद करता है।
- रेमेडेसिविर, आर.डी.आर.पी. की गतिविधि को रोककर काम करता है।

रेमेडिसविर पर भारत का क्या रुख है?

- भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद (आई.सी.एम.आर.) ने कहा है कि यदि स्थानीय निर्माता इसे खरीदने के लिए तैयार हैं तो वह दवा का उपयोग करने पर विचार कर सकते हैं।
- आई.सी.एम.आर. की योजना 'कोविड-19 उपचार के लिए रेमेडेसिविर' की प्रभावकारिता का आकलन करने के लिए 'डब्ल्यू.एच.ओ. के सॉलिडेरिटी ट्रायल के परिणामों की प्रतीक्षा करना और देखना है।
- रेमेडेसिविर वर्तमान में भारत में उपलब्ध नहीं है।

उपचार के किन अन्य तरीकों की जांच की जा रही है?

a. हाइड्रॉक्सीक्लोरोक्वीन

- यह एक एंटी-मलेरिया दवा है, यह आकलन करने के लिए कई परीक्षणों से गुजर रही है कि क्या इसका उपयोग गंभीर कोविड-19 मामलों के इलाज के लिए किया जा सकता है।
- यह कोशिका के कुछ हिस्सों में एसिडिटी को कम करके काम करता है, जहां वायरस मौजूद है, जिससे यह बाधित होता है।

b. रिटोनाविर और लोपिनाविर

- ये दो एंटीवायरल दवाएं हैं, जो एच.आई.वी. के उपचार के लिए उपयोग की जाती हैं।
- ये वायरस के आर.एन.ए. को रोककर भी काम करती है। विशेष रूप से, उन एंजाइम को लक्षित करते हैं जो वायरस की प्रोटीन को विभाजित करने में मदद करता है।
- इन दोनों दवाओं का उपयोग भारत और कई देशों में गंभीर रूप से बीमार रोगियों के लिए किया जा रहा है।

टॉपिक- जी.एस. पेपर 3- विज्ञान एवं तकनीकि

स्रोत- इंडियन एक्सप्रेस

मानव कोरोनावायरस के प्रकार

खबरों में क्यों है?

- पिछले दो दशकों में, अधिक आक्रामक कोरोनवायरस उभरे हैं जो गंभीर बीमारी और यहां तक कि मनुष्यों में मृत्यु का कारण बन सकते हैं।
- अब तक, सात अलग-अलग प्रकार के कोरोनावायरस की पहचान की गई है, कि मनुष्यों को संक्रमित करते हैं जिसमें सार्स-सी.ओ.वी., मर्स और सार्स-सी.ओ.वी. 2 शामिल हैं।

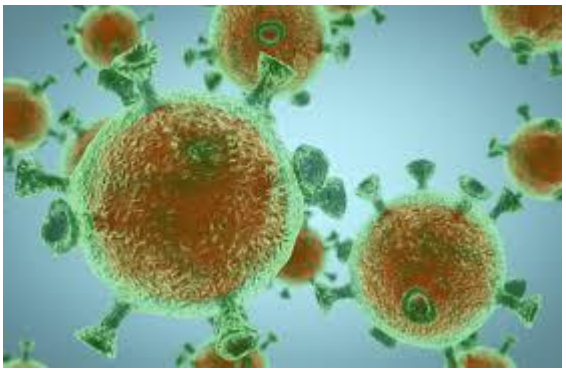

करोरानावायरस क्या हैं?

- कोरोनावायरस एकल-स्ट्रैंड आर.एन.ए. वायरस का एक बड़ा परिवार है जो जानवरों और मनुष्यों में बीमारियों का कारण बनता है।
- ये वायरस सामान्यत: हल्के से मध्यम ऊपरी श्वसन तंत्र की बीमारियों जैसे सामान्य सर्दी का कारण बनता है।

सामान्य मानव कोरोनावायरस

a) 229E (अल्फा कोरोनावायरस)
b) NL63 (अल्फा कोरोनावायरस)
c) OC43 (बीटा कोरोनावायरस)
d) HKU1 (बीटा कोरोनावायरस)

दुनिया भर में लोग सामान्यत: 229E, NL63, OC43 और HKU1 मानव कोरोनवायरस से संक्रमित होते हैं।

अन्य मानव कोरोनावायरस (जूनोटिक)

कभी-कभी जानवरों को संक्रमित करने वाला कोराना वायरस विकसित हो सकता है और लोगों को बीमार बना सकता है और एक नया मानव कोरोनावायरस बन सकता है। इसके तीन हालिया उदाहरण 2019-एन.सी.ओ.वी., सार्स-सी.ओ.वी. और मर्स-सी.ओ.वी. हैं।

a) मर्स-सी.ओ.वी. (बीटा कोरोनावायरस है जो मध्य पूर्व श्वसन सिंड्रोम या मर्स का कारण बनता है)
b) सार्स-सी.ओ.वी. (बीटा कोरोनावायरस है जो गंभीर तीव्र श्वसन सिंड्रोम या सार्स का कारण बनता है)
c) सार्स-सी.ओ.वी.-2 (नॉवेल कोरोनवायरस है जो कोरोनावायरस रोग 2019 या कोविड-19 का कारण बनता है)

कोरोनोवायरस की खोज और पहचान

a) **229E:** 60 के दशक के मध्य में वर्णित पहले कोरोनवीरस उपभेदों में से एक है, जिसे संभवतः 1966 में डी. हमरे और जे.जे. प्रॉकनो द्वारा वर्णित किया गया था।

b) OC43

- जर्नल ऑफ वायरोलॉजी के अनुसार, इसे 1967 में खोजा गया था।
- हालांकि, विषाणु विज्ञान पत्रिका में एक पेपर ने 1965 में खोजे गए पहले मानव कोरोनावायरस के रूप में वर्णित किया था, इसने टायरेल और बिएनो द्वारा लिखे गए 1966 के पेपर का हवाला देते हुए यह घोषणा की थी, जो कि B14 नामक नाक के स्वाब पर काम कर रहे थे।

c. NL63 और HKU1

- इसे पहली बार नीदरलैंड में 2004 में पहचाना गया था, संभवतः इसके बाद इसे श्वसन लक्षणों को दर्शाने वाले सात महीने के शिशु से अलग कर दिया गया था।
- इस समय के दौरान, मानव कोरोनावायरस पर शोध में वृद्धि हुई थी, जिसके कारण 2005 की शुरुआत में हांगकांग में NL63 और HKU1 की खोज हुई थी।

d. सार्स-सी.ओ.वी.

- चीन में 2003 के प्रकोप के बाद इसकी पहचान की गई थी।
- यह माना जाता है कि यह अभी तक अज्ञात पशु स्रोत से आया था शायद चमगादड़ से प्राप्त हुआ था।
- चमगादड़ ने इसे यह अन्य जानवरों को दिया गया है, जैसे बिल्ली के बच्चे को संक्रमित किया है।
- सार्स के लक्षणों में खांसी, सांस की तकलीफ, दस्त शामिल हैं।
- गंभीर मामलों में, लक्षण श्वसन संकट में प्रगति कर सकते हैं, जिसमें गहन देखभाल की आवश्यकता हो सकती है।

e. मर्स

- यह मानव कोरोनवायरस के कारण होने वाला एक अन्य वायरल श्वसन रोग है।
- इसकी पहचान पहली बार 2012 में सऊदी अरब में हुई थी।
- यह ड्रोमेडरी ऊंटों द्वारा प्रसारित किया गया था।
- विशिष्ट लक्षणों में बुखार, खांसी और सांस की तकलीफ शामिल हैं।

f. सार्स-सी.ओ.वी.-2

- इसे पहली बार 2019 में वुहान में पहचाना गया था।
- वायरस का स्रोत अभी तक ज्ञात नहीं है, संभवतः चमगादड़ है।
- लक्षण: बुखार, थकान और सूखी खांसी हैं।
- इसके आगे, जबकि सार्स-सी.ओ.वी.-2, सार्स-सी.ओ.वी. और MERS की तुलना में अधिक कमजोर है, इसकी उच्च संक्रामकता को देखते हुए इसके प्रकोप को नियंत्रित करना विशेष रूप से कठिन है।

टॉपिक- जी.एस. पेपर 3-विज्ञान एवं तकनीकि

स्रोत- इंडियन एक्सप्रेस

ब्लाजर उत्सर्जन

खबरों में क्यों है?

- हाल ही में, भारतीय खगोल भौतिकी संस्थान (आई.आई.ए.), बैंगलोर के शोधकर्ताओं ने विभिन्न प्रकार के ब्लाज़रों पर गामा-किरण फ्लक्स परिवर्तनशीलता प्रकृति पर पहला प्रणालीगत अध्ययन किया है।
- यह अध्ययन ब्लैक होल के करीब होने वाली प्रक्रियाओं का सुराग दे सकता है, यह प्रत्यक्ष इमेजिंग के माध्यम से दिखाई नहीं दे रहा है।

ब्लाज़र के संदर्भ में जानकारी

- ये ज्ञात ब्रह्मांड में सबसे चमकदार और ऊर्जावान वस्तुएं हैं, जो 1990 के दशक में गामा-किरणों के उत्सर्जक पाए गए थे।
- ब्लाज़र, ए.जी.एन. हैं, जिनके जेट, पर्यवेक्षक की दृष्टि की रेखा के साथ संरेखित हैं।
- कुछ ब्लाज़रों को इनमें बाइनरी ब्लैक होल की मेजबानी करने के लिए माना जाता है और भविष्य के गुरूत्वाकर्षण-तरंग खोजों के लिए संभावित लक्ष्य हो सकते हैं।

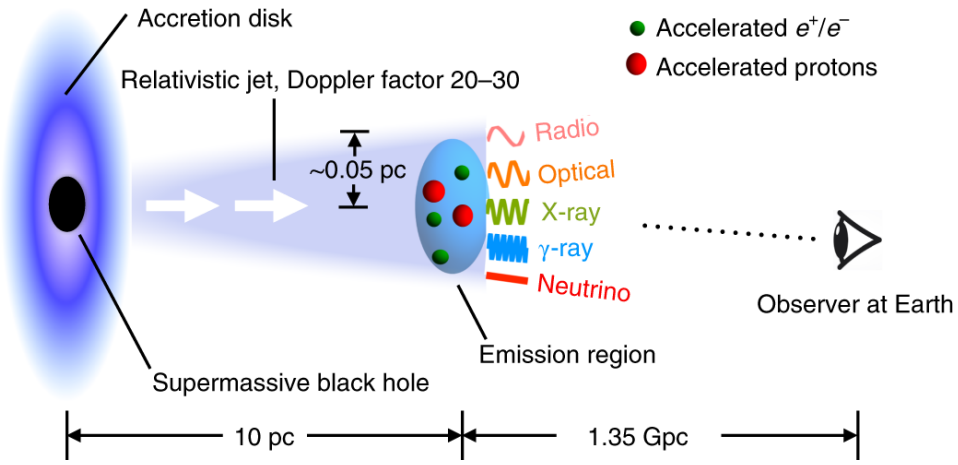

ब्लाज़र उत्सर्जन के संदर्भ में जानकारी

- अधिकांश आकाशगंगाओं के केंद्र में, एक विशाल ब्लैक होल है जिसमें दसियों लाखों या अरबों सूर्यों का द्रव्यमान हो सकता है जो इसके चारों ओर गैस, धूल और तारकीय मलबे को जमा करते हैं।
- जैसे ही यह सामग्री ब्लैक होल की ओर गिरती है, उनकी गुरूत्वाकर्षण ऊर्जा, हल्के सक्रिय आकाशंगांगेय नाभिक (ए.जी.एन.) के रूप में परिवर्तित हो जाती है।
- ए.जी.एन. (~ 15%) की एक अल्पसंख्या, समरेखित आवेशित कण उत्सर्जित करती है जिसे लगभग प्रकाश की चाल पर यात्रा करने वाले जेट्स के नाम से जाना जाता है।

टॉपिक- जी.एस. पेपर 3- विज्ञान एवं तकनीकि

स्रोत- पी.आई.बी., द गार्डियन

आर्टिफिशियल न्यूरल नेटवर्क आधारित ग्लोबल आयनोस्फेरिक मॉडल

खबरों में क्यों है?

- भारतीय भूचुंबकत्व संस्थान (आई.आई.जी.) के शोधकर्ताओं ने आर्टिफिशियल न्यूरल नेटवर्क पर आधारित ग्लोबल आयनोस्फेरिक मॉडल विकसित किया है।

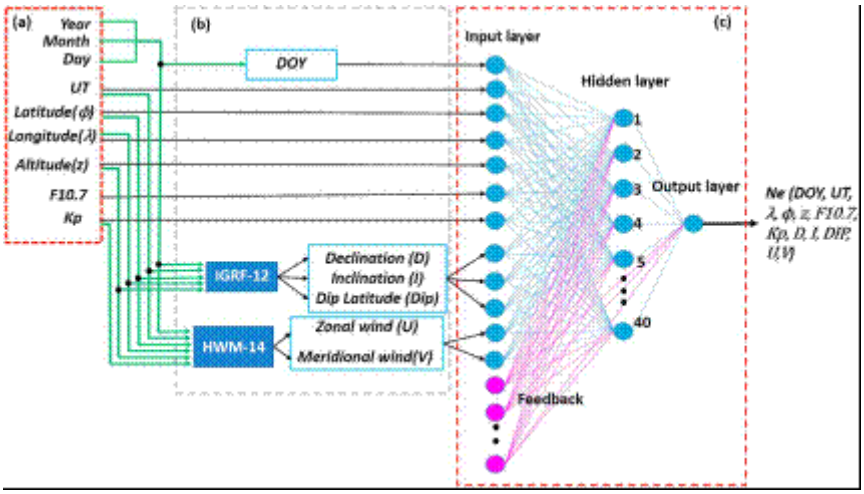

आर्टिफिशियल न्यूरल नेटवर्क आधारित ग्लोबल आयनोस्फेरिक मॉडल के संदर्भ में जानकारी

- यह आयनमंडलीय इलेक्ट्रॉन घनत्व की भविष्यवाणी करने के लिए एक वैश्विक मॉडल है, जो संचार/ नेविगेशन में मदद कर सकता है। ग्लोबल आयनोस्फेरिक मॉडल (ए.एन.एन.आई.एम.) को आयनमंडलीय इलेक्ट्रॉन घनत्व और शिखर मापदंडों की भविष्यवाणी करने के लिए दीर्घकालिक आयनमंडलीय अवलोकनों का उपयोग करके विकसित किया गया है।
- ए.एन.एन.आई.एम. ने अशांत अंतरिक्ष मौसम की अवधि के दौरान आयनमंडल की सामान्य रूपात्मक विशेषताओं को भी कैप्चर किया है, जैसे कि भू-चुंबकीय तूफान है जो सूर्य से उत्पन्न होने वाले चुंबकीय बादल (कोरोनल मास इजेक्शन (सी.एम.ई.) के रूप में जाना जाता है) के पृथ्वी के चुंबकीय क्षेत्र के साथ संपर्क होने पर घटित होते हैं।

महत्व

- यह बड़े डेटा कवरेज के साथ आयमंडलीय इलेक्ट्रॉन घनत्व की भविष्यवाणी करने में मदद करेगा, जो संचार और नेविगेशन के लिए महत्वपूर्ण है।

आयनमंडल के संदर्भ में जानकारी

- इसे पृथ्वी के वायुमंडल की परत के रूप में परिभाषित किया गया है जो सौर और ब्रह्मांडीय विकिरण द्वारा आयनित है।
- यह पृथ्वी से 75-1000 कि.मी. ऊपर स्थित है।
- इसका व्यावहारिक महत्व है क्यों कि यह पृथ्वी पर दूर के स्थानों पर रेडियो प्रसार को प्रभावित करता है।

टॉपिक- जी.एस. पेपर 3- विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी

स्रोत- द हिंद

वर्ल्ड वाइड हेल्प

खबरों में क्यों है?

- हाल ही में, आई.आई.टी. बॉम्बे ने वर्ल्डवाइड हेल्प (डब्ल्यू.डब्ल्यू.एच.) नामक एक प्लेटफ़ॉर्म विकसित किया है, जिसका उपयोग डॉक्टरों जैसे सहायकों से चिकित्सा सहायता प्राप्त करना चाहने वाले लोगों को जोड़ने के लिए किया जा सकता है।

वर्ल्ड वाइड हेल्प के संदर्भ में जानकारी

- यह शारीरिक दूरी के साथ मदद करने के लिए एक सूचना प्रौद्योगिकी समाधान है। वर्ल्ड वाइड हेल्प प्लेटफॉर्म का इस्तेमाल एक ऐप या फोन के साथ किया जा सकता है।
- इसका उद्देश्य डॉक्टरों जैसे सहायकों से चिकित्सा सहायता प्राप्त करना चाहने वाले लोगों को जोड़नना है।
- यह ई-टोकन उत्पन्न करने के लिए एक प्रणाली है, जो स्थानीय बाजारों और छोटे विक्रेताओं द्वारा शारीरिक दूरी को सुनिश्चित करने के लिए तैनात की जा सकती है।

टॉपिक- जी.एस. पेपर 3- विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी

स्रोत- द हिंदू

इस्लामिक सहयोग संगठन

खबरों में क्यों है?

- हाल ही में, इस्लामिक सहयोग संगठन ने भारत सरकार से आग्रह किया है कि वह भारत में इस्लामोफोबिया के बढ़ते प्रवाह को रोकने के लिए तत्काल कदम उठाए और अंतर्राष्ट्रीय मानवाधिकार कानून के अंतर्गत इसके दायित्वों के अनुसार अपने उत्पीड़ित मुस्लिम अल्पसंख्यकों के अधिकारों की रक्षा करें।

इस्लामिक सहयोग संगठन के संदर्भ में जानकारी

- यह 1969 में स्थापित एक अंतर्राष्ट्रीय संगठन है, जिसमें 57 सदस्य राज्य शामिल हैं। यह संयुक्त राष्ट्र के बाद दूसरा सबसे बड़ा अंतर-सरकारी संगठन भी है।
- ओ.आई.सी. के पास संयुक्त राष्ट्र और यूरोपीय संघ के स्थायी प्रतिनिधिमंडल हैं।
- ओ.आई.सी. की आधिकारिक भाषाएं अरबी, अंग्रेजी और फ्रेंच हैं।

उद्देश्य

- दुनिया के विभिन्न लोगों के बीच अंतर्राष्ट्रीय शांति और सद्भाव को बढ़ावा देने की भावना से मुसलमानों के हितों की रक्षा करके मुस्लिम दुनिया की सामूहिक आवाज के रूप में काम करना
- इसका मुख्यालय सऊदी अरब के जेद्दाह में स्थित है।

पर्यवेक्षक देश

- मध्य अफ्रीकी गणराज्य, थाईलैंड, बोस्निया और हर्ज़ेगोविना, रूसी संघ और तुर्की साइप्रस राज्य हैं।

नोट: भारत, इस्लामिक सहयोग संगठन का सदस्य नहीं है।

टॉपिक- जी.एस. पेपर 2- अंतर्राष्ट्रीय संगठन

स्रोत- ए.आई.आर.

नैनोब्लिट्ज 3 डी

खबरों में क्यों है?

- हाल ही में, अंतर्राष्ट्रीय पाउडर धातुकर्म एवं नई सामग्री उन्नत अनुसंधान केंद्र (ए.आर.सी.आई.) के वैज्ञानिकों ने नैनोब्लिट्ज 3 डी नामक एक उन्नत उपकरण विकसित किया है।

नैनोब्लिट्ज 3डी के संदर्भ में जानकारी

- यह संयुक्त रूप से ए.आर.सी.आई. और नैनोमैकेनिक्स इंक, ओक रिज, अमेरिका द्वारा विकसित किया गया है।
- यह बहु-चरण मिश्रधातु, सम्मिश्रित और बहु-स्तरित कोटिंग जैसी सामग्री के नैनो-यांत्रिक गुणों का मानचित्रण करने हेतु एक उन्नत उपकरण है।
- नैनोब्लिट्ज 3डी नामक उपकरण को कांच-फाइबर-प्रबलित बहुलक सम्मिश्रण, दोहरे चरण के स्टील्स, सॉफ्टवुड और शेल सहित सामग्री प्रणालियों की एक विस्तृत श्रृंखला पर उत्कृष्ट परिणाम देने के लिए भी पाया गया है।

- यह एक बड़े सरणी के प्रदर्शन को सक्षम करता है, जिसमें सामान्यत: 1000 उच्च गति वाले नैनो-इंडेंटेशन परीक्षण शामिल होते हैं, जिसमें प्रत्येक इंडेंटेशन परीक्षण किसी दी गई सामग्री की कठोरता और लोचदार मापांक को मापने के लिए एक सेकंड से भी कम समय लेता है।
- यह उन्नत डेटा विश्लेषण को पूरा करने की क्षमता प्रदान करता है, जैसे कि घटक चरण के यांत्रिक गुणों की पहचान करना और उन्हें बढ़ाना, विशेषताओं या बहु-चरणीय मिश्रधातुओं के घटक, सम्मिश्रणों, बहु-चरणीय कोटिंग और आगे भी इसी प्रकार हैं।
- उपकरण की उच्च गति मानचित्रण क्षमताओं का उपयोग माइक्रो-मीटर लंबाई पैमाने या उच्चतर स्तर पर संरचना-संपत्ति लिंकेज को जल्दी से स्थापित करने के लिए किया जा सकता है, जो बहु-स्तरीय यांत्रिकी को समझने और पदानुक्रमित सामग्री के विकास में सहायता कर सकता है।

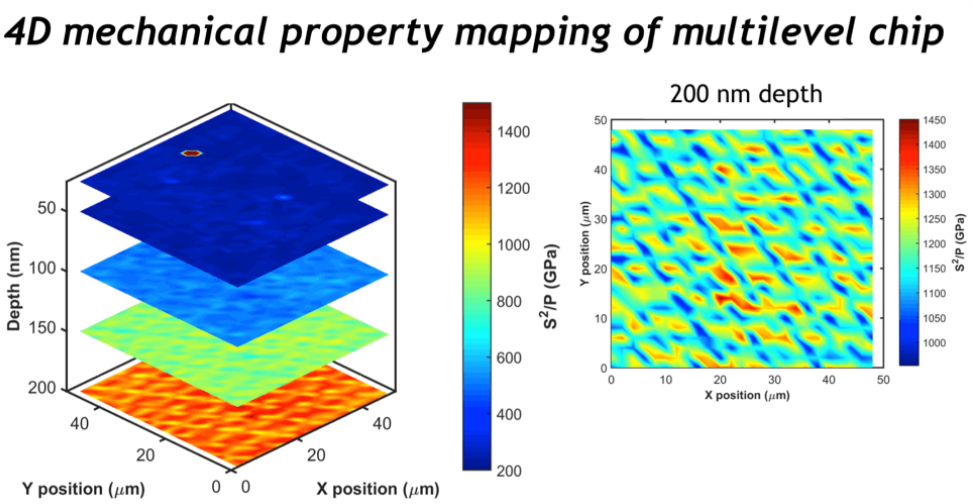

टॉपिक- जी.एस. पेपर 3- विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी
स्रोत- पी.आई.बी.

फेलुदा: एक पेपर-स्ट्रिप टेस्ट

खबरों में क्यों है?

- वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद- जीनोमिक्स एवं एकीकृत जीव विज्ञान संस्थान (सी.एस.आई.आर.-आई.जी.आई.बी.) ने एक कम लागत वाला पेपर-स्ट्रिप टेस्ट विकसित किया है, जो एक घंटे के भीतर नए कोरोनोवायरस का पता लगा सकता है।

फेलुदा के संदर्भ में जानकारी

- सत्यजीत रे द्वारा बनाए गए एक काल्पनिक जासूसी चरित्र के नाम पर टेस्ट का नाम फेलुदा रखा गया है, आर.टी.-पी.सी.आर. टेस्ट की तुलना में इस टेस्ट की लागत लगभग 500 रूपए होने का अनुमान है, निजी लैब में आर.टी.-पीसी.आर. टेस्ट की लागत 4500 रूपए है। यह टेस्ट एक जीवाणु प्रतिरक्षा प्रणाली प्रोटीन पर आधारित है, जिसे सी.ए.एस.9 कहा जाता है।
- यह अत्याधुनिक जीन-एडिटिंग उपकरण सी.आर.आई.एस.पी.आर.-सी.ए.एस.9 प्रणाली का उपयोग करता है।

- टीम ने कोविड-19 आनुवंशिक सामग्री के निदान के लिए इसे पुनरूद्देशित किया है।
- यह तकनीक कोविड-19 तक सीमित नहीं है और यह किसी भी डी.एन.ए.-आर.एन.ए. या एकल उत्परिवर्तन, रोग उत्परिवर्तन आदि पर काम कर सकती है।

सी.आर.आई.एस.पी.आर.-सी.ए.एस.9 के संदर्भ में जानकारी

- सी.आर.आई.एस.पी.आर. तकनीक, एक जीन-एडिटिंग तकनीक है जिसका उपयोग आनुवंशिक अभिव्यक्ति को बदलने या किसी जीव के जीनोम को बदलने के लिए किया जा सकता है।
- इस प्रौद्योगिकी का उपयोग संपूर्ण आनुवंशिक कोड के विशिष्ट हिस्सों को लक्षित करने या स्थानों पर डी.एन.ए. को एडिट करने के लिए किया जा सकता है।

महत्व

- सी.आर.आई.एस.पी.आर. तकनीक, जीनोम की एडिटिंग के लिए एक सरल लेकिन शक्तिशाली उपकरण है जो शोधकर्ताओं को डी.एन.ए. अनुक्रम को बदलने और जीन कार्यों को आसानी से संशोधित करने की अनुमति प्रदान करता है।
- इसके कई संभावित अनुप्रयोगों में आनुवांशिक दोषों को ठीक करना, बीमारियों के प्रसार को रोकना और उनका ईलाज करना और फसलों में सुधार करना शामिल है। हालांकि, इसका वादा नैतिक चिंता भी उत्पन्न करता है।

टॉपिक- जी.एस. पेपर 3-विज्ञान एवं तकनीकि

स्रोत- इंडियन एक्सप्रेस

फैविपिरावि‍र

खबरों में क्यों है?

- ड्रग कंट्रोलर जनरल ऑफ इंडिया (डी.सी.जी.आई.) के अनुसार, कृत्रिम परिवेशीय परिणामों के कारण कोविड-19 के खिलाफ 'फैविपिरावि‍र' एक दवा के रूप में आशाजनक है।
- सी.एस.आई.आर. के महानिदेशक ने सूचित किया है कि 'फैविपिरावि‍र' की संश्लेषण प्रक्रिया पूरी हो गई है और डी.सी.जी.आई. अब इसे कोविड-19 उपचार के रूप में परीक्षण के लिए पेश करने के लिए विचार करेगा।

'फैविपिरावि‍र' के संदर्भ में जानकारी

- यह एक एंटी-वायरल एजेंट है जो आर.एन.ए. वायरस के आर.एन.ए.-निर्भर आर.एन.ए. पॉलीमेरेज़ (आर.डी.आर.पी.) को चुनिंदा और शक्तिशाली रूप से रोकता है।
- इसे टोयामा केमिकल कंपनी लिमिटेड द्वारा इन्फ्लूएंजा वायरस के खिलाफ एंटी-वायरल गतिविधि के लिए स्क्रीनिंग केमिकल लाइब्रेरी के माध्यम से खोजा गया था। फैविपिरावि‍र मौजूदा एंटी-इन्फ्लूएंजा दवाओं के लिए प्रतिरोधी उपभेदों सहित इन्फ्लूएंजा वायरस के प्रकार और उपप्रकारों की एक विस्तृत श्रृंखला के खिलाफ प्रभावी है।
- यह अन्य आर.एन.ए. वायरस जैसे कि अरेनावायरस, बुन्यावायरस और फ़िलोवायरस के खिलाफ एंटी-वायरल गतिविधियों को दर्शाता है, इनमें से सभी घातक रक्तस्रावी बुखार का कारण बनते हैं।
- ये अद्वितीय एंटी-वायरल प्रोफाइल, विशेष रूप से अनुपचारित आर.एन.ए. वायरल संक्रमण के लिए फैविपिरावि‍र को एक संभावित आशाजनक दवा बना देगा।

टॉपिक- जी.एस. पेपर 3- विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी
स्रोत- इंडियन एक्सप्रेस और एन.सी.बी.आई.

जी.डब्ल्यू.190412: असमान द्रव्यमान वाले दो ब्लैक होल के पहले विलय का पता लगाया गया है।

खबरों में क्यों है?

- हाल ही में, लीगो वैज्ञानिक सहयोग में गुरुत्वाकर्षण तरंग वेधशालाओं ने दो असमान-द्रव्यमान वाले ब्लैक होल के विलय का पता लगाया है।

जी.डब्ल्यू.190412 के संदर्भ में जानकारी

- जी.डब्ल्यू.190412 नामक इस घटना का पता लगभग एक वर्ष पहले लगा था और इन शक्तिशाली डिटेक्टरों द्वारा गुरुत्वाकर्षण-तरंग संकेतों का पहली बार पता लगाने के लगभग पांच वर्ष बाद इसका पता चला है। हिंसक विलय से आने वाले सिग्नल के परिणामी विश्लेषण से पता चला है कि इसमें असमान द्रव्यमान के दो ब्लैक होल शामिल थे, जिनमें से एक सूर्य के द्रव्यमान का लगभग 30 गुना था और दूसरे का द्रव्यमान सौर द्रव्यमान का लगभग 8 गुना था।
- वास्तविक विलय 2.5 अरब प्रकाश वर्ष पहले हुआ था।

विशेषताएं

- ज्ञात सिग्नल की तरंग में विशिष्ट अतिरिक्त विशेषताएं हैं, जब यह समान आकार के ब्लैक होल के विलय की तुलना में दो असमान आकार के ब्लैक होल के विलय से मेल खाती है।
- ये विशेषताएं इस आकाशीय घटना में विशेषताओं के बारे में कई और बातों अर्थात घटना से दूरी का अधिक सटीक निर्धारण, अधिक विशाल ब्लैक होल का घूर्णन या कोणीय संवेग और पृथ्वी पर दर्शकों से संबंधित संपूर्ण घटना का उन्मुखीकरण का अनुमान लगाना संभव बनाती हैं।

लेजर व्यतिकरणमापी गुरूत्वाकर्षण-तरंग वेधशाला के संदर्भ में जानकारी

- लेजर व्यतिकरणमापी गुरूत्वाकर्षण-तरंग वेधशाला (LIGO) एक बड़े पैमाने पर भौतिकी का प्रयोग और वेधशाला है जो ब्रह्मांडीय गुरुत्वाकर्षण तरंगों का पता लगाने और एक खगोल विज्ञान उपकरण के रूप में गुरुत्वाकर्षण-तरंग अवलोकनों को विकसित करने के लिए है।
- लेजर व्यतिकरणमापी द्वारा गुरुत्वाकर्षण तरंगों का पता लगाने के लिए संयुक्त राज्य अमेरिका में दो बड़ी वेधशालाएं बनाई गईं हैं।
- ये एक प्रोटॉन के आवेशित व्यास के दस-हज़ारवें भाग से कम के 4 कि.मी. की दर्पण स्पेसिंग में बदलाव का पता लगा सकते हैं।

लीगो इंडिया

- लीगो इंडिया, महाराष्ट्र में स्थापित किया जाएगा, जिसमें 4 कि.मी. लंबाई की दो भुजाएँ होंगी।
- इस परियोजना का उद्देश्य हैनफोर्ड से भारत में एक उन्नत लीगो डिटेक्टर को स्थानांतरित करना है।
- यह परियोजना लीगो प्रयोगशाला और इंडिगो कंसोर्टियम में तीन प्रमुख संस्थानों: प्लाज्मा अनुसंधान संस्थान (आई.पी.आर.) गांधीनगर, इंटर-यूनिवर्सिटी सेंटर फॉर एस्ट्रोनॉमी एंड एस्ट्रोफिजिक्स (आई.यू.सी.ए.ए.), पुणे और राजा रमन्ना सेंटर फॉर एडवांस्ड टेक्नोलॉजी (आर.आर.सी.ए.टी.), इंदौर के बीच एक सहयोग है।
- यह एक अति-उच्च परिशुद्धता के साथ बड़े पैमाने का उपकरण है, जिसके स्थानीय क्षेत्र विशेषताओं द्वारा निर्धारित एक अद्वितीय "स्वभाव" दर्शाने की उम्मीद है।

टॉपिक- जी.एस. पेपर 3- विज्ञान एवं तकनीकि

स्रोत- द हिंदू

स्पर्शोन्मुख, लक्षणात्मक और पूर्व-लक्षणात्मक संचरण

खबरों में क्यों है?

- हाल के दिनों में, भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद (आई.सी.एम.आर.) द्वारा विभिन्न दिनों में लोगों के नॉवेल कोरोनोवायरस बीमारी (कोविड-19) के बिना लक्षणों के भी रोगी का परीक्षण पॉजिटिव आने के बारे में बताया गया था।
- डब्ल्यू.एच.ओ. ने कोविड-19 संचरण के तीन चरणों- स्पर्शोन्मुख, लक्षणात्मक और पूर्व-लक्षणात्मक को मान्यता प्रदान की है।

रोगसूचक संचरण

- लक्षणात्मक संचरण, एक व्यक्ति से संचरण को संदर्भित करता है जबकि वे लक्षणों का अनुभव कर रहे हैं। प्रकाशित महामारी विज्ञान और विषाणु विज्ञान अध्ययनों के डेटा इस बात का प्रमाण देते हैं कि कोविड-19 मुख्य रूप से लक्षणात्मक लोगों से दूसरों को प्रेषित होता है, जो उनके निकट संपर्क में होते हैं, वे श्वसन बूंदो, संक्रमित व्यक्तियों के सीधे संपर्क में या दूषित वस्तुओं और सतहों के संपर्क में आने से संक्रमित होते हैं।
- वायरस की इन्क्यूबेशन अवधि 5-14 दिनों के बीच होती है।

स्पर्शोन्मुख संचरण

- यह एक ऐसे व्यक्ति से वायरस के संचरण को संदर्भित करता है जिसमें लक्षणों का विकास नहीं होता है।
- प्रयोगशाला-पुष्टि वाले मामलों की कुछ रिपोर्टें हैं जो वास्तव में स्पर्शोन्मुख हैं और आज तक, स्पर्शोन्मुख संचरण के संदर्भ में कोई दस्तावेज प्रकाशित नहीं किया गया है।
- स्पर्शोन्मुख मामलों को कुछ देशों में कॉन्टैक्ट ट्रेसिंग प्रयासों के हिस्से के रूप में सूचित किया गया है।

पूर्व-लक्षणात्मक संचरण

- पूर्व-लक्षणात्मक संचरण तब होता है जब कोई व्यक्ति लक्षणों के प्रकट होने से पहले बीमारी फैलाता है और अंत में स्वयं लक्षण विकसित करता है।

नोट:

- अमेरिकी विकास नियंत्रण एवे राकथाम केंद्र (सी.डी.सी.) यह स्पष्ट करता है कि वायरस के पूर्व-लक्षणात्मक और स्पर्शोन्मुख संचरण दोनों संभव है।
- मर्स-सी.ओ.वी. और सार्स-सी.ओ.वी. के संक्रमण के समान इस बीमारी के शुरू होने के बाद हफ्तों तक ऊपरी या निचले श्वसन पथ में सार्स-सी.ओ.वी.-2 आर.एन.ए. का पता लगाया जा सकता है।

टॉपिक- जी.एस. पेपर 3-विज्ञान एवं तकनीकि

स्रोत- इंडियन एक्सप्रेस

मोबाइल बी.एस.एल.-3 वी.आर.डी.एल. प्रयोगशाला

खबरों में क्यों है?

- हाल ही में, रक्षा मंत्री ने वीडियो कॉफ्रेंसिंग के माध्यम से मोबाइल बी.एस.एल.-3 वी.आर.डी.एल. प्रयोगशाला नामक एक गतिशील विषाणु विज्ञान अनुसंधान एवं नैदानिक प्रयोगशाला (एम.वी.आर.डी.एल.) का उद्घाटन किया है।
- एम.वी.आर.डी.एल. जैव-सुरक्षा स्तर (बी.एस.एल.)-3 प्रयोगशाला और बी.एस.एल.-2 प्रयोगशाला का संयोजन है।

मोबाइल बी.एस.एल.-3 वी.आर.डी.एल. प्रयोगशाला के संदर्भ में जानकारी

- मोबाइल बी.एस.एल.-3 वी.आर.डी.एल. प्रयोगशाला का डिज़ाइन डी.आर.डी.ओ. के वैज्ञानिकों द्वारा विकसित किया गया है, जब कि प्रयोगशाला का विनिर्देश ई.एस.आई.सी. मेडिकल कॉलेज एंड हॉस्पिटल, सनथनगर और हैदराबाद द्वारा दिया गया है।
- परियोजना को डी.आर.डी.ओ. के तीन उद्योग भागीदारों द्वारा निष्पादित और निर्मित किया गया है।
- यह कोविड-19 और अन्य संबंधित परीक्षण और अनुसंधान उद्देश्यों के लिए देश में इस प्रकार की पहली सुविधा होगी।

टॉपिक- जी.एस. पेपर 2- स्वास्थ्य मुद्दे

स्रोत- इकानॉमिक टाइम्स

सी.आई.एम.-पौशक

खबरों में क्यों है?

- हाल ही में, लखनऊ के सेंट्रल इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिसिनल एंड एरोमेटिक प्लांट्स (सी.आई.एम.ए.पी.) के शोधकर्ताओं ने 'सी.आई.एम. पौशक' और 'आयुर्वेदिक कफ सीरप' विकसित किया है।

सी.आई.एम.- पौशक के संदर्भ में जानकारी

- ये आयुर्वेदिक उत्पाद हैं, जो किसी व्यक्ति की प्रतिरक्षा को बढ़ाने में प्रभावी होते हैं।
- इन दोनों उत्पादों में पूरनवा, अश्वगंधा, मुलेठी, हरड़, बहेडा और सतावर यौगिकों सहित बारह मूल्यवान जड़ी बूटियों का उपयोग किया गया है।
- सी.आई.एम.- पौशक को संस्थान में आयोजित पशु परीक्षणों में सस्ता, सुरक्षित और प्रभावी भी पाया गया है।
- आयुर्वेदिक कफ सिरप को आयुष मंत्रालय के नवीनतम दिशानिर्देशों के आधार पर विकसित किया गया है और इसे आयुर्वेद के 'त्रिदोष' सिद्धांत के आधार पर तैयार किया गया है।

त्रिदोष सिद्धांत के संदर्भ में जानकारी

- जब पांच सनातन पदार्थ- अंतरिक्ष, वायु, अग्नि, जल और पृथ्वी मानव शरीर बनाने के लिए संयोजित होते हैं तो वे तीन महत्वपूर्ण ऊर्जाएं या दोष बनाकर ऐसा करते हैं।
- ये वे बल हैं जो क्रमशः शरीर और मस्तिष्क में सभी मनो-शारीरिक कार्यों को नियंत्रित करते हैं।
- वे शरीर का निर्माण करते हैं और इसे स्वास्थ्य की एक गतिशील स्थिति में बनाए रखने के लिए कार्य करते हैं।
- हालांकि, जब इन महत्वपूर्ण ताकतों को बढ़ा दिया जाता है, तो अनुचित संतुलन या सूक्ष्म कारकों के कारण शरीर-मन का संबंध पीड़ित होने लगता है और रोग प्रक्रिया शुरू हो जाती है।
- तीन महत्वपूर्ण ऊर्जाएं निम्न हैं:

a. **वात:** यह दोषों में सबसे शक्तिशाली है, जो अंतरिक्ष और वायु के परस्पर संपर्क से बनता है।
b. **पित्त:** यह अग्नि और जल की परस्पर क्रिया से बनता है। यह शरीर के चयापचय और शरीर के रूप में परिवर्तन को विनियमित करता है।
c. **कफ:** यह पृथ्वी के संरचनात्मक गुणों से बनता है, जिसमें शरीर के विभिन्न ऊतकों के स्नेहक के रूप में पानी की भूमिका होती है, जो शक्ति को बढ़ाता है और शरीर में सहनशक्ति को बढ़ाता है।

टॉपिक- जी.एस. पेपर 2- स्वास्थ्य मुद्दे

स्रोत- पी.आई.बी.

संयुक्त राज्य भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण द्वारा जारी किया गया चंद्रमा का पहला डिजिटल भूवैज्ञानिक मानचित्र

खबरों में क्यों है?

- चंद्रमा का पहला डिजिटल, एकीकृत, वैश्विक, भूवैज्ञानिक मानचित्र वस्तुतः संयुक्त राज्य भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण (यू.एस.जी.एस.), राष्ट्रीय वैमानिकी एवं अंतरिक्ष प्रशासन और चंद्रमा ग्रह संस्थान द्वारा जारी किया गया था।

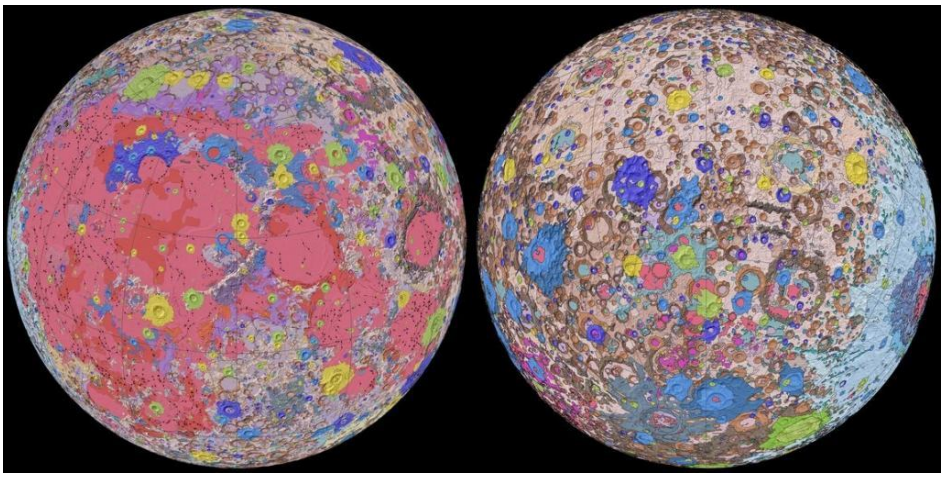

डिजिटल भूवैज्ञानिक मानचित्र के संदर्भ में जानकारी

- मानचित्र एक 'सहज, वैश्विक रूप से सुसंगत, 1:5,000,000-स्केल भूवैज्ञानिक मानचित्र' है।
- इसे 'चंद्रमा का एकीकृत भूवैज्ञानिक मानचित्र' भी कहा जाता है।
- यह भविष्य के मानव मिशनों के लिए एक ब्लूप्रिंट के रूप में काम करेगा और चंद्रमा भूविज्ञान में रूचि रखने वाले शिक्षकों और आम जनता के लिए अनुसंधान और विश्लेषण का एक स्रोत होगा।
- अंतिम मानचित्र में संपूर्ण चंद्र सतह पर 43 भूगर्भिक इकाइयां शामिल हैं, जो गढ्ढे, घाटी, जमीन, मैदान और ज्वालामुखी इकाइयों की सामग्री जैसी विशेषताओं के आधार पर समूहों में विभाजित हो गई है।

नोट:

- भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो), चंद्रयान 2 एक सक्रिय मिशन है जो अन्वेषण के लिए चंद्र दक्षिण ध्रुव को लक्षित करता है।
- चंद्रमा का दक्षिणी ध्रुव विशेष रूप से रूचिकर है क्योंकि यह क्षेत्र, उत्तरी ध्रुव से बहुत बड़ा है और इन स्थायी रूप से छायांकित क्षेत्रों में पानी की उपस्थिति की संभावना हो सकती है।
- इसके अतिरिक्त, दक्षिणी ध्रुव क्षेत्र में प्रारंभिक सौर प्रणाली का जीवाश्म रिकॉर्ड भी शामिल है।

टॉपिक- जी.एस. पेपर 3- विज्ञान एवं तकनीकि

स्रोत- द हिंदू

सुरक्षा संबंदी घटनाएँ

रेड फ्लैग हवाई युद्धाभ्यास

खबरों में क्यों है?

- हाल ही में, अमेरिकी वायु सेना ने कोरोनावायरस के प्रकोप के कारण रेड फ्लैग युद्धाभ्यास को रद्द कर दिया है।

रेड फ्लैग युद्धाभ्यास के संदर्भ में जानकारी:

- यह संयुक्त राज्य अमेरिका और उसके सहयोगियों की वायु सेना के बीच एक वार्षिक हवाई युद्ध प्रशिक्षण अभ्यास है।
- यह 1975 में पहली बार आयोजित किया गया था। इसका उद्देश्य संयुक्त राज्य अमेरिका और संबद्ध देशों के सैन्य पायलटों और अन्य उड़ान चालक दल के सदस्यों के लिए यथार्थवादी हवाई-लड़ाकू प्रशिक्षण प्रदान करना है।

टॉपिक- जी.एस. पेपर 3-रक्षा

स्रोत- द हिंदू

पैट्रियॉट एयर डिफेंस मिसाइल

खबरों में क्यों है?

- हाल ही में, अमेरिका ने इराक में पैट्रियॉट एयर डिफेंस मिसाइलों को तैनात किया है।

पैट्रियॉट एयर डिफेंस मिसाइल के संदर्भ में जानकारी

- पैट्रियॉट (MIM-104) एक लंबी दूरी की, सभी ऊंचाईयों वाली, सामरिक बैलिस्टिक मिसाइलों, क्रूज मिसाइलों और उन्नत विमानों का मुकाबला करने के लिए सभी मौसम वाली वायु रक्षा (एयर डिफेंस) प्रणाली है।
- यह मैसाचुसेट्स में रेथियॉन और फ्लोरिडा में लॉकहीड मार्टिन मिसाइल और फायर कंट्रोल द्वारा निर्मित की गई है।
- पैट्रियॉट मिसाइल ट्रैक-वॉया मिसाइल (टी.वी.एम.) मार्गदर्शन प्रणाली से सुसज्जित है।

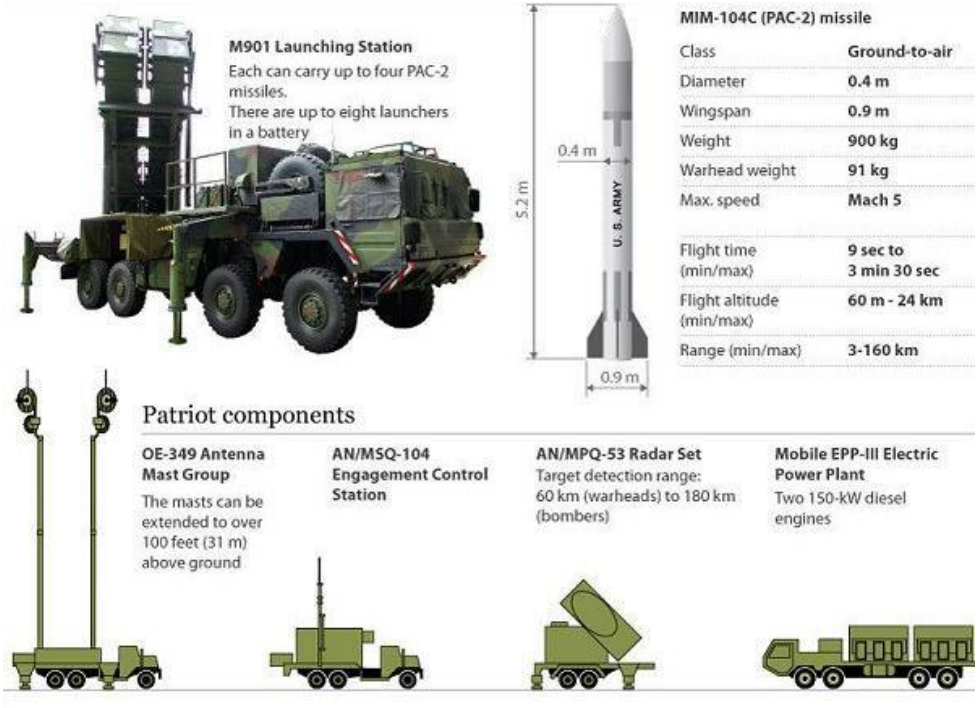

यह कैसे कार्य करती है?

- उल्लेखनीय लक्ष्य के साथ, पैट्रियॉट मिसाइल प्रणाली को एक आने वाली मिसाइल का पता लगाकर, लक्षित करके और फिर मारने के लिए डिज़ाइन किया गया है, जो 10 से 20 फीट (3 से 6 मीटर) से अधिक लंबी नहीं हो सकती है।
- यह ध्वनि की गति से तीन से पांच गुना अधिक गति से उड़ सकती है। उन्नत पैट्रियॉट प्रणाली आने वाले विमानों और क्रूज मिसाइलों को भी नष्ट कर सकती है।
- यह दुश्मन की मिसाइलों (जैसे- स्कड मिसाइलों) को मार गिरा सकती है और मिसाइल हमले से सैनिकों और नागरिकों की रक्षा कर सकती है।

इराकी युद्ध में कई बार पैट्रियॉट मिसाइल बैटरियों को सक्रिय किया गया था और 1991 के खाड़ी युद्ध में बड़े पैमाने पर इस्तेमाल किया गया था। बैटरी के पांच घटक हैं:

a. खुद मिसाइल (MIM-104)
b. मिसाइल लॉन्चर, जो मिसाइलों (M-901) को रखता है, आवागमन करता है, लक्षित करता है और लॉन्च करता है। यह हिस्सा आवश्यक है क्योंकि प्रत्येक मिसाइल का वजन लगभग 1 टन है।
c. आने वाली मिसाइलों का पता लगाने के लिए एक रडार एंटीना (MPQ-53 या MPQ-65)।
d. एंगेजमेंट कंट्रोल स्टेशन (ECS) नामक एक उपकरण वैन में बैटरी को नियंत्रित करने के लिए कंप्यूटर और कंसोल होते हैं। (MSQ-104)
e. दो 150-किलोवाट जनरेटर से सुसज्जित एक पावर प्लांट ट्रक होता है, जो रडार एंटीना और ई.सी.एस. के लिए बिजली प्रदान करता है।

टॉपिक- जी.एस. पेपर 3- रक्षा

स्रोत- टी.ओ.आई.

एन.सी.सी. योगदान अभ्यास

खबरों में क्यों है?

- हाल ही में, रक्षा मंत्रालय (एम.ओ.डी.) ने वर्तमान में चल रहे वायरस के प्रकोप के खिलाफ लड़ाई में 'एन.सी.सी. योगदान अभ्यास' के अंतर्गत एन.सी.सी. कैडेटों के अस्थायी रोजगार की अनुमति दी है।

राष्ट्रीय कैडेट कोर के संदर्भ में जानकारी

- राष्ट्रीय कैडेट कोर, नई दिल्ली में अपने मुख्यालय के साथ सशस्त्र बलों की युवा शाखा है।
- यह स्कूल और कॉलेज के स्वैच्छिक छात्रों के लिए खुली है।
- राष्ट्रीय कैडेट कोर, एक त्रि-सेवा संगठन है, जिसमें सेना, नौसेना और एयर विंग शामिल हैं, जो देश के युवाओं को अनुशासित और देशभक्त नागरिकों के रूप में संवारने में लगे हुए हैं।

वायरल के प्रकोप के बीच कैडेट्स के लिए परिकल्पित कार्यों के प्रकारों में शामिल हैं:

- हेल्पलाइन/ कॉल सेंटर की मैनिंग
- राहत सामग्री, दवाओं, भोजन/ आवश्यक वस्तुओं का वितरण
- सामुदायिक सहायता
- डेटा प्रबंधन और कतार और यातायात प्रबंधन
- सी.सी.टी.वी. नियंत्रण कक्षों की मैनिंग

टॉपिक- जी.एस. पेपर 3- रक्षा

स्रोत- डी.एस.टी.

सागर (SAGAR) दृष्टिकोण का परीक्षण किया जा रहा है।

खबरों में क्यों है?

- भारतीय महासागर आयोग (आई.ओ.सी.) के पर्यवेक्षक के रूप में भारत का हालिया प्रवेश, इसके सागर दृष्टिकोण का परीक्षण करेगा।

उद्देश्य

- हिंद महासागर में भूमि और समुद्री क्षेत्रों और हितों की सुरक्षा के लिए क्षमताओं को बढ़ाना
- समुद्र तटों पर आर्थिक और सुरक्षा सहयोग को गहन बनाना, प्राकृतिक आपदाओं और समुद्री खतरों जैसे कि समुद्री डकैती, आतंकवाद से निपटने के लिए कार्रवाई करना

- इसमें अपने किनारों से ऊपर के देशों के साथ संलग्न होना भी शामिल है जिससे कि अधिक विश्वास का निर्माण किया जा सके और समुद्री नियमों, मानदंडों और विवादों के शांतिपूर्ण समाधान के लिए सम्मान को बढ़ावा दिया जा सके।

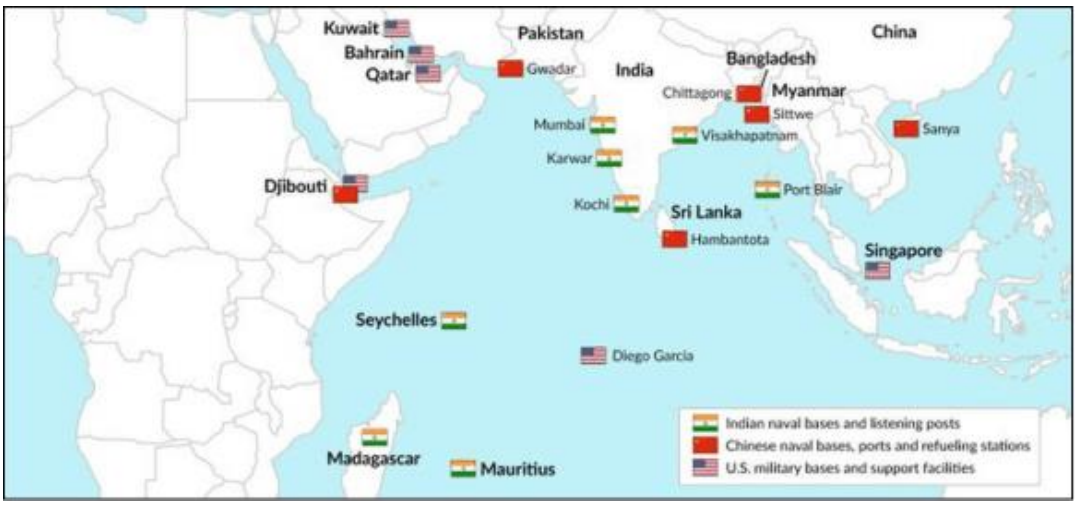

SAGAR (क्षेत्र में सभी के लिए सुरक्षा और विकास) के संदर्भ में जानकारी

- प्रधानमंत्री ने मार्च, 2015 में सागर के दृष्टिकोण को प्रतिपादित किया था, जो हिंद महासागर के लिए भारत के दृष्टिकोण का एक स्पष्ट उच्चारण है। सागर में अंतर-संबंधित तत्व हैं और हिंद महासागर में भारत की भागीदारी को जांचता है।

हिंद महासागर आयोग के संदर्भ में जानकारी

- यह एक अंतर-सरकारी संगठन है जिसमें पश्चिमी हिंद महासागर में पांच छोटे-छोटे द्वीप शामिल हैं, जिनके नाम कोमोरोस, मेडागास्कर, मॉरीशस, रियूनियन (एक फ्रांसीसी विभाग) और सेशेल्स हैं।
- इसका सचिवालय मॉरीशस में स्थित है।
- हाल ही में, आई.ओ.सी. ने आयोग के 34वें मंत्रिपरिषद में 6 मार्च, 2020 को भारत को पर्यवेक्षक का दर्जा प्रदान किया है।
- अब इसके 5 पर्यवेक्षक- चीन, भारत, माल्टा, यूरोपीय संघ और ऑर्गनाइजेशन इंटरनेशनेल डे ला फ्रांकोफोनी हैं।

पृष्ठभूमि

- मार्च 2015 में, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने तीन छोटे लेकिन महत्वपूर्ण हिंद महासागर द्वीप राज्यों- सेशेल्स, मॉरीशस और श्रीलंका का दौरा किया था।
- इस दौरे के दौरान, उन्होंने हिंद महासागर के लिए भारत के रणनीतिक दृष्टिकोण: क्षेत्र में सभी के लिए सुरक्षा और प्रगति (SAGAR) का का अनावरण किया था।

टॉपिक- जी.एस. पेपर 3- रक्षा

स्रोत- लाइव मिंट, द हिंदू

नूर उपग्रह

खबरों में क्यों है?

- हाल ही में, ईरान ने 'नूर' नामक एक उपग्रह का सफलतापूर्वक प्रक्षेपण किया है।

नूर के संदर्भ में जानकारी

- यह कक्षा में ईरान का पहला सैन्य उपग्रह है।
- इस्लामी गणतंत्र समाचार एजेंसी (आई.आर.एन.ए.), ईरानी सरकार की आधिकारिक वेबसाइट ने नूर के सफल प्रक्षेपण की पुष्टि की है।
- उपग्रह को तीन चरण वाहक घासेड से लॉन्च किया गया था और इसे 425 किलोमीटर की कक्षा में स्थापित किया गया था।

टॉपिक- जी.एस. पेपर 3- रक्षा, स्रोत- ए.आई.आर.

पिच ब्लैक 2020

खबरों में क्यों है?

- हाल ही में, ऑस्ट्रेलिया ने भारत को सूचित किया है कि 27 जुलाई से 14 अगस्त तक होने वाले उनके प्रमुख बहुपक्षीय हवाई युद्ध प्रशिक्षण युद्धाभ्यास पिच ब्लैक 2020 को कोविड-19 स्थिति के कारण रद्द कर दिया गया है।

पिच ब्लैक 2020 के संदर्भ में जानकारी

- यह एक द्विवार्षिक युद्धाभ्यास है, जिसे रॉयल ऑस्ट्रेलियाई वायु सेना (आर.ए.ए.एफ.) द्वारा आयोजित किया जाता है।
- इस युद्धाभ्यास का उद्देश्य एक नकली युद्ध के माहौल में आक्रामक काउंटर एयर (ओ.सी.ए.) और रक्षात्मक काउंटर एयर (डी.सी.ए.) से निपटने का अभ्यास करना है।
- यह इन देशों के साथ गतिशील युद्ध के माहौल में ज्ञान और अनुभव के आदान-प्रदान का एक अद्वितीय अवसर प्रदान करता है।
- पिच ब्लैक का अगला संस्करण वर्ष 2022 में निर्धारित किया गया है।

ऑस्ट्रेलिया के साथ अन्य युद्धाभ्यास

ऑसइंडेक्स

- यह भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच एक द्विपक्षीय नौसैनिक युद्धाभ्यास है।

नोट: हाल ही में, नामित ऑस्ट्रेलियाई उच्चायुक्त- बैरी ओ फैरेल ने भारत, ऑस्ट्रेलिया और इंडोनेशिया के बीच त्रिपक्षीय सहयोग के लिए पिच तैयार की है, जिससे कि "हम तीन देश हिंद महासागर के सर्वश्रेष्ठ संभावित संरक्षण हेतु सहयोग करने हेतु नए तरीकों की पहचान कर सके"।

टॉपिक- जी.एस. पेपर 3- रक्षा

स्रोत- द हिंदू

कला और संस्कृति

तब्लीगी जमात

खबरों में क्यों है?

- हाल ही में, दिल्ली के मरकज़ निज़ामुद्दीन में जमा हुए 4000 संदिग्ध व्यक्तियों में से 200 से अधिक व्यक्तियों के कोविड-19 के टेस्ट पॉजिटिव पाए गए हैं। जो तब्लीगी जमात का मुख्यालय था।

तब्लीगी जमात क्या है?

- तब्लीगी जमात का अर्थ विश्वास फैलाने के लिए समाज से है, यह एक सुन्नी इस्लामी मिशनरी आंदोलन है।
- यह बाद के औपनिवेशिक भारत में धार्मिकता के सबसे प्रमुख रूपों में से एक के रूप में उभरा है। धर्मांतरण आंदोलन का उद्देश्य आम मुसलमानों तक पहुंचना और उनके विश्वास को पुनर्जीवित करना है, विशेष रूप से अनुष्ठान, पोशाक और व्यक्तिगत व्यवहार के मामलों में पुनर्जीवित करना है।

यह आंदोलन कैसे शुरू हुआ था?

- इसकी जड़ें हनफ़ी धर्मशास्त्र स्कूल के देवबंदी संस्करण से जुड़ी हैं।
- इसे देवबंद के मौलवी और प्रमुख इस्लामिक विद्वान मौलाना मुहम्मद इलियास खंडालाव ने 1927 में मेवात में शुरू किया था।
- इसका उद्भव हिंदू धर्मांतरण आंदोलनों के साथ मेल खाता है।

यह इस्लाम को कैसे बढ़ावा देता है?

तब्लीगी जमात छह सिद्धांतों पर आधारित है:

a. पहला कलीमाह है, यह विश्वास का एक लेख है जिसमें तब्लीगी स्वीकार करता है कि कोई भगवान नहीं है, लेकिन अल्लाह और वह पैगंबर मुहम्मद उसका दूत है।
b. दूसरा सलात या रोजाना पांच बार की नमाज अदा करना है।
c. तीसरा इल्म और धिक्र, अल्लाह का ज्ञान और स्मरण सत्रों में आयोजित किया जाता है जिसमें जनसमूह इमाम द्वारा दिए गए उपदेश को सुनती है, नमाज़ अदा करती है, कुरान पढ़ती है और हदीथ पढ़ती है।
d. चौथा सिद्धांत इकराम-ए-मुस्लिम है, साथी मुसलमानों का सम्मान के साथ उपचार किया जाता है।
e. पांचवा इख़लास-ए-नियत या इरादे की इमानदारी है
f. छठा दावत-ओ-तब्लीग या धर्मांतरण है

टॉपिक- जी.एस. पेपर 1-कला एवं संस्कृति

स्रोत- द हिंदू

भारत में वसंत कृषि त्योहार

खबरों में क्यों है?

- भारत के राष्ट्रपति ने वैसाखी, विशु, रोंगाली बिहू, नाबा बरशा, वैसाखड़ी, पुथंडू, पीरप्पु के अवसर पर लोगों को शुभकामनाएं दीं हैं, जो भारत में वसंत कृषि त्यौहार के रूप में देश के विभिन्न हिस्सों में मनाए जा रहे हैं।
- वैशाख महीने का पहला दिन (13 अप्रैल, 14 या 15 अप्रैल), हिंदू नववर्ष की शुरूआत का प्रतीक है।
- जिसे विभिन्न नामों से बैसाखी या वैसाखी (यूपी, उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश, हरियाणा और पंजाब), पुथंडू (तमिलनाडु), विशु (केरल), महाबिशुवा संक्रांति (ओडिशा), रोंगाली बिहू (असम) और पोइला बोइशाख (बंगाल) कहा जाता है। यह वसंत फसल का उत्सव भी है।

भारत में वसंत कृषि त्योहारों के प्रकार

A. **रोंगाली बिहू**

- रोंगाली बिहू को बोहाग बिहू के नाम से भी जाना जाता है, यह असम में मनाया जाता है।
- यह त्योहार असम और पूर्वोत्तर भारत के अन्य हिस्सों में मनाया जाता है।

- बोहाग बिहू या रोंगाली बिहू त्यौहार, सात दिनों तक जारी रहता है और इसे सात बिहु भी कहा जाता है। इन सात दिनों को छोट बिहू, गोरू बिहू, मनुह बिहू, कुटुम बिहू, सेनेही बिहू, मेला बिहू और चेरा बिहू के रूप में जाना जाता है।
- यह असमिया नव वर्ष की शुरुआत का प्रतीक है।
- यह हिंदू सौर कैलेंडर के पहले दिन को चिन्हित करता है और इसे बंगाल, मणिपुर, मिथिला, नेपाल, उड़ीसा, पंजाब, केरल और तमिलनाडु में भी मनाया जाता है, इसलिए इसे अलग-अलग नामों से पुकारा जाता है।
- किसान, धान की खेती के लिए खेत तैयार करते हैं और चारों ओर हर्ष की अनुभूति होती है।

पोइला बोइशाख

- पोइला बोइशाख को पहेला बैशाख या बंगला नाबाबरशा के नाम से भी जाना जाता है, बंगाली कैलेंडर का पहला दिन है।
- बोइशाख, बंगाली कैलेंडर का पहला महीना है और पोइला का अर्थ पहला है। अत: पोइला बोइशाख का अर्थ बोइशाख महीने का पहला दिन है, इस प्रकार, यह नए वर्ष की शुरूआत को

चिह्नित करता है। लोग एक दूसरे को शुभो नोबोबोरशों कहकर शुभकामनाएं देते हैं, जहां नाबा का अर्थ नया और बोरशों का अर्थ वर्ष है, जिसका एक साथ अर्थ नव वर्ष है।

- ग्रेगोरियन कैलेंडर के अनुसार, बंगाली नववर्ष सामान्यत: 14 अप्रैल या 15 अप्रैल के आसपास पड़ता है। इस वर्ष पोइला बोइशाख, 14 अप्रैल को मनाया जाएगा।
- बंगाली सौर कैलेंडर के शुरूआती महीने बैशाख के पहले दिन को भारत के विभिन्न हिस्सों में नाबा बरशा, पोइला बोइशाख और पहेला बैसाख जैसे कई नामों से पुकारा जाता है।

पुथंडु

- पुथंडु, दुनिया भर में तमिलों द्वारा धूमधाम से मनाया जाता है। यह तमिल नववर्ष के पहले दिन को चिह्नित करता है।
- इस दिन, लोग एक-दूसरे को 'पुथंडू वज़थुकल' कहते हैं, जिसका अर्थ 'नववर्ष मंगलमय हो' है
- तमिल नववर्ष वसंत विषुव का अनुसरण करता है और यह सामान्यत: ग्रेगोरियन वर्ष के 14 अप्रैल को पड़ता है।
- मंदिर के शहर मदुरै में, मीनाक्षी मंदिर में चित्तेराई थिरूविझा मनाया जाता है। एक विशाल प्रदर्शनी आयोजित की जाती है, जिसे चित्तेराई पोरूतकातची कहा जाता है।
- पुथंडु को तमिलनाडु और पुदुचेरी के बाहर तमिल हिंदुओं द्वारा भी मनाया जाता है, जैसे श्रीलंका, मलेशिया, सिंगापुर, रीयूनियन, मॉरीशस और अन्य देशों में तमिल प्रवासी हैं।
- यह दिन पारंपरिक तमिल कैलेंडर का पहला दिन मनाता है और तमिलनाडु और श्रीलंका दोनों जगह सार्वजनिक अवकाश होता है।
- म्यांमार, कंबोडिया, थाईलैंड में कई बौद्ध समुदाय और श्रीलंका में सिनहालीस भी उसी दिन अपना नया वर्ष मनाते हैं।

बैसाखी

- इसे वैसाखी, वैशाखी या बैसाखी के नाम से भी जाना जाता है, इसे पंजाब, हरियाणा और चंडीगढ़ में बहुत धूमधाम से मनाया जाता है।
- बैसाखी, सिखों और हिंदुओं के लिए एक वसंत फसल त्योहार है। यह सामान्यत: प्रत्येक वर्ष 13 या 14 अप्रैल को मनाया जाता है।
- यह सिख नव वर्ष को चिह्नित करता है और 1699 में गुरू गोविंद सिंह के अंतर्गत योद्धाओं के खालसा पंथ के गठन की याद दिलाता है।

- वैसाखी भी हिंदुओं का एक प्राचीन त्यौहार है, जो सौर नववर्ष को चिह्नित करता है और वसंत फसल का जश्न भी मनाता है।
- बैसाखी, वह दिन था जब औपनिवेशिक ब्रिटिश साम्राज्य के अधिकारियों ने एक सभा पर जलियांवाला बाग हत्याकांड को अंजाम दिया था, जो औपनिवेशिक शासन के खिलाफ भारतीय आंदोलन की एक घटना थी।

बिकोटी

- यह उत्तराखंड का त्योहार है, जिसमें लोग पवित्र नदियों में डुबकी लगाते हैं।

जुरशीतल

- यह बिहार और नेपाल के मिथिला क्षेत्र में मनाया जाता है, नए वर्ष को जुरशीतल के रूप में मनाया जाता है।

महाबिशुवा संक्रांति

- यह ओडिशा में मनाया जाता है, जिसे पाना संक्रांति के रूप में भी जाना जाता है। इस त्योहार को मनाने के लिए, ओडिशा सरकार ने ओडिशा में लॉकडाउन के बीच मेरू जात्रा उत्सव को रद्द करने का फैसला किया है।

टॉपिक- जी.एस. पेपर 1-कला एवं संस्कृति

स्रोत- पी.आई.बी.

मेरूजात्रा उत्सव

खबरों में क्यों है?

- हाल ही में, ओडिशा सरकार ने महाविषुवा संक्रांति के अवसर पर मंदिरों में मेरू जात्रा उत्सव और उससे संबंधित भीड़ पर प्रतिबंध लगा दिया है।
- महाविषुब संक्रांति, ओडिया नववर्ष की शुरुआत है।

मेरू जात्रा त्योहार के संदर्भ में जानकारी

- यह 'डंडा नाता' नाम से 21 दिनों तक चलने वाली तपस्या के अंत का प्रतीक है। डंडा नाता या डंडा जात्रा, दक्षिण ओडिशा के विभिन्न हिस्सों और विशेष रूप से गंजम जिले में आयोजित किए जाने वाले सबसे महत्वपूर्ण पारंपरिक नृत्य समारोहों में से एक है।
- डंडा नाता उत्सव, प्रत्येक वर्ष चैत्र के महीने में आयोजित किया जाता है।
- इस उत्सव में केवल पुरुष व्यक्ति हिस्सा लेते हैं।
- डंडा के प्रतिभागियों को डांडुआस (भोक्ता के रूप में भी जाना जाता है) कहा जाता है।

कुछ प्रमुख विशेषताएं

- गंजम जिला, प्राचीन कलिंग साम्राज्य का हृदय स्थल है।
- कलिंग सम्राटों ने इस चैत्र त्योहार का आयोजन अपनी इस्ता देवी, तारातारिणी के लिए किया था।
- यह माना जाता है कि वर्तमान दिन डंडा नाता, प्राचीन चैत्र यात्रा उत्सवों का एक हिस्सा है जो प्रत्येक वर्ष तारातारिणी शक्ति/ तंत्र पीठ में मनाया जाता है।
- डांडुआस या भोक्ता 13वें, 18वें या 21वें दिन की डंडा अवधि के दौरान देवी काली और शिव की प्रार्थना करते हैं।
- त्योहार के दौरान इन सभी दिनों के लिए सभी 'भोक्ता' या 'डांडुआस' बहुत ही पवित्र जीवन जीते हैं और वे इस अवधि के दौरान मांस, मछली खाने या साथ रहने से बचते हैं।
- डंडा नाता, एक धार्मिक त्योहार का एक रूप है जिसमें नाटकीय और नृत्य घटक होते हैं।
- इसके साथ की घटनाओं के साथ नृत्य का तीन महीने मार्च, अप्रैल और मई के दौरान प्रदर्शन किया जाता है।

टॉपिक- जी.एस. पेपर 1- कला एवं संस्कृति

स्रोत- द हिंदू

निहंग

खबरों में क्यों है?

- हाल ही में, पटियाला ने राष्ट्रीय लॉकडाउन के दौरान निहंगों और पंजाब पुलिस के बीच एक घटना देखी है।

निहंगों के संदर्भ में जानकारी

- यह सिख योद्धाओं का एक आदेश है, जिनकी प्रमुख विशेषताओं में नीले वस्त्र, तलवार और भाले जैसे पुरातन हथियार और स्टील क्वाइट्स द्वारा सुरम्य रूप से सजाई गई पगड़ी है।
- वे अप्रत्याशित घटनाओं के लिए छरदी कला (हमेशा अधिक जोश में) और तियार बार तियार (हमेंशा तैयार होने की स्थिति) के नारे लगाते हैं।

निहंग कौन बन सकता है?

- जाति, पंथ या धर्म के निरपेक्ष किसी भी व्यक्ति को शामिल किया जा सकता है, बशर्ते उसके पास पंथ में प्रवेश के समय सिख परंपराओं के अनुसार अविभाजित बाल हों।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

- पहले सिख शासन (1710-15) के पतन के बाद, जब मुगल गवर्नर सिखों की हत्या कर रहे थे और अफगानी आक्रमणकारी अहमद शाह दुर्रानी (1748-65) के हमले के दौरान सिख पंथ की रक्षा करने में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका थी।
- उन्होंने अकाल तख्त पर सिखों की भव्य परिषद (सरबत खालसा) आयोजित की थी और प्रस्ताव (गुरमाता) पारित किया था।

टॉपिक- जी.एस. पेपर 1- कला एवं संस्कृति

स्रोत- द हिंदू

देखो अपना देश वेबिनार श्रृंखला

खबरों में क्यों है?

- हाल ही में, पर्यटन मंत्रालय ने कई "गंतव्य" और हमारे अतुल्य भारत की संस्कृति और विरासत की गहनता और विस्तार के बारे में जानकारी देने के लिए अपनी "देखो अपना देश" वेबिनार श्रृंखला शुरू की है।

देखो अपना देश वेबिनार श्रृंखला के संदर्भ में जानकारी

- यह कई स्थानों और अतुल्य भारत की संस्कृति और विरासत की गहनता और विस्तार के संदर्भ में जानकारी प्रदान करने के लिए लॉन्च किया गया है।
- श्रृंखला के पहले वेबिनार का शीर्षक "शहरों का शहर- दिल्ली की व्यक्तिगत डायरी" ने दिल्ली के लंबे इतिहास को छुआ है क्यों कि यह 8 शहरों के रूप में सामने आया है।
- वेबिनार मंत्रालय के सोशल मीडिया हैंडल- इंस्टाग्राम और फेसबुक पर अतुल्य भारत पर उपलब्ध होगा।

भारत की समृद्ध संस्कृति को दर्शाना:

- वेबिनार की श्रृंखला एक चालू सुविधा होगी और मंत्रालय भारत के विविध और उल्लेखनीय इतिहास और संस्कृति को प्रदर्शित करने की दिशा में काम करेगा, जिसमें इसके स्मारक, व्यंजन, कला, नृत्य रूप, प्राकृतिक परिदृश्य, त्योहार और समृद्ध भारतीय सभ्यता के कई अन्य पहलू शामिल हैं।
- इस सत्र का मूल पर्यटन जागरूकता और सामाजिक इतिहास पर आधारित है।

सार्वजनिक क्षेत्र में वेबिनार का शुभारंभ जल्द होगा:

- वेबिनार जल्द ही सार्वजनिक क्षेत्र में उपलब्ध होगा।
- अगला वेबिनार 16 अप्रैल को सुबह 11 बजे से दोपहर 12 बजे तक है और आगंतुकों को कोलकाता के अद्भुत शहर में ले जाएगा।

टॉपिक- जी.एस. पेपर 1- कला एवं संस्कृति

स्रोत- इंडियन एक्सप्रेस

दरबार चाल

खबरों में क्यों है?

- 144 वर्षों में पहली बार, जम्मू-कश्मीर (जे. एंड के.) प्रशासन ने कोविड-19 संकट के कारण 'दरबार चाल' को रोकने का निर्णय लिया है।

दरबार चाल के संदर्भ में जानकारी

- यह सचिवालय और जम्मू और कश्मीर में श्रीनगर (जम्मू की राज्य की ग्रीष्मकालीन राजधानी) से जम्मू (राज्य की शीतकालीन राजधानी) में अन्य सभी सरकारी कार्यालयों के द्वि-वार्षिक सत्र का नाम है।

अवधि

- सचिवालय मई से अक्टूबर तक श्रीनगर में और नवंबर से अप्रैल तक जम्मू में स्थित होता है।

ऐतिहासिक उत्पति

- इन स्थानों पर चरम मौसम की स्थिति से बचने के लिए 1872 में डोगरा राजा महाराजा रणबीर सिंह द्वारा यह अभ्यास शुरू किया गया था।

टॉपिक- जी.एस. पेपर 1-इतिहास

स्रोत- ए.आई.आर.

यूनेस्को की विश्व विरासत समिति

खबरों में क्यों है?

- कोरोनावायरस के प्रकोप के कारण फ़ूझो (चीन) में निर्धारित यूनेस्को की विश्व विरासत समिति का 44वां सत्र स्थगित कर दिया गया है।
- भारत ने वर्ष 1977 में विश्व विरासत सम्मेलन की पुष्टि की थी।

यूनेस्को की विश्व विरासत समिति के संदर्भ में जानकारी

- यह विश्व विरासत सम्मेलन के 21 राज्यों की पार्टियों के प्रतिनिधियों का एक समूह है। यह विश्व विरासत सम्मेलन के कार्यान्वयन हेतु जिम्मेदार है, यह विश्व विरासत कोष के उपयोग को परिभाषित करता है और राज्यों पार्टियों के अनुरोध पर वित्तीय सहायता आवंटित करता है।
- इसमें विश्व विरासत सूची में संपत्ति घोषित करने की अंतिम निर्णय लेने की शक्ति है।
- यह खतरें में विश्व विरासत की सूची पर संपत्तियों के शिलालेख या विलोपन पर भी निर्णय लेता है।
- तीन सलाहकार निकाय, विश्व विरासत समिति के विचार-विमर्श में सहायता करते हैं:

A. अंतर्राष्ट्रीय प्रकृति संरक्षण संघ
B. अंतर्राष्ट्रीय स्मारक एवं स्थल परिषद
C. सांस्कृतिक संपदा के संरक्षण और बहाली के अध्ययन हेतु अंतर्राष्ट्रीय केंद्र

टॉपिक- जी.एस. पेपर 1- कला एवं संस्कृति

स्रोत- यूनेस्को.ऑर्ग

भारत की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत (आई.सी.एच.) की राष्ट्रीय सूची

खबरों में क्यों है?

- केंद्रीय संस्कृति मंत्री (आई/सी) ने नई दिल्ली में भारत की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत (आई.सी.एच.) की राष्ट्रीय सूची का शुभारंभ किया है।

अमूर्त विरासत की सुरक्षा हेतु सम्मेलन

- इसे संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक संगठन (यूनेस्को) द्वारा वर्ष 2003 में अपनाया गया था और वर्ष 2006 में लागू किया गया था।
- यह पहल संस्कृति मंत्रालय के विजन 2024 का एक हिस्सा भी है।
- भारत से अमूर्त सांस्कृतिक विरासत को मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत की यूनेस्को प्रतिनिधि सूची में शामिल किया गया है।

अमूर्त सूची के क्षेत्र

- सूची को पांच व्यापक क्षेत्रों में वर्गीकृत किया गया है, जिसमें अमूर्त सांस्कृतिक विरासत दर्शायी गई हैं:
- मौखिक परंपरा और अभिव्यक्ति, जिसमें भाषा को कला का प्रदर्शन करने वाली अमूर्त सांस्कृतिक विरासत के एक वाहन के रूप में शामिल किया गया है।
- सामाजिक प्रथाएं, अनुष्ठान और महोत्सव कार्यक्रम
- प्रकृति और ब्रह्मांड से संबंधित ज्ञान और प्रथाएं
- पारंपरिक शिल्प कौशल

उद्देश्य:

- इसका उद्देश्य राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भारत के विभिन्न राज्यों से विभिन्न अमूर्त सांस्कृतिक विरासत तत्वों के बारे में जागरूकता बढ़ाना और उनकी सुरक्षा सुनिश्चित करना है।
- वैश्वीकरण की प्रक्रियाओं द्वारा लुप्तप्राय अमूर्त सांस्कृतिक विरासत की अभिव्यक्तियों की सुरक्षा करना
- समुदायों, समूहों और व्यक्तियों की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत हेतु सम्मान सुनिश्चित करना
- अमूर्त सांस्कृतिक विरासत के महत्व के स्थानीय, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर जागरूकता बढ़ाना

भारत में मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत की यूनेस्को प्रतिनिधि सूची में कुल 13 अमूर्त सांस्कृतिक विरासत शमिल की गई हैं।

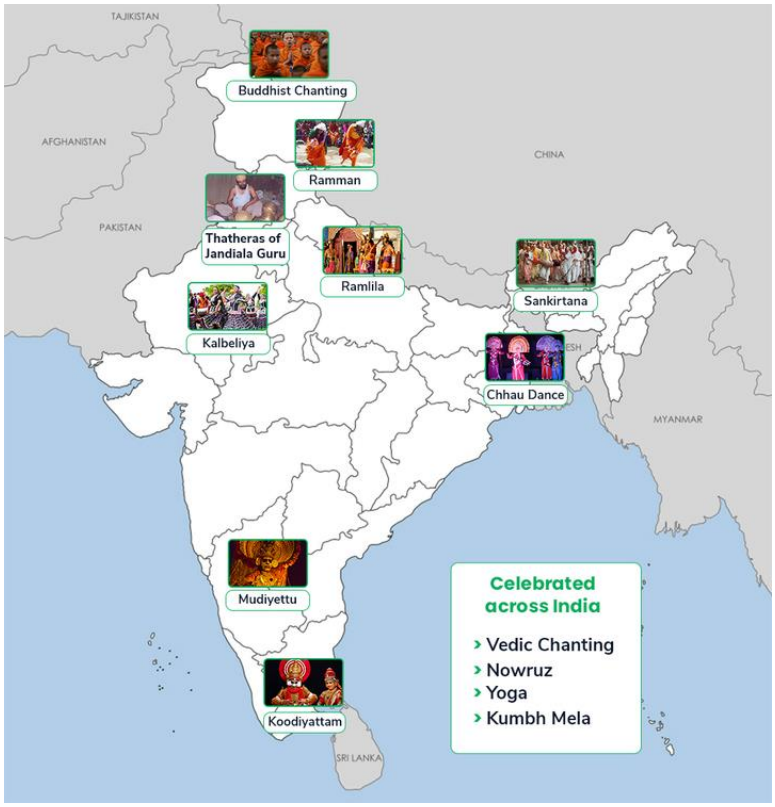

इसमें शामिल है:

- कूदीयाट्टम, संस्कृत थिएटर, केरल
- मुदियेत्त: केरल का एक पारंपरिक थिएटर
- वैदिक जप की परंपरा, रामलीला- रामायण का पारंपरिक प्रदर्शन
- राम्मन: गढ़वाल हिमालय का धार्मिक उत्सव और पारंपरिक थियेटर
- कालबेलिया: राजस्थान के लोक गीत और नृत्य
- छाऊ नृत्य: पूर्वी भारत की एक परंपरा
- लद्दाख के बौद्ध जप: ट्रांस हिमालयी लद्दाख क्षेत्र, भारत के जम्मू और कश्मीर में पवित्र बौद्ध ग्रंथों का पाठ
- संकीर्तन, पारंपरिक गायन, ढोलक और मणिपुर का नृत्य
- पंजाब के जंडियाला गुरू के थिएटरों के बीच बनाए जाने वाले पारंपरिक पीतल और तांबे के शिल्पकार बर्तन
- योग
- कुंभ मेला (हाल ही में जोड़ा गया है)

टॉपिक- जी.एस. पेपर 1- कला एवं संस्कृति

स्रोत- पी.आई.बी.

देवनहल्ली चकोटा

खबरों में क्यों है?

- हाल ही में, बैंगलोर अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा लिमिटेड (बी.आई.ए.एल.) ने अपने सी.एस.आर. कार्यक्रम 'नम्मा ओरू' के अंतर्गत देवनहल्ली पोमेलो फल की खेती की है।

देवनहल्ली पोमेलो के संदर्भ में जानकारी

- यह रूटासिया परिवार के खट्टे फल पोमेलो (साइट्रस मैक्सिमा) की एक किस्म है।
- यह विशेष रूप से बैंगलोर ग्रामीण जिले के देवनहल्ली तालुका के आसपास के क्षेत्र में उगाई जाती है। इसे स्थानीय रूप से चकोटा के नाम से जाना जाता है।
- यह भारत सरकार के उत्पादों के भौगोलिक संकेतक (पंजीकरण एवं संरक्षण) अधिनियम (जी.आई. अधिनियम) 1999 के अंतर्गत संरक्षित है।

टॉपिक- जी.एस. पेपर 1- कला एवं संस्कृति

स्रोत- द हिंदू

बस्वेश्वर

खबरों में क्यों है?

- हाल ही में, प्रधानमंत्री ने 12वीं सदी के समाज सुधारक बस्वेश्वरा को उनकी जयंती पर श्रद्धांजलि अर्पित की है।

बस्वेश्वरा के संदर्भ में जानकारी

- उन्हें भक्तिभंडारी, बसवन्ना या बसवेश्वर के रूप में भी जाना जाता है, वह कर्नाटक में कलचुरी-वंश के राजा बिज्जला प्रथम के शासनकाल के दौरान 12वीं सदी के दार्शनिक, कन्नड़ कवि और एक समाज सुधारक थे। उन्होंने लिंग या सामाजिक भेदभाव, अंधविश्वास और रिवाजों को खारिज कर दिया था।
- उन्होंने 'अनुभव मंतपा' (या "आध्यात्मिक अनुभव का हॉल") जैसे नए सार्वजनिक संस्थानों की शुरुआत की थी, जिन्होंने सभी सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि के पुरुषों और महिलाओं का स्वागत किया था, जो जीवन के आध्यात्मिक और सांसारिक सवालों पर खुलकर चर्चा करते थे।

- वह लिंगायत संप्रदाय के संस्थापक थे।

साहित्यिक कार्य

- उन्होंने कविता (वचन) जैसे शत-स्थल-वचन (मोक्ष के छह चरणों के प्रवचन), कला-जनन-वचन (भविष्य के पूर्वानुमान) और मंत्र-गोप्या के माध्यम से सामाजिक जागरूकता फैलाई थी।

टॉपिक- जी.एस. पेपर 1-कला एवं संस्कृति

स्रोत- ए.आई.आर.

gradeup

यूपीएससी और पीसीएस मासिक करंट अफेयर्स अप्रैल 2020

Prep Smart. Score Better. Go gradeup

www.gradeup.co